भारतीय संगीत में दूरस्थ शिक्षा प्रणाली का महत्व एवं औचित्य

कोटा विश्वविद्यालय, कोटा को
पीएच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत
शोध–प्रबन्ध
संगीत–विभाग

शोधकर्ता

तरूणा शर्मा

शोध निर्देशिका

डॉ. (श्रीमती) निशि माथुर
विभागाध्यक्ष–संगीत
राजकीय महाविद्यालय बून्दी (राज.)
कोटा विश्वविद्यालय, कोटा

वर्ष – 2015

CERTIFICATE TO ACCOMPANY THE THESIS

It is certified that the

(i) Thesis entitled - **''भारतीय संगीत में दूरस्थ शिक्षा प्रणाली का महत्व एवं औचित्य''**

Submitted by **तरूणा शर्मा**

is an original piece of research work carried out by the candidate under my supervison.

(ii) Literary presentation is satisfactory and the thesis is in a form suitable for publication.

(iii) Work evinces the capacity of the candidate for critical examination and independent judgement.

(iv) Candidate has put in at least 200 days of attendance every year.

Signature of supervisor with date

अनुक्रमणिका

प्राक्कथन **पृष्ठ सं.**

प्रथम अध्याय 1–22

''भारतीय शिक्षा की अवधारणा''

1. प्राचीन काल
2. मध्य काल
3. आधुनिक काल

द्वितीय अध्याय 23–43

''संगीत शिक्षा प्रणाली के विभिन्न आयाम''

1. घराना आयाम
2. औपचारिक शिक्षा पद्धति
3. शैक्षिक तकनीकी में आद्यतन विकास
4. दूरस्थ शिक्षा प्रणाली

पृष्ठ सं.

तृतीय अध्याय 44–80

''दूरस्थ शिक्षा प्रणाली''

1. दूरस्थ शिक्षा प्रणाली
2. दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के कार्य
3. दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के माध्यम
4. दूरस्थ शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य
5. दूरस्थ शिक्षा प्रणाली की विशेषताऐं
6. दूरस्थ शिक्षा प्रणाली की समस्याऐं

चतुर्थ अध्याय 81–110

''वर्तमान परिप्रेक्ष्य में दूरस्थ शिक्षा प्रणाली की प्रासंगिकता''

पंचम अध्याय **111–153**

''भारतीय संगीत में दूरस्थ शिक्षा प्रणाली का महत्व एवं औचित्य''

उपसंहार **154–164**

परिशिष्ट (1) **165–177**

दूरस्थ शिक्षा प्रणाली से संबंधित छाया चित्र, सी.डी. एवं वीडियो

परिशिष्ट (2) **178–185**

संदर्भ ग्रन्थ–हिन्दी, संस्कृत, संगीत पत्रिकाऐं,एनसाइक्लोपीडिया, अंग्रेजी पुस्तकें, वेबसाइट्स, लेख, साक्षात्कार, शब्दकोष

□□□□□

प्राक्कथन

''संगीत'' एक त्रिपुटी है गीत,वाद्य एवं नृत्य की। इन तीनों का 'समावेश' ही संगीत की संपूर्णता सिद्ध करता है। सामवेद में भी संगीत का उत्कृष्ट वर्णन पाया जाता है। 'सामवेद' में ही उदात्त, अनुदात्त एवं स्वरित तीनों स्वरों का उल्लेख किया गया है, जिनसे सात स्वरों का निर्माण हुआ है। प्राचीन काल में सामगान के मंत्रों द्वारा देवताओं का आहवान् किये जाने की कथाएँ प्रचलित हैं। अतः उन पर विश्वास न किया जाए, यह असंभव बात होगी।

संगीत का आधारभूत तत्व नाद है जो संपूर्ण जगत में व्याप्त है व सृष्टि का कारण है। इस प्रकार प्रकृति तथा चराचर जगत के प्रत्येक तत्व के आंतरिक अवयवों में संगीत की सूक्ष्मातिसूक्ष्म अक्षुण्ण एवं अखण्ड धारा निरन्तर प्रवाहित होती रही है, अतः संपूर्ण जगत ही संगीतमय है तथा अत्यन्त रूप से स्वरलहरियों की लयात्मक गत्थात्मकता से परीपूर्ण है। 'शिक्षा' मानव के सम्यक् विकास का आधार है। साधारण शिक्षा मानसिक विकास एवं ललित कलाओं की शिक्षा मानसिक एवं आत्मिक दोनों शक्तियों के विकास की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। ललित कलाओं में अग्रगण्य होने के कारण संगीत शिक्षा मानव के मन – मस्तिष्क को आकृष्ट करती है एवं रसानुभूति की चरमोत्कर्ष अवस्था में उसका नैतिक उत्थान करती है। संगीत की शिक्षा केवल स्वर ताल युक्त धुनों या रागों तक ही सीमित नहीं है अपितु संगीत की साधना द्वारा विद्यार्थी की श्रद्धा व रस तत्व के प्रति सचेत रहना तथा संगीत के उचित विकास के लिये प्रयत्नशील रहना

वैज्ञानिक एवं तकनीकी युग में तकनीकीयों का आश्रय लेते हुए उसके सांस्कृतिक महत्व को बनाए रखना आदि अत्यन्त आवश्यक है।

जिस प्रकार योगी को गुरू के मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है उसी प्रकार संगीत का ज्ञान प्राप्त करने के लिए योग्य गुरू के मार्ग निर्देशन व अभ्यास की आवश्यकता होती है चाहे वो गुरू परंपरागत तरीके (सीना–ब–सीना) से शिक्षा प्रदान करें अथवा ''दूरस्थ शिक्षा'' के माध्यम से एक अच्छे गुरू का उद्धेश्य सदैव शिष्य को शिक्षा प्रदान करना होता है तथा शिष्य का भी सदैव यही कर्तव्य होता है कि गुरू द्वारा बताई गई बातों का पूरी श्रद्धा के साथ अनुकरण करें।

भारत जैसे देश में जहाँ जनसंख्या लगभग सवा सौ करोड़ हो गई हैं वहां निश्चित रूप से सभी को शिक्षित करना एक कठिन कार्य है। वहीं भवन की अनुपलब्धता कहीं शिक्षक का अभाव, कही संसाधनों का आभाव, सामने आता है। इन सभी समस्याओं का हल ढूँढने के उद्धेश्य से मैनें 'भारतीय संगीत में टूरस्थ शिक्षा का महत्त्व एवं औचित्य' विषय पर अपना शोध कार्य करने का प्रयत्न किया।

दूरस्थ शिक्षा विधि हैं के माध्यम से हम अन्य वैकल्पिक साधनों या यूँ कहें कि नवीन तकनीकियों की सहायता से दुर्गम स्थलों तक पहुँच सकते हैं। दूरस्थ शिक्षा, शिक्षा प्रदान करने की वो विधि है जिसमें शिक्षार्थी या शिक्षार्थियों का समूह परंपरागत शिक्षा– विधि (अर्थात व्यक्तिगत रूप से कक्षा में उपस्थित रहकर शिक्षा ग्रहण करना) से हटकर शिक्षा ग्रहण करता

है। यह शिक्षा तभी संभव होती है जब शिक्षक और शिक्षार्थी दोनों समय या स्थान या दूरी के कारण एक दूसरे से अलग – अलग होते हैं।

शिक्षा की इस विधि का प्रारम्भ 18वीं सदी के प्रारम्भिक दिनों में यूरोप में हुआ एवं इस विधि का प्रथम पाठ्यक्रम 1840 में सर इसाक पिटमैन द्वारा प्रस्तुत किया गया। इस शिक्षा में ऐसे अनेक माध्यमों की सहायता प्रदान की जाती है जिससे समय एवं धन की बचत होती है। साथ नवीन तकनीकियों का ज्ञान प्राप्त होता है जैसेः– रेडियो, टेलीविजन, आकाशवाणी, प्रिन्ट मेटेरियल, कम्प्यूटर, इंटरनेट, ई–मेल, चैटिंग, वीडियो कॉनफ्रेंसिंग।

इस दूरस्थ शिक्षा प्रणाली ने शिक्षा के नवीन आयाम दुनिया के समक्ष प्रस्तुत किये हैं। जिनको जनसाधारण को खुलेमन से स्वीकार करना होगा, जिससे संगीत को नई–नई एवं उत्कृष्ट ऊँचाईयों तक ले जाया जा सके। विश्व में कम्प्यूटर एवं इंटरनेट के प्रयोग से दूरस्थ शिक्षा त्वरित एवं सर्वसुलभ हो गई है। संगीत के ऐसे कई स्कूल, कॉलेज एवं यूनिवर्सिटिज़ विश्व में व्याप्त हैं, जो ऑनलाइन संगीत शिक्षा प्रदान करते हैं। जहाँ कोई भवन, अध्यापक, कक्ष अथवा कर्मचारी नहीं होते उन्हें वरच्युअल स्कूल अथवा वरच्युअल यूनिवर्सिटी कहा जाता है।

अतः इस प्रणाली की उपयोगिता एवं प्रभाव से प्रभावित होकर मैंने 'भारतीय संगीत में दूरस्थ शिक्षा प्रणाली का महत्व एवं औचित्य' विषय पर अपना शोध कार्य करने का दृढ़ निश्चय किया। मेरी यह अत्यधिक

हार्दिक इच्छा थी कि मैं इस शोध कार्य के माध्यम से दूरस्थ शिक्षा के सांगीतिक महत्व को जनसाधारण के समक्ष प्रस्तुत कर सकूं। जिससे आने वाली पीढ़ियाँ इस नवीनतम प्रणाली की उपयोगिता एवं श्रेष्ठता की परिपाटी को पहचान सकें एवं उसका भली–भाँति उपयोग कर सकें और ऐसा हो भी रहा है।

इस इलेक्ट्रोनिक युग में जहाँ हर व्यक्ति इतना व्यस्त हो चुका है कि अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति बड़ी ही सुलभता के साथ करना चाहता है वहाँ ऑनलाइन विधि अथवा दूरस्थ शिक्षा, शिक्षा के वो सभी आयाम उपलब्ध करवाता है, जिनसे बिना किसी बाध्यता के एवं सरलता के साथ आवश्यकताओं की पूर्ति की जा सकती है। इस शोध कार्य के माध्यम से मैंने उन सभी विधियों, तकनीकियों एवं विचारों को प्रस्तुत किया है जिनसे भावी संगीत कलाकार प्रेरित हो सकेंगे और अन्य कलाकारों के लिए प्रेरणा बनेंगे।

सर्वप्रथम मैं मेरे ईष्ट देव 'भगवान् श्री कृष्ण', माता–पिता एवं गुरूजनों के चरणों में सादर नमन करती हूँ जिनके आशीर्वाद स्वरूप मुझे यह सौभाग्य प्राप्त हुआ कि मैं इस विषय–''भारतीय संगीत में दूरस्थ शिक्षा प्रणाली का महत्व एवं औचित्य'' पर शोध कार्य प्रारम्भ कर सकी और इस प्रकार मेरी एक शैक्षिक यात्रा प्रारम्भ हुई। मैंने अपने शोध कार्य को पाँच अध्यायों में वर्गीकृत किया है जिनमें मैंने इस विषय से संबंधित सभी जानकारी सम्मिलित करने का पूर्ण प्रयास किया है। मेरे इस शोध कार्य में कुल संगीत सिखाने वालों की संख्या के पाँच प्रतिशत पर

नियमानुसार कार्य किया गया है।

प्रथम अध्याय 'भारतीय संगीत शिक्षा की अवधारणा' में सांगीतिक विकास को तीनों कालों (प्राचीन–काल, मध्य–काल एवं आधुनिक–काल) के माध्यम से दर्शाने का प्रयास किया है। इस प्रकार मैंने भारतीय संगीत की शिक्षा को स्वतंत्रता के पश्चात् नई दिशा प्रदान करने वाले दो महान् संगीतज्ञ पं. विष्णु दिगम्बर पलुस्कर एवं पं. विष्णु नारायण भातखण्डे के सांगीतिक प्रोत्साहन का भी उल्लेख किया है।

द्वितीय अध्याय 'संगीत शिक्षा प्रणाली के विभिन्न आयाम' के अन्तर्गत मैंने संगीत शिक्षा से संबंधित आयामों जैसे घराना आयाम, औपचारिक पद्धति, संगीत शिक्षा, शैक्षिक तकनीकी में आद्यतन विकास एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली का उल्लेख किया है।

तृतीय अध्याय 'दूरस्थ शिक्षा प्रणाली' के अन्तर्गत मैंने दूरस्थ शिक्षा प्रणाली को परिभाषित करने का प्रयास किया है और साथ ही यह कैसे कार्य करती है इसका भी उल्लेख किया है। इस प्रणाली के माध्यमों जैसेः– प्रिन्ट, रेडियो, आकाशवाणी, टेलीविजन, कम्प्यूटर, इंटरनेट, ई–मेल, चैटिंग, ऑडियो वीडियो कॉनफ्रेंसिंग आदि, उद्देश्यों, विशेषताओं एवं समस्याओं पर भी प्रकाश डालने का प्रयास किया है।

चतुर्थ अध्याय 'वर्तमान परिप्रेक्ष्य में दूरस्थ शिक्षा प्रणाली की प्रासंगिकता' में मैंने वर्तमान समय में इस प्रणाली की उपादेयता से

संबंधित सभी जानकारियों को सम्मिलित किया है। इस अध्याय में मैंने ऐसी कई वेबसाइट्स का भी उल्लेख किया है जो दूरस्थ शिक्षा से संबंधित सभी जानकारियाँ उपलब्ध कराती हैं। इस अध्याय के माध्यम से मैंने इस प्रणाली की और अधिक विस्तृत रूप में व्याख्या की है।

पंचम अध्याय 'भारतीय संगीत में दूरस्थ शिक्षा प्रणाली का महत्व एवं औचित्य' के अन्तर्गत मेरे द्वारा उन सभी जानकारियों को सम्मिलित करने का प्रयास किया गया है जो इस शिक्षा प्रणाली के महत्व एवं औचित्य को सांगीतिक क्षेत्र के लिए उपयोगी बताती हैं। ऐसे कई विद्यालय एवं विश्वविद्यालय वर्तमान समय में विद्यमान् है जो Online Teaching के माध्यम से संगीत की शिक्षा प्रदान कर रहे हैं।

ऐसे कई संगीत कलाकारों एवं विद्वानों के इस विषय से संबंधित विचारों को भी मैंने इस अध्याय में सम्मिलित किया है जिन्होंने मेरे इस शोध कार्य को मूर्त रूप प्रदान करने में अत्याधिक सहायता प्रदान की।

इस प्रकार इन पाँच अध्यायों के माध्यम से मैंने यह प्रयास किया है कि दूरस्थ शिक्षा प्रणाली को भारतीय संगीत के लिए उपयोगी बताने वाले सभी तथ्यों, पक्षों, विधियों एवं तकनीकियों को बड़ी कुशलता से समाहित कर सकूं।

मेरी इस शैक्षिक एवं अद्भुत यात्रा में कई पूजनीय गुणीजनों ने मेरी सहायता कर मुझे आशीर्वाद प्रदान किया, जिसके परिणाम स्वरूप मैं

अपने शोध कार्य को श्रेष्ठ रूप प्रदान कर सकी। मैं आप सभी का हृदय के गहनतल से आभार प्रकट करती हूँ। यह आप सभी के मार्गदर्शन का ही परिणाम है कि मैं अपने शोध प्रबंध को पूर्ण रूप प्रदान कर सकी।

मैं सर्वप्रथम आभारी हूँ, अपने प्रभु 'भगवान् श्री कृष्ण जी' की एवं अपने परम् पूज्य पिताजी पं. श्री लखन लाल शर्मा जी एवं माताजी श्रीमती लीला शर्मा जी का, जिनके आशीर्वाद स्वरूप मैं भारत की इस पावन भूमि पर जन्म ले सकी। साथ–साथ मैं अपने भ्राता श्री दीपक शर्मा, श्री गिरीश शर्मा, बहिन श्रीमती जया शर्मा का भी हृदय से आभार प्रकट करती हूँ, जिन्होंने अपना आशीर्वाद एवं स्नेह मुझ पर सदैव बनाए रखा।

मैं अत्यन्त आभारी हूँ, मेरी सासु माँ श्रीमती सरोज देवी जी एवं मेरे पति श्री राहुल जी का जिन्होंने विवाह के पश्चात् भी मुझे अपने अध्ययन को सुचारू रूप से चलाने के लिए सदैव अभिप्रेरित किया। मेरे ससुर स्व. श्री राजेन्द्र जी का आशीष भी मुझे सदा अग्रसर होने को प्रेरित करता रहा। मेरे सुपुत्र चि. राघव ने भी मुझे अपने नन्हें–मुन्नें विचारों से सदा प्रेरणा प्रदान की। इन सभी के आशीर्वाद एवं स्नेह का ही परिणाम है कि मैं आज अपने शोध कार्य को पूर्ण कर पायी।

मैं अत्यधिक आभार प्रकट करना चाहूँगी अपनी शोध निर्देशिका संगीत विदुषी डॉ. (श्रीमती) निशि माथुर जी (विभागाध्यक्ष–संगीत विभाग, राजकीय महाविद्यालय, बून्दी, राजस्थान) का, जिन्होंने मुझे ''भारतीय संगीत में दूरस्थ शिक्षा प्रणाली का महत्व एवं औचित्य'' जैसे अत्यन्त

महत्वपूर्ण विषय पर अध्ययन कराया, साथ ही सदैव मार्गदर्शन किया। आपके आशीर्वाद स्वरूप ही मैं अपने अध्ययन की गूढ़ता एवं मूर्तता सिद्ध करने में सक्षम हो सकी। भगवान की असीम अनुकम्पा से आप जैसा अनमोल रत्न मुझे प्राप्त हुआ, जिनके प्रोत्साहन, सहयोग एवं मार्गदर्शन के परिणाम स्वरूप ही मैं अपने शोध कार्य को पूर्ण कर पायी। मैं स्वयं को अत्यधिक कृतार्थ महसूस करती हूँ कि आपका स्नेह मुझे प्राप्त हुआ और ईश्वर से सदैव यही प्रार्थना है कि आपका आशीर्वाद मुझ पर हमेशा बना रहे।

मैं उन सभी संगीत की महान् विभूतियों को भी नमन करना चाहूँगी जिनके सहयोग से मैं इस शोध कार्य को पूर्ण करने में समर्थ हुई साथ ही इसे उत्कृष्ट रूप प्रदान करने में लाभान्वित हुई। मैं आभार प्रकट करना चाहूँगी विश्व विख्यात बाँसुरीवादक 'पद्मविभूषण' पं. श्री हरिप्रसाद चौरसिया जी, पं. श्री आनन्द भीमसेन जोशी जी (शास्त्रीय गायक), ग्रेमी अवार्डड पं. विश्व मोहन भट्ट जी (मोहन मीणा वादक), श्रीमती संगीता बंधोपाध्याय (शास्त्रीय संगीत गायिका), 'पद्मभूषण' पं. श्री छन्नू लाल जी मिश्र (प्रसिद्ध ठुमरी गायक), पं.श्री रजनीश जी मिश्र (शास्त्रीय गायक) पं. श्री राजन जी मिश्र के सुपुत्र, डॉ. श्री विकास भारद्वाज (सितार वादक) एवं ऐसे अन्य कई कलाकारों का, जिन्होंने अपने सुझावों और विचारों से मुझे लाभान्वित किया एवं अपना अमूल्य समय देकर मुझे अनुगृहीत किया। मैं सदैव कृतज्ञ रहूँगी कि आप जैसे व्यक्तित्वों ने मेरे शोध कार्य को विशुद्धता एवं श्रेष्ठता प्रदान करने में मेरी सहायता की।

मैं उन सभी कलाकारों (श्रीमती निवेदिता, कर्नाटकी शास्त्रीय संगीत

गायिका, न्यूयॉर्क, यू.एस.ए.), श्री अशीम चौधरी (भारतीय शास्त्रीय गायक, कोलकाता, वेस्ट बंगाल), दिव्य संगीत एकेडमी, श्री मोहम्मद अस्सानी (सितार, तबला वादक, कनाडा), श्रीमती हेमलक्ष्मी पलेटी (संगीत शिक्षक आन्ध्रप्रदेश), श्री एन.सीएच. पार्थासारथी (भारतीय शास्त्रीय एवं सुगम संगीत गायक, हैदराबाद भारत), श्री बकुल घरपुरे (शंकर महादेवन एकेडमी), श्री हर्ष खींची (सितार वादक यू.एस.ए.), सुश्री वी.विजय लक्ष्मी (दक्षिण भारतीय शास्त्रीय संगीत, कर्नाटक), श्री इख़्लाक हुसैन (सितार परफोरमर एवं शिक्षक, इस्लामिक आर्ट), सुश्री गरिमा भार्गव (शास्त्रीय कत्थक नृत्यांगना, राजस्थान) का भी हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने मेरे द्वारा, इस विषय से संबंधित, ई–मेल के माध्यम से पूछे गए प्रश्नों का, अपना अमूल्य समय देकर उत्तर दिया एवं मेरे शोध प्रबंध की प्रगाढ़ता को और बढ़ाया और इसे सशक्त तथा मजबूत आधार प्रदान किया।

आज मेरी शैक्षिक अद्‌भुत यात्रा एवं साधना को पूर्णता प्राप्त हुई है और मैं उस पल को जीने के लिए लालायित हूँ, जो मुझे मेरी मनोकामना, प्रभु श्री कृष्ण, माता–पिता, भाई–बहिन एवं गुरूजनों के आशीर्वाद, सहयोग एवं कठोर परिश्रम स्वरूप प्राप्त हुआ है।

इतनी सारी सावधानियों के पश्चात् भी किसी भी प्रकार की त्रुटि रह जाये तो इस बात को नकारा नहीं जा सकता। अतः मैं आप सभी से क्षमा माँगना चाहूँगी, मेरी छोटी–बड़ी त्रुटि के लिए जो इस शोध कार्य को पूरा करते हुए हुई।

अन्तः में, मैं आप सभी का हृदय की गहनतम सीमा से समस्त शुभकामनाओं के साथ, कृतज्ञता सहित आभार प्रकट करती हूँ, साथ ही मधु ग्राफिक्स जिन्होंने मेरे शोध कार्य के टंकण में मेरा पूर्ण सहयोग किया, का भी आभार प्रकट करती हूँ।

दिनांकः .....

(तरूणा शर्मा)

'जानकी सदन'

हर्ष स्टेशनर्स के सामने,

गंधी जी की पुल, श्रीपुरा, कोटा (राज.)

पिन कोड–324006

प्रथम अध्याय

"भारतीय संगीत शिक्षा की अवधारणा"

प्रथम अध्याय

"भारतीय संगीत शिक्षा की अवधारणा"

कलाओं में सर्वश्रेष्ठ कला संगीत ही भारतीय संस्कृति का वह जगमगाता हुआ दीपक है जो अनादिकाल से अविरल जलता हुआ आ रहा है। यह कला प्राचीन एवं परम्परागत होते हुए अपना एक अलग गौरवान्वित रूप रखती है।

संगीत में मनुष्य के हृदय को छू लेने की वह अपार शक्ति विद्यमान है जो मन में उठने वाली तरह–तरह की भावनाओं को वश में करके प्रभु–भक्ति की ओर प्रेरित करती है और उचित मार्ग प्रशस्त करती है। संगीत शब्द दो शब्दों (सम्यक्+गीतं) अथवा अवधान में लाया गया गीत।

शारंगदेव जी ने संगीत रत्नाकर में संगीत की तीनों विधाओं (गायन वादन एवं नृत्य) को पारस्परिक रूप से एक दूसरे के अधीन बताया है।[1]

''नृतं वाद्यानुगं प्रोक्तं वाद्य गीतानुवर्ति च।''
अतो गीतं प्रधानत्वादत्रादावभिधीयते।।[2]

अर्थात् गीत के अधीन वादन और वादन के अधीन नर्तन्। अतः इन तीनों ही कलाओं में गान को ही प्रधानता दी गई है। संगीत से केवल आनंद की ही अनुभूति नहीं होती साथ ही ये हमारे मनो भावों को भी प्रभावित

1. 'गीतं वाद्यं तथा नृत्यं त्रयमं संगीत मुच्यते'– शारंगदेव, संगीत रत्नाकर, पृ.सं.–2, (1/1/21)
2. शारंगदेव, संगीत रत्नाकर, (1124–25)

करती है और हमारी आत्मा में भक्तिमय अनुभूतियां पैदा कर देता है।[1]

भारतीय संगीत का आरम्भ प्राचीन युग से ही चला आ रहा है, और शनैःशनैः यह प्रगति की ओर अग्रसर होता हुआ संगीत विकसित रूप को प्राप्त हुआ जिसका परिष्कृत एवं परिवर्तित रूप आधुनिक समय में हमें देखने को मिलता है।

आचार्य बृहस्पति ने संगीत की व्याख्या करते हुए कहा है कि ''गीत,स्वर,भाषा,ताल और मार्ग का आश्रय लेकर मनुष्य की भावना को व्यक्त करता है, वादन गीत का सहायक होता है और नृत्य उसे मूर्त रूप प्रदान करता है इसलिए गायन, वादन और नृत्य ये तीनों मिलकर संगीत कहलाते हैं।''[2]

संगीत का जन्म ईसा से लगभग 8–9 हज़ार वर्ष पूर्व माना गया है। हिन्दू मतावलंबियों के अनुसार संगीत के जनक ब्रह्मा जी माने गए हैं। ब्रह्मा जी ने शिव जी को, शिव जी ने सरस्वती जी को तथा सरस्वती जी ने महर्षि नारद को संगीत की शिक्षा प्रदान की तत्पश्चात् नारद जी के द्वारा प्राप्त संगीत का प्रचार भरतादि मुनियों ने भूलोक में किया।

इससे ज्ञात होता है कि ब्रह्ममाण्ड के जनक द्वारा अति प्राचीन समय में भी संगीत को शिक्षा के रूप में प्रदान किया जाता था चाहें वो ब्रह्मा जी हो या शिव जी या सरस्वती सभी ने एक दूसरे को संगीत की शिक्षा प्रदान की।

---

1. बसंत, संगीत विशारद, पृ.सं.–34
2. आ.बृहस्पति, निबन्ध संगीत, पृ.सं.–12, 1989

इसी प्रकार शिक्षा देने का जो स्वरूप है वो एक क्रमबद्ध रूप से हमारे देवी–देवताओं के समय से ही चलता रहा है।

मुस्लिम मतावलंबियों ने माना कि मूसीकार नामक पक्षी की चौंच में सात छिद्र होते हैं जिनमें से क्रमशःसा,रे,ग,म,प,ध और नि में सात स्वर निकलते हैं।

भारतीय संगीत का आरम्भ प्राचीन युग से ही चला आ रहा है। और शनैःशनैः यह प्रगति की ओर अग्रसर होता हुआ संगीत विकसित रूप को प्राप्त हुआ जिसका परिष्कृत एवं परिवर्तित रूप आधुनिक समय में हमें देखने को मिलता है। पाश्चात्य विद्वानों के मतानुसार संगीत कला का जन्म स्वाभावित रूप से उसी समय हुआ जब मनुष्य ने बोलना सीखा।

हिन्दुओं को आमतौर पर पंडित और मुसलमानों को उस्ताद रूप से संदर्भित किया जाता आ रहा है। 12वीं सदी के आस–पास हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत के कर्नाटक शास्त्रीय संगीत अलग रूप से पहचाना जाने लगा। इन दोनों प्रणालियों में केन्द्रिय विचार यह है कि दोनों प्रणालियां मेलोडिक मोड या राग तथा एक तालबद्ध चक्र ताल पर आधारित है।[1]

"Sangeet is a technical term used for vocal and Instrumental along with the art doming. All three fine arts are connected with each other which is almost impossible to separate."

1. गुप्त, भरत, नाट्यशास्त्र, पृ.सं.–28, 1996

भारतीय संगीत शिक्षा की अवधारणा को इसके इतिहास के विभाजन के आधार पर हम और अच्छी तरह समझ सकते हैं।

भारतीय संगीत के इतिहास का विभाजन तीन कालों में किया गया हैः–

1. प्राचीन काल
2. मध्य काल
3. आधुनिक काल

"The history of the early music of India में 'Gulf il mil' ने बताया कि पूर्व पाषाण काल के लोग वास्तव में भारत के मूल निवासी थे और पत्थर का एक संगीत वाद्य जिसे **'अग्सा'** कहते है इसी युग में पाया जाता था।[1]

प्राचीन कालः– ''प्राचीन समय में संगीत शिक्षा हेतु संस्थाए भी विद्यमान भी जिन्हें परिषद् कहा जाता था।'' इस समय को संगीत का धार्मिक काल भी कहा जा सकता है। भारतवर्ष आध्यात्म प्रधान देश है। हमने सदैव यही माना है कि 'संगीत ही सृष्टि का आदि तत्व है।'

ओउम् शब्द ब्रह्म के रूप में अथवा संगीत के नाद तत्व के रूप में अभी तक माना गया है।[2] ऊँ ही अर्थात् साक्षात् ओंकार ही संगीत का जनक है। ऐसा माना गया है कि जो ऊँ की साधना करने में सफल हो जाता है वो संगीत को यथार्थ रूप में ग्रहण में भी सफल हो जाते हैं।

---

1. गुल्फ-इल-मिल-द हिस्ट्री ऑफ द अर्ली म्यूज़िक ऑफ इण्डिया, पृ.सं.-111
2. डॉ0 पंकज बाला सक्सेना, 'संगीत', पृ.सं.-3, अप्रैल 2005

एस0एम0 टैगोर के अनुसार– ''आर्यों के आदि वेत्ता ब्रह्मा, विष्णु और महेश है। इसमें विष्णु भगवान के हाथ में शंख (पुराणों के अनुसार यह शंख समुद्र मंथन के समय प्राप्त हुआ था) माना गया है। महादेव जी ने **'पिनाक'** का अविष्कार किया जिसमें तंत्र संगीत का प्राचीन इतिहास ई0पू0 3500 के लगभग आरम्भ होता है जब वैदिक युग का प्रचार था। इस समय आर्य भारत आए थे। आरण्यक संहिता, पूर्वाचक, उत्तर्राचिक, ग्राम, गेयगान, अरण्यगेयगान, स्तोभ, प्रभृति संगीतों का ही प्रचलन था। वेदों में केवल सामवेद के अन्दर ही गान और संगीत के उपकरण प्राप्त होते हैं। यज्ञों में साम मंत्रों का प्रयोग किया जाता था। जाति गायन का प्रचार था।

वैदिक युग को ही हम अपने सांस्कृतिक इतिहास का प्राचीनतक युग मान सकते हैं। वैदिक युग में चारों वेदों (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद) के अलावा ब्राह्मण आरण्यकों तथा उपनिषदों की सूचना भी की गई। वैदिक साहित्य में अन्य कलाओं के साथ–साथ संगीत कला के भी प्रचुर उल्लेख उपलब्ध हैं।[1]

वैदिक साहित्य में गायन,वादन और नृत्य संबंधी कई उल्लेख हमें प्राप्त होते हैं। **'सामगान'** को तत्कालीन संगीत का पर्याय माना जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। साम का छंदों बद्ध गीतों से गायन किया जाता था, साम को स्तोत्रों द्वारा गाया जाता था। इन स्तात्रों को जैमिनीय ब्राह्मण में वैदिक गायन का अलंकार कहा जाता है।[2]

---

1. डॉ. धर्मावति श्रीवास्तव, प्राचीन भारत में संगीत, पृ.सं.–1, 1961. गुल्फ–इल–मिल–द हिस्ट्री ऑफ द अर्ली म्यूज़िक ऑफ इण्डिया, पृ.सं.–111
2. डॉ. पंकज बाला सक्सेना, संगीत मासिक, पृ.सं.–3, अप्रैल 20057
2. स्तोभाहवा आसाम अलंकारःत्ता अलंकुर्णन्निव, शोभयन्निव गायते–जैमिनीय ब्राह्मण

इस काल में साधारणतया उदात, अनुदात, स्वरित तीन स्वरों का प्रचलन था जिनका प्रयोग क्रमशः ऊंची, नीचीं व मध्यम ध्वनि के उच्चारण हेतु किया जाता था। स्वरों के समय प्रदर्शन के लिए 1,2,3 इस प्रकार के चिन्हों का प्रयोग किया जाता था। इसके पश्चात् सामिक संगीत **'स्वरांतर'** अर्थात् चार स्वरों के संगीत में परिवर्तित हो गया। इसके पश्चात् पांच स्वरों का औढ़व संगीत, छः स्वरों का षाढ़व संगीत और फिर अंत में सात स्वरों से शोभायमान संगीत के रूप का आविर्भाव हमारे सम्मुख हुआ। उपर्युक्त तीनों स्वर (उदात, अनुदात, स्वरित) से ही सातों स्वरों की उत्पत्ति हुई।

''उच्चौ निषाद गांधारौ नीचा ऋषभ धैवतौ।
शेषास्तु स्वरित ज्ञेयाः षड्ज मध्यम पंचमाः।।''[1]

'सामवेद' से ही भारतीय संगीत की अवधारणा का आरम्भ हो जाता है। सा+अम=साम। यहां 'सा' से तात्पर्य ऋचाओं से है तथा 'अम्' आलाप से संबंधित हैं। अतः ऋग्वेद की ऋचाओं का तत्कालीन धुनों के सहारे गायन **'सामगान'** कहलाता था। सामगायन में स्त्रोतों के माध्यम से देवताओं की स्तुति की जाती है। इनमें अग्नि, सूर्य, इन्द्र, मित्र, पवन आदि प्रमुख आराध्य देव थे।[2]

प्रारम्भिक वैदिक काल में जो सामगान ऋचाओं के ऊपर प्रचलित था, वह मंत्रदृष्टा गायक ऋषि की प्रतिमा का प्रतिफलन था। ये ऋषि इन ऋचाओं का गायन स्वान्तः सुखाय तथा यज्ञ में अपने साम के द्वारा देवताओं को प्रसन्न करने के लिए करते थे। इन सामगायकों को उद्गाता,

1. डॉ. लक्ष्मीनारायण गर्ग, संगीत निबंधावली, पृ.सं.–12, 1997
2. डॉ. पुनीता श्रीवास्तव, भारतीय संगीत में सामवेद की परम्परा, शोध ग्रन्थ, पृ.सं.–21, 2006

गायत्रिन, सामग, सामविप्र छन्दोग आदि नामों से जाना जाता था।

'उदगाता' शब्द जहां प्रारम्भ में केवल सामगान करने वाले के लिए प्रयुक्त होता था, धीरे–धीरे एक पारिभाषिक शब्द बन गया। उद्गाता के सहायक के रूप में तीन ऋत्विजों–प्रस्तांता, प्रतिहर्ता और सुब्रहमण्यम् की नियुक्ति की जाने लगी। इस प्रकार वैदिक काल में यज्ञों में सामगान करने के लिए उद्गातवर्ग नामक संस्था के अतिरिक्त स्वतंत्र रूप से सामगान प्रशिक्षण हेतु संस्थाएं थी इन्हें परिषद् भी कहते थे। रामायण के बालकाण्ड में भी संगीत का वर्णन किया गया हैं।

गायन्ता नृत्यमानश्चय वादयन्तस्तु राघव।
आमोदमं परमम् यन्मूर्वराभरण भूषिता।।[1]

जैसे– यहां नृत्य, गीत और वाद्य का उल्लेख हुआ हैं। नृत्य, गीत और वाद्य का सम्मिश्रण ही संगीत हैं। रामायण में जहां रामचन्द्र जी के विवाह और धुनुर्भग का वर्णन है वहीं **'गीतवादित नन्नतु'** आदि शब्दों के अलावा **'देवदुन्छुभि'** आदि शब्दों का उल्लेख भी मिलता हैं।[2]

भारतीय साहित्य में महाभारत का भी एक विशिष्ट स्थान रहा हैं। इस विशालकाय महाकाव्य में प्राचीन भारतीय संस्कृति का सर्वांगीण चित्र उपलब्ध है। महाभारत काल में जिन गाथाओं का गान, यज्ञ तथा अन्य लोक उत्सवों पर किया जाता था, वह देशी संगीत के अन्तर्गत होता था। महाभारत काल में साम् तथा गान्धर्व दोनों का अत्यधिक प्रचार है यज्ञ

1. 'गायन्ता....भूषिता', बालकाण्ड, रामायण
2. डॉ. लक्ष्मीनारायण गर्ग, संगीत निबन्धावली, पृ.सं.–17, 1997

प्रसंगों पर सामगान के अतिरिक्त परम्परागत गाथा–गीतों को गाने का प्रचार भी था। संगीत कला के लिए **'गांधर्व'** की संज्ञा दी थी। वाद्यों में पठह, भेरि, मृदंग दुंदुभि शंख, वीणा, आदि का उल्लेख भी इस काव्य में मिलता है।[1]

इस युग में मूर्च्छना पद्धति से गायन होता था। इसे मार्गी संगीत भी कहते थे। जाति गायन के पश्चात् राग का प्रादुर्भाव हुआ। महाभारत में सप्त स्वरों एवं गांधार ग्राम के बारे में जानकारी मिलती है। विद्वानों के अनुसार इस काल में संगीत की धार्मिकता, पवित्रता तथा उत्तमता उच्च शिखर तक पहुंच गई थी। संगीत सर्वथा विकसित व समुन्नत स्थिति में था। महाभारत के दो प्रमुख नायक श्रीकृष्ण और अर्जुन भी संगीतारागी थे। श्रीकृष्ण को वंशी वाद्य का प्रवर्तक माना जाता हैं।

धीरे–धीरे प्रबंध, ध्रुवपद आदि गयान शैलियां प्रचार में आई सामवेद तथा भरत के नाट्यशास्त्र को आधारग्रन्थ मानकर संगीत के बड़े–बड़े ग्रंथों की रचना की गई। संगीत के क्षेत्र में अनेक मतों शिवमत, सोमेश्वर मत, कृष्णमत हनुमन्तादि का भी प्रचार हुआ।[2]

मध्यकाल :– संगीत एक ऐसी कला हैं जो स्वरों के उपकरणों का आश्रय लेकर एक सम्पूर्ण आकृति बनाती है जिस प्रकार चित्रकला की रंगों द्वारा, शिल्पकला धातुओं अथवा पत्थरों द्वारा अभिव्यक्ति होती है उसी प्रकार संगीत कला स्वरों के माध्यम से अभिव्यक्त की जाती है।

---

1. डॉ. आशु गौतम (लेख), संगीत, जुलाई 2011
2. लक्ष्मीनारायण गर्ग, संगीत शास्त्र, भारतीय संगीत का संक्षिप्त इतिहास, पृ.सं.–7

''**भासकृत वासवदत्ता**'' नाटक से पता चलता है कि राजा उदयन रानी को वीणा सिखाते थे। तत्पश्चात् संगीत का उपयोग युद्ध–काल में सैनिकों को प्रोत्साहित करने हेतु किया जाने लगा। मुस्लिम राजाओं ने संगीत कला को राजाश्रय दिया।

मध्यकाल के अन्तर्गत संगीत कला की पर्याप्त उन्नति हुई। कला की जानकारी एवं प्रवीणता सुसंस्कृत होने का लक्षण बन गया। हिन्दु राजाओं ने भी संगीत को राजाश्रय दिया। उत्तर भारत पर मुग़ल साम्राज्य का आगमन हुआ। राजे–रजवाड़ों तदनन्तर बादशाहों, नवाबों के महलों में पहुंच कर इस पवित्र कला को विलास का परिधान धारण करना ही पड़ा।

गायन, वादन और नृत्य के क्षेत्र में अनेक प्रयोग किये गये। नए–नए रागों ने जन्म लिया जिनकी संख्या हज़ारों तक पहुंच गई। विभिन्न वाद्यों का भी निर्माण किया गया। नृत्य के क्षेत्र में भी काफ़ी उन्नति हुई हैं।

इस काल में प्रभावशाली संगीतकार अमीर खुसरों (1253–1325) का आगमन हुआ जिन्हें कभी आधुनिक हिन्दुतानी शास्त्रीय संगीत का पिता कहा जाता था। इन्होंने हिन्दुस्तानी संगीत के कई पहलुओं को क्रमबद्ध स्वरूप दिया और यमन कल्याण जैसे कई रागों की शुरूआत की। इन्होंने कव्वाली शैली को भी अपनाया और एक ध्रुपद पर फारसी भाषा में माधुर्य कर एक फ्यूजन बनाया तथा कई सांगितिक उपकरणों जैसे–सितार, तबला आदि का आरम्भ किया।[1]

---

1. विकिपीडिया–द फ्री एनसाइक्लोपीडिया, पृ.सं.–4

इस काल में सभ्य समाज से यह परम पावन कला तिरस्कृत होने लगी और होती चली गई। बड़े–बड़े बादशाहों, नवाबों और राजा–महाराजाओं ने संगीत के बड़े–बड़े कलाकारों को अपना आश्रय प्रदान किया। संगीत की पवित्रता, सुन्दरता और शास्त्रीयता उन चंद राजमहलों में ही कैद होकर रह गई। किन्तु इस काल में भी कुछ ऐसी महान् हस्तियां देश में यहाँ–वहाँ विद्यमान थी, जिन्होंने अपने प्रयासों के द्वारा संगीत कला की शुद्धता व सात्विकता को बरकरार रखा। संगीत कला का यह सौभाग्य था कि वो इस प्रभाव को बनाये रखने में सक्षम रही। ऐसे समय में उत्तर–भारत में स्वामी हरिदास, सूरदास, तुलसीदास, मीराबाई तथा दक्षिण भारत में मिथुस्वामी दिक्षितार, श्यामशास्त्री, त्यागराज, पुरंदरदास आदि भक्त गायकों ने संगीत को आत्मशुद्धि और मोक्ष का संबल बनाए रखा।[1]

पं. शारंगदेव जी द्वारा सन् 1247 में 'संगीत रत्नाकर' की रचना की गई। संगीत रत्नाकर में स्वराध्याय, वाद्याध्याय तथा नृत्याध्याय इन तीन खण्डों में कुल सात अध्यायों के अन्तर्गत गायन, वादन और नृत्य इन तीनों विधाओं की जानकारी दी गई। जिस प्रकार वर्तमान में ध्रुपद गायकी दुर्लभ होती रही है और ख्याल गायकी का प्रचार–प्रसार होता जा रहा है। उसी प्रकार जाति गायन का प्रचार कम हो गया और राग गायन का प्रचार अधिक हो गया। इस युग में कई विदेशी आक्रमण भी हुए है। पं. शांरगदेव जी के पश्चात् अलाउद्दीन खिलजी ने देवगिरी पर आक्रमण किया, खिलजी गोपाल नायक जी के साथ 600 गायकों को दिल्ली ले गए। अतः तुर्कों का प्रभाव स्पष्ट दिखाई पड़ता है।[2]

---

1. लक्ष्मीनारायण गर्ग, संगीत शास्त्र, पृ.सं.–8
2. पं. सुलभा ठाकुर (लेख), संगीत कला विहार, पृ.सं.–33

इस युग में कई संतों ने विदेशी आक्रमण के कारण हुई विपदा को दूर करने के लिए तुरन्त सरल एवं मन को अधिकाधिक सहानुभूति देने वाला प्रभावी मार्ग 'भक्ति संगीत' द्वारा योजनाबद्ध तरीके से प्रदान किया। इस समय जब मध्ययुगीन समाज संकट ग्रस्त हुआ तो लोग सही धर्म छोड़कर दूसरे धर्म को अपनाने लगे। इन सब पर संतों ने भक्ति मार्ग अपनाते हुए विश्व के सामने 'राष्ट्रीय एकता' (National Integration) को प्रस्तुत किया।[1]

मुगलकाल का आरम्भ मध्यकाल में हो चुका था। इस काल में गज़ल कव्वाली आदि गायन शैलियां प्रचलन में थी। श्रृंगारिक रचनाओं के अलावा आध्यात्मिक रचनाएं भी प्रचलित हुई। यह मध्यकाल 1525 से 1556 का था। इस काल में संगीत रत्नाकर की टीका पं. कल्लिनाथ ने लिखी। जौनपुर के बादशाह सुल्तान हुसैन शर्की ने ख्याल गायकी प्रचलित की तथा कई नए राग बनाए जैसे जौनपुरी, सिंदूरा आदि। ग्वालियर के राजा मानसिंह ने 'मान–कुतुहल' नामक ग्रन्थ की रचना की। वैजू बावरा नामक संगीतज्ञ ने 'गुर्जरी–तोड़ी' तथा 'मंगल–गुर्जरी' रागों का निर्माण किया।[2]

बाबर, हुमायूं, अकबर, शाहजहां आदि मुगल सम्राटों ने जो कि संगीत प्रेमी थे, ने गज़ल गायकी को खूब पनपाया। अकबर के दरबार में सैयद खाँ नौहार तथा दौलत हाफजू माने हुए गज़ल गायक थे।[3] 1658 ई. में औरंगजेब गद्दी पर बैठा और उसने खुशहाल खाँ और हयात सरसनैन जैसे संगीतकारों पर अपनी कृपा रखी। 'किरपा' नामक एक पखावजी को

1. प्रो. डॉ. सौ. विजयालक्ष्मी बर्जे, संगीत कला विहार, पृ.सं.–127, अप्रैल 1973
2. डॉ. मृत्युंजय शर्मा एवं रामनारायण त्रिपाठी, संगीत मैनुअल, पृ.सं.–164, 2002
3. डॉ. लक्ष्मीनारायण गर्ग, संगीत, पृ.सं.–8, जून 2011

औरंगजेब ने 'मृदंगराय' की उपाधि प्रदान की।[1]

1719–40 ई. में मुहम्मदशाह रंगीले इस वंश के अंतिम बादशाह थे। वे स्वयं संगीत में निपुणता रखते थे। इनके दरबार में 'सदारंग', अदारंग और महारंग नामक उत्तम संगीतज्ञ थे। इस काल में टप्पे ठुमरी का प्रचलन हुआ।[2] इससे ज्ञात हुआ कि उस समय प्रोत्साहन स्वरूप राशि के अतिरिक्त उपाधि से भी अलंकृत किया जाने लगा था।

सारांश में यह कहा जा सकता है कि यद्यपि मध्य युग में विदेशी संगीत का भारतीय संगीत के साथ संबंध आया किन्तु विदेशी संगीत पाश्चात्य अर्थात् यूरोपीय संगीत नहीं था। वह मध्य एशियाई देशों का था, वह मेलोडी पर आधारित था। उसका भारतीय संगीत से योग्य रीति से अन्तर्भाव हुआ। फलतः भारतीय संगीत समृद्ध बना। एशियाई देशों के संगीत का प्रभाव भारतीय संगीत पर पड़ा जो पूर्णतया मेलोडी पर आधारित था और इसकी शिक्षा भी गुरू शिष्य परम्परा के आधार पर दी जाती थी। संगीत शास्त्र में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन भी हुआ। पहले की ग्राम मूर्च्छना पद्धति का ह्रास हुआ तथा अरबी संगीत पद्धति के 'मकाम' से रागों का वर्गीकरण हुआ। इसी को कर्नाटक संगीत में मेल और आगे चलकर पं. विष्णुनारायण भातखण्डे जी ने 'थाट' यह नाम दिया। इस वर्गीकरण का प्रायोगिक पक्ष पर कोई परिणाम नहीं हुआ। घरानों का आविर्भाव मध्य युग में हुआ। तानसेन का सेनिया घराना प्रसिद्ध हुआ। वर्तमान में डागर बन्धु की 17वीं पीढ़ी है इस प्रकार से कहा जाता है कि अर्थात् मध्ययुग में ही यह घराना निर्मित हुआ था।[3]

---

1. प्रभूलाल गर्ग 'वसंत', संगीत विशारद, पृ.सं.–28–29, दिसम्बर 1991
2. वही
3. पं. सुलभा ठाकुर, संगीत कला विहार, पृ.सं.–34

इस प्रकार मध्यकाल में घराना प्रणाली का प्रारम्भ दो रूपों में हो चुका था एक तो पारिवारिक सदस्यों का संगीत शिक्षा के रूप में और दूसरा गुरू–शिष्य परम्परा के रूप में उभर कर आए जिसके अन्तर्गत शिष्य गुरू के घर पर रहकर ही संगीत की शिक्षा ग्रहण करता था, जिसे सीना–ब–सीना तालीम भी कहा गया। संस्थाऐं और परिसर तो पुरानी चलती रहीं हैं, लेकिन शिक्षा के क्षेत्र में घरानों का अपना एक महत्वपूर्ण योगदान रहा। इसी काल में कई महत्वपूर्ण ग्रन्थ जैसे संगीत, 'परिजात', 'हृदय–प्रकाश', 'हृदय–कौतुक' ग्रन्थ लिखे गए। दक्षिण के अनेक विद्वानों ने संगीत की उन्नति पर कार्य किया। इसी काल में दक्षिण के प्रसिद्ध पं. व्यंकटमुखी ने चतुर्दण्डी प्रकाशित नामक ग्रन्थ लिखा।[1]

दक्षिण के दो महान् विद्वान् 'श्रीनाथ' और 'पोतना' ने संगीतमय काव्य की रचनाएं की। इसके अतिरिक्त कई अनेक विद्वान् क्षात्रज्ञ, वेंकट कृष्ण नायक आदि अनेक संगीतज्ञ और कवि हुए। क्षात्रज्ञ वीणा वादन में प्रवीण थे। इस काल में 'कल्व कोवा' नामक नृत्य का निर्माण हुआ, यह स्त्रियों के लिए था। इस काल में लावणी, परिजात, नाटक, भागवत, मेला, यक्षगान आदि प्रसिद्ध थे। इस प्रकार मध्य काल में संगीत सामान्य रूप से चलता रहा। संगीत की शुद्धता, पवित्रता, सुन्दरता और दिव्यता और शालीनता इस काल में बनी रही।

आधुनिक काल :– यह काल सन्1850 से सन् 1947 तक का है। इस 100 साल के समय में अनेक महान् विभूतियों ने जन्म लिया, जिन्होंने संगीत को आधुनिक रूप देने के लिए सब–कुछ अर्पण कर दिया।

1. डॉ. मृत्युंजय शर्मा, संगीत मैनुअल, पृ.सं.–165, 2002

19वीं शताब्दी तक हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की परम्परा गुरू–शिष्य परम्परा पर आधारित थी। परम्परा के माध्यम से शिष्य अपने गुरू की सेवा करने के लिए सदैव तत्पर रहता था। हिन्दुस्तानी संगीत का पुनर्जागरण फिर से शुरू हुआ।

19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में कई महत्वपूर्ण सांगीतिक ग्रंथ लिए गए। बंगाल के सर एस.एम. टैगोर ने "The University History of Music" नामक ग्रन्थ लिखा। इसी समय रवीन्द्रनाथ टैगोर ने रवीन्द्र संगीत के रूप में बंगाल के संगीत को एक नया आकार दिया। इसी समय कैप्टन एन.ए.विलर्ड नामक विद्वान ने "A Treatise on the Music of Hindustan" नामक पुस्तक लिखी। इनके प्रयासों से भारतीय संगीत का प्रचार–प्रसार विदेशों में भी हुआ।

‘‘संगीत एक आराधना हैं इससे तन्मयता की अवस्था उपलब्ध होती है और ईश्वर की वंदना भी। आधुनिक काल तक मन्दिरों में भजन, कीर्तन, आरती, गान द्वारा ईश्वरोपासना ईसाइयों द्वारा गिरजाघरों में आज भी करूणरागों तथा संगीत वाद्यों का प्रयोग करना आदि संगीत की महत्ता को प्रमाणित करते हैं। आज परमानंद तक पहुंचाने का श्रेष्ठतम मार्ग संगीत है।’’[1]

इस सदी के मोड़ पर दो महान् सितारे क्षितिज पर उतरेः– पं. विष्णु दिगम्बर पलुस्कर एवं पं. विष्णुनारायण भातखण्डे। इन दोनों महान् विभूतियों ने संगीत कला के भग्नावेषों का पुनः निर्माण किया। इन संगीतज्ञों के

1. डॉ. स्वतंत्र शर्मा, भारतीय संगीत एक वैज्ञानिक विश्लेषण, पृ.सं.–3, 1989

विभिन्न क्षेत्रों के संगीत विद्वानों, नवाबों, उस्तादों, कलाकारों से सम्पर्क करे देश में यहाँ–वहाँ बिखरी हुई संगीत कला को एकत्रित करने का प्रयास किया। संगीत की खोई हुई प्रतिष्ठा को पुनः स्थापित किया।

पं. दिगम्बर एवं भातखण्डे जी ने अपने भागीरथ प्रयत्नों से भारतीय संगीत का पुनरूद्धार किया एवं इस दैवीय कला को समाज व शिक्षा के क्षेत्र में सम्मानजनक स्थान पर स्थापित किया। ये उन्हीं की कठिन तपस्या का फल हैं कि वर्तमान समय में भारतीय संगीत को अन्य विषयों के समान ही, विद्यालयों से लेकर विश्वविद्यालय तक मान्यता प्राप्त है।[1]

विष्णु दिगम्बर पलुस्कर जी 12 वर्ष की उम्र में अंधे हो गए थे उसके बावजूद भी वो एक प्रतिभाशाली संगीतकार और एक आयोजक के रूप में उभरे। उन्होंने संगीत की कई पुस्तकें क्रमिक पुस्तक मालिका 1,2,3 लिखी और गंधर्व संगीत महाविद्यालय की स्थापना लाहौर में सन् 1901 में की।

इन दोनों विद्वानों ने संगीत को हिन्दी, मराठी, गुजराती भाषाओं के माध्यम से पुस्तक रूप दिया। आज संगीत कला का जितना भी प्रचार–प्रसार दिखाई दे रहा है वो उन्हीं दो महान् विभूतियों के सतत् प्रयासों का परिणाम हैं।[2]

इन संगीतज्ञों का लक्ष्य यह था कि भारतीय संगीत की सुर–सरिता को जन–सामान्य के घरों तक पहुंचाया जाए। पं. भातखण्डे जी ने स्वप्न का

---

1. पर्ली सेबेस्टीयन, संगीत, पृ.सं.–16, अगस्त 2010
2. डॉ. लक्ष्मीनारायण गर्ग, संगीत शास्त्र, पृ.सं.–8

उल्लेख कुछ इस प्रकार किया हैंः– "The mighty mansion of music should become accessible to all rich and poor, high and low, girls and boys, irrespective of age and social status."[1]

यह सोचने वाली बात हैं कि उस समय हमारा देश अंग्रेजों के अधीन था। ऐसी प्रतिकूल परिस्थितियों में भी ये दोनों विद्वान् अपने पथ से विमुख नहीं हुए।

प्रो.रानाडे ने पं. भातखण्डे के विषय में लिखा हैंः– "He was a gigantic task and it is hard to concieve how one man could ever have executed it so successfully"

लाहौर में गंधर्व महाविद्यालय की स्थापना के बाद इन्होंने मुम्बई में गंधर्व महाविद्यालय की स्थापना की। इन्होंने (पं. दिगम्बर) स्वर पद्धति लिपि का निर्माण किया। लगभग 250 पुस्तकें इन्होंने लिखी। जैसे– 'संगीत बाल बोध', 'राग–प्रवेश', 'भजनामृत लहरी', संगीत तत्व दर्शक आदि।

1911 के पश्चात् दोनों (पं. भातखण्डे एवं पं. दिगम्बर) ने संगीत सम्मेलनों का आयोजन कर भारतीय संगीत को प्रतिष्ठित किया। इन दोनों के ही अनवरत प्रयासों से संगीत कला को प्रतिष्ठा मिली। उसका मान–सम्मान बढ़ा। इस काल में ही कई महान् संगीतज्ञ जैसे राजा भैया पूँछ वाले, नृत्यकार उदयशंकर, पं. औंकारनाथ ठाकुर, उ0 अब्दुल करीम

1. पर्ली सेबेस्टीयन, संगीत, पृ.सं.–17, अगस्त 2010

खाँ, उ0 इनायत खाँ, उ0 विलायत खाँ, श्रीमती इन्द्रानी रहमान (भरतनाट्यम), कुमारी अनुराधा गुहा (कत्थक), उ0 अली अकबर (सरोद), उ0 बिस्मिल्लाह खाँ (शहनाई), उ0 बड़े गुलाम अली खाँ (गायक) आदि कलाकारों का इस पावन भूमि पर अवतरण हुआ।

इसी काल में ख्याल गायन के पश्चात् ठुमरी, गज़ल, कव्वाली तथा भजन आदि उपशास्त्रीय संगीत की गान शैलियां प्रचार में आई। सुगम संगीत के अन्तर्गत गीत, संगीत, फिल्म संगीत और लोक संगीत प्रचार में आया। ऐसे समय में महान् सितारवादक पं. रविशंकर का जन्म हुआ। इन्हीं के महान् प्रयासों से नृत्य, गायन, सितार आदि को अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त हुई। आपने ही ऑर्केस्टा को भारतीय तथा पाश्चात्य वाद्यों से विभूषित किया।[1]

पं. विष्णु नारायण भातखण्डे जी ने संगीत को जन–जन के लिए उपलब्ध कराते हुए संगीत शिक्षा में लोकतंत्र की स्थापना उसी प्रकार की जिस प्रकार विदेशी शासन से देश को मुक्त कराके महात्मा गांधी ने लोकतंत्र की स्थापना की। इन्होंने जन–मानस में भारतीय संगीत–कला के प्रति आत्मीयता की भावना का विकास किया। इनका यह मानना था जिस प्रकार विद्यालयों में विद्यार्थियों को सभी विषयों की सामान्य जानकारी जैसे–विज्ञान, गणित, साहित्य, इतिहास, भूगोल, नागरिक शास्त्र आदि दी जाती है। उसी प्रकार भारतीय कला की जानकारी भी सम्मिलित की जाए। इसी बीच लाहौर के संगीत विद्वान् राजा नवाब अली भातखण्डे जी के सम्पर्क में आए और उर्दू में संगीत की एक सुन्दर पुस्तक

1. डॉ. मृत्युंजय शर्मा, संगीत मैनुअल, पृ.सं.–167, 2002

'मुआरिफुन्नगमात्' लिखी। इस पुस्तक का बहुत आदर हुआ।[1]

पं. भातखण्डे जी का लक्ष्य था संगीत विद्यालयों एवं संगीत महाविद्यालयों की स्थापना कर समझदार श्रोताओं, कलाकारों व शिक्षकों का निर्माण करना और इन्होंने ऐसा किया भी। पं. भातखण्डे जी ने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना दिवस पर भाषण देते हुए संगीत की आध यात्मिकता, सामाजिक आवश्यकता तथा शैक्षणिक महत्ता का प्रतिपादन करते हुए कहा था–

''सगुण ब्रह्म की भक्ति से हमें इस लोक और परलोक में सुख मिल सकता है और निर्गुण ब्रह्म की भक्ति से अंतिम सुख मिल सकता हैं। हिन्द के संगीत की मधुरता इतनी बढ़ गई है कि उसे किसी भी दूसरे देश से सीखने की आवश्यकता नहीं हैं।.....हमारा संगीत पीछे रह गया हैं क्योंकि शिक्षा विभाग में उसे योग्य स्थान प्राप्त नहीं हैं।..... जब हमने अपना विश्व विद्यालय स्थापित किया है तो अन्य विधाओं के साथ संगीत विद्या को भी स्थान देना चाहिए।..... यदि हम इस संगीत की वास्तविक उन्नति चाहते हैं तो अपने विद्यालयों में इसे स्थान देना होगा। इसी संगीत की उन्नति के साथ प्रजा की उन्नति भी हैं।..... इसीलिए गंगा जी के पास तट पर हजारों प्राचीन महर्षि भजन गाते थे। अतः इस पवित्र संगीत की हमारी राष्ट्रीय संस्थाओं में भी प्रधान रूप से स्थान मिलना चाहिए।''[2]

---

1. प्रभूलाल गर्ग (बसंत), संगीत विशारद, पृ.सं.–30, 1991
2. तुलसीराम देवांगज, संगीत, पृ.सं.–20, जनवरी–फरवरी 1987

पं. भातखण्डे जी का मानना था कि भारत के हर घर से संगीत की आवाज़ आनी चाहिए।

शिक्षा की अवधारणा :– 1947 में भारत की स्वतंत्रता के बाद संगीत को एक नई दिशा प्राप्त हुई। रियासतों का विलय हुआ और संगीत को सरकार द्वारा संरक्षण प्राप्त हुआ। आवश्यकता इस बात की थी कि विद्यालयों में भारतीय संगीत की सामान्य शिक्षा दी जाए जिससे बालकों के नैसर्गिक क्रियाकलापों व संस्कारों को पुष्पित व पल्लवित होने का अवसर मिले। संगीत के दोनों महान् (पं. भातखण्डे एवं पं. दिगम्बर) संगीतज्ञों ने तत्कालीन प्राचीन संगीत को व्यवस्था प्रदान की। ये दोनों 'विष्णुद्वय' वास्तव में पूजनीय हैं, वन्दनीय हैं।

संगीत के प्रोत्साहन के लिए 1952 में 'राष्ट्रपति पदक' शुरू किया गया। 1953 में 'संगीत नाटक अकादमी' और 1954 में 'ललित कला अकादमी' की स्थापना की गई। आकाशवाणी द्वारा संगीत के कार्यक्रम प्रसारित किए जाने लगे जिसके द्वारा संगीत को सर्वसाधारण तक पहुंचाया गया।[1]

शिक्षा संस्थानों में बी.ए., एम.पी. से लेकर पीएच.डी. तक के सहस्त्रों विद्यार्थी अध्ययनरत् हैं। इन संस्थाओं से कई शिक्षक अपनी रोज़ी–रोटी कमा रहे हैं। रेडियो, टेलिविज़न डिस्क, रिकार्डस, कैसेट्स के माध्यम से संगीत का प्रसार हुआ हैं।[2] इन सभी माध्यमों के द्वारा संगीत की शिक्षा प्रदान की गई एवं शिक्षा ग्रहण भी की जा रही है।

---

1. डॉ. मृत्युंजय शर्मा, संगीत मैनुअल, पृ.सं.–168, 2002
2. डॉ. लक्ष्मीनारायण गर्ग, भारतीय संगीत का संक्षिप्त इतिहास, पृ.सं.–9

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् संगीत कला की सर्वश्रेष्ठ उन्नति हुई। संगीत का उपयोग केवल राष्ट्रीय पर्वों तथा वार्षिक उत्सवों तक ही सीमित नहीं हैं बल्कि सम्पूर्ण सत्र में संगीत शिक्षण होता है जिससे भावी नागरिक हमारी संस्कृति के इस पक्ष को जान सकेगें।

अनेक प्रतिभावान कलाकारों ने भारत के अलावा अमेरिका, कनाडा, रूस, यूरोप आदि में संगीत को गुजायमान किया है नए–नए वाद्यों का निर्माण भी किया गया है। जैसे– मोहन वीणा, इलेक्ट्रिक गिटार, सुर सिंगार, सितार, स्लाइड गिटार, तबला, पखावज, सितार, सरोद आदि स्वतंत्र वाद्य के रूप में उभरे हैं। संगीत की सर्वोच्चता इस काल में शिखर तक पहुंच गई थी।

" Music is the highest art which gives us abandon, where the will to live is silenced. It ia a vehicle of religious mistrical experience.:"

अतः हम कह सकते हैं कि संगीत की अवधारणा तीनों ही काल में श्रेष्ठ व शोभायमान रही है। भारतीय संगीत विश्व का सबसे महान् व प्राचीनतम् संगीत रहा है। इसकी विशेषता यह है कि इसकी बाह्य और आन्तरिक दोनों प्रकार के सौन्दर्य समान रूप से विकसित हुए हैं।

भारतीय संगीत का संबंध सदैव मानव के धर्म, चरित्र साहित्य, संस्कृति, कला व जीवन के समस्त पहलुओं से रहा है संगीत कला ने

मनुष्य जाति को कभी भी अपने कर्म से विमुख नहीं किया बल्कि उसे सही दिशा प्रदान की है। जिस प्रकार मूर्तिकला में विषयरूप सौन्दर्य होता है, चित्रकला में चाक्षुक सौन्दर्य, काव्य में कल्पना, उसी प्रकार संगीत में प्रेषणीयता होती है। संगीत एक हृदय को दूसरे हृदय से छूता है। संगीत एक उत्कृष्टतम् कला है अतः भारतीय संगीत कला श्रेष्ठ है एवं उसका इतिहास अनेक विविधताओं एवं सौन्दर्य से भरपूर है।

इस काल में संगीत की शिक्षा निम्न प्रकार से दी जाती थीः–

1. **स्वतंत्र रूप से दी जाने वाली शिक्षा** :– इस प्रकार की शिक्षा पद्धति में शिक्षकों का विभाजन चार प्रकार से हुआ।

- **घराने दार संगीत शिक्षक** :– जो अपनी पारम्परिक गायन प्रणाली को रखने हेतु घरानेदार गायकी की शिक्षा देते हैं।

- **प्रचारक संगीत शिक्षक** :– जो समाज में संगीत को विशेष स्थान प्राप्त कराने की दृष्टि से संगीत का प्रचार करते हैं।

- **विद्यालयी तथा विश्वविद्यालयीय शिक्षक** :– जो अध्यापक नौकरी एवं व्यवसाय हेतु उपाधियां प्राप्त कर विद्यालय या विश्वविद्यालय में शिक्षा देते हैं।

- **स्वतंत्र व्यवसायी संगीत शिक्षक** :– जो कलाकार बनने की मनोकामना से घरानेदार शिक्षा प्राप्त कर किन्तु स्वतंत्ररूप से शिक्षा प्रदान करते हैं।

2. अन्य छोटी–छोटी व्यवसायिक संगीत संस्थाओं के माध्यम से भी संगीत शिक्षा प्रदान की जाती है।[1]

संगीत शिक्षा प्रणाली में संगीत शिक्षा नए–नए वैज्ञानिक उपकरणों द्वारा भी प्रदान की जाती है जैसे–ग्रामोफोन, टेपरिकॉर्डर, कैसेट्स, कॉम्पेक्ट डिस्क, आकाशवाणी, कम्प्यूटर्स, टी0वी0 सिनेमा आदि जिससे कि विद्यार्थी स्वयं सुनकर के या अनुसरण करके सीखता है। भारतीय संगीत की शिक्षा की दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के माध्यम से सीखा जा रहा है जिसमें विडियो कांन्फ्रेंसिंग प्रमुख है जिससे हम दूर बैठे अपने गुरू से शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। दूरस्थ शिक्षा प्रणाली विभिन्न माध्यमों द्वारा प्रदान की जाती हैं।

सन् 1994 में अमेरिका के स्पैनिश गिटार–वादन राइकूडर के साथ जुगलबंदी करते हुए 'ए मीटिंग बाई इ रिवर' नामक रचना एक कॉम्पेक्ट डिस्क के लिए बनाई थी। इस डिस्क से लगातार चालीस सप्ताह तक संसार के दस सर्वश्रेष्ठ डिस्कों में जगह बनाए रखी जिसके माध्यम से संगीत शिक्षा के विद्यार्थी इसको सुनकर के या अनुसरण से शिक्षा ग्रहण करने में सफल रहे हैं।

इस प्रकार संगीत को दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के माध्यम से भी सुलभ बनाने का प्रयास किया जा रहा है।

□□□□□

---

1. डॉ. सुरेश गोपाल श्रीखण्डे, हिन्दुस्तानी शास्त्रीय गायन की शिक्षा प्रणाली, पृ.सं.–268

द्वितीय अध्याय

"संगीत शिक्षा प्रणाली के विभिन्न आयाम"

द्वितीय अध्याय

"संगीत शिक्षा प्रणाली के विभिन्न आयाम"

संगीत एक उच्च कोटि की प्राचीनतम ललित कला है। यह एक ऐसा सशक्त माध्यम हैं जो अमूर्त भावनाओं को मूर्त रूप प्रदान करता हैं। यह एक ऐसी कला हैं जिसमें कलाकार और श्रोता दोनों का जीवन परमानन्द को प्राप्त करता है। इसीलिए इसे 'ब्रह्मानन्द–सहोदरम्' कहते हैं।

इस संगीत की परम्परा में सदैव ही विविधता, निरन्तरता और सह अस्तित्व की प्रधानता रही है। संगीत का सार्वभौमिक रूप देश, काल, जाति, धर्म सभी से परे हैं और ऊपर है। संगीत सर्वत्र हैं, सर्वव्यापी हैं, सनातन हैं, शाश्वत् हैं और यह स्पष्ट करता है कि इसका आधारभूत तत्व स्वर तथा लय ही हैं।

''संगीत एक आदर्शमयी शब्दहीन भाषा हैं जिसके द्वारा भावों की सुन्दर अभिव्यक्ति की जाती हैं। इसी नैसर्गिक गुणों के कारण इसे दिव्यकला माना गया है और संगीत का देवज्ञ।''[1]

श्रीमती सुधा श्रीवास्तव के अनुसार संगीत की शास्त्रीय परम्परा इस प्रकार विकसित हुई हैं कि ज्ञान, अभ्यास, कल्पना और सृजनात्मक कौशल सभी का समन्वित योगदान ही कलात्मक अभिव्यक्ति को एक

1. डॉ. किरन तिवारी, संगीत एवं मनोविज्ञान, पृ.सं.–43

व्यवस्थित रूप दे पाता है। हमारी इस परम्परा की यह विशेषता है कि यह निरंतरता बनाए हुए हैं। इस अमूर्त कला की निरंतरता को सुरक्षित रखने में गुरू–शिष्य परम्परा ने अपना विशेष योगदान दिया है।[1]

चूंकि सभी कलाओं में प्रशिक्षण और विधिवत शिक्षा का अपना एक महत्व है तो संगीत में तो इसका और भी अधिक महत्व है और इसी कारण यह विद्या बिना गुरूमुखी शिक्षा से प्राप्त करना असंभव है। इन्हीं क्रमों में इस शिक्षा प्रणाली के विभिन्न आयामों का जन्म हुआ।

भारतीय संगीत की शिक्षा प्रणाली के विभिन्न आयाम इस प्रकार हैं:–

घराना :– 'घराना' शब्द 'घर' से प्राप्त होता है और घर शब्द का तात्पर्य परिवार से होता हैं जहां सभी सदस्य मिलजुल कर कहते हैं। संगीत क्षेत्र में संगीतज्ञ गुरू से शिक्षा प्राप्त करके गायन का विकास करता है व नवीनता लाता है और उसी प्रकार अपने शिष्यों को सिखाता हैं। बाद में उसके शिष्य अपने शिष्यों को सिखाते हैं। यही गुरू–शिष्य परम्परा 'घराना' कहलाती है।[2]

अर्थात् घर शब्द का अर्थ 'वंश' और घराना शब्द का अर्थ सांगीतिक वंश वैशिष्ट्य कहना भूल नहीं होगी। किसी भी संगीतज्ञ द्वारा अपनी द्वारा प्रतिभा के बल पर नवीन पद्धति का प्रयोग कर उसी पद्धति का उनके शिष्यों द्वारा प्रचार करने से एक घराना बन जाता है।3

---

1. सुधा श्रीवास्तव, भारतीय संगीत के मूलाधार, पृ.सं.–10, 167
2. बाबू भाई, संगीत कला विहार, पृ.सं.–250, जून 1957
3. डॉ. निशि माथुर, भारतीय संगीत कलाकार (वंशानुक्रम एवं पर्यावरण), पृ.सं.–25, 2001

गुरू–शिष्य परम्परा के माध्यम से संगीत के शिष्य सबसे पहले यह जानने का प्रयत्न करते हैं कि वास्तव में गुरू–शिष्य परम्परा है क्या ? 'गुरू' का क्या अर्थ है ? 'शिष्य' का क्या अर्थ है ? 'परम्परा' का क्या अर्थ हैं ? और इस परम्परा का निर्वाह करने के लिए गुरू और शिष्य के क्या कर्त्तव्य हैं ?[1]

गुरू तथा शिष्य के कर्त्तव्यों के संबंध में कहा गया हैं किः–

1. **पुत्रभिवैनमनुकाड.क्षत् सर्वे धर्मेष्वनपत्र्छादयमानः।**
   सुयुक्तोविद्यां ग्राहयेत्।।[2]

2. **गोऽश्रोष्ट्रयानप्रासादस्त्रस्तरेतु कटेपु च आसीत्।**
   गुरूणासार्थ शिलाफलकनौषु च।।[3] **ऋ.**

अर्थात् गुरू को शिष्य को पुत्र की तरह मानना चाहिए और उसकी उन्नति की इच्छा करते हुए सभी धर्मो में कुछ भी गुप्त न रखते हुए उसे विद्या प्रदान करनी चाहिए।[4]

शिष्य को गुरू के साथ एक ही आसन पर नहीं बैठना चाहिए परन्तु वह बैलगाड़ी, ऊँटगाड़ी, महल की छत पर गुरू के साथ (समान आसन पर) बैठ सकता है।[5]

घराने के कायदे, अभ्यास का तरीका, गुरू के द्वारा प्राप्त ज्ञान, परम्परागत बंदिशों की विशेष प्रस्तुति कल्पना और कला कौशल के उचित प्रयोग ने रागदारी संगीत की परम्परा को विकसित करने में अपनी भूमिका को बहुत प्रभावशाली बनाया।

---

1. डॉ. लक्ष्मीनारायण गर्ग, संगीत, पृ.सं.–3, जून 2011
2. आपस्तंब धर्मसूत्र–1/2/8/25
3. मनुस्मृति–2/2004
4. सौभाग्यवर्धन बृहस्पति (लेख) गुरू–शिष्य परम्परा के माध्यम से संगीत शिक्षण, संगीत, पृ.सं.–5
5. वही

संगीत में घराना एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। संगीत के सभी क्षेत्र में घराने की प्रथा पाई जाती हैं। घराने तीनों ही विधाओं में होते हैं– गायन, वादन और नृत्य। उत्तर में जिसे 'घराना' कहते हैं दक्षिण में उसे 'सम्प्रदाय' कहा जाता हैं।

गुरू–शिष्य परम्परा से मिलकर ही एक घराना बनता हैं किसी भी कला को सफल बनाने के लिए यह आवश्यक हैं कि शिक्षक भी योग्य हो और शिष्य भी योग्य हो। प्रत्येक घराने की अपनी एक विशेषता अथवा वैशिष्ट्य होता है और वह अपनी परम्परा या शैली को मानने वाला होता है।

योग्य गुरू के द्वारा हमेशा प्रतिभाशाली शिष्य को इस प्रकार का शिक्षण दिया जाता है जिससे घराने की छाप बनी रहती है और संगीत परम्परा विकसित होती जाती है।

गुरू–शिष्य परम्परा में अर्थात् घरानों में अनुकरण का महत्वपूर्ण रहता हैं जिस कारण गुरू की अच्छाईयों के साथ–साथ शिष्य गुरू की कमजोरियों का भी अनुकरण कर लेता है किन्तु घरानों में अनुकरण का अपना एक महत्व है। अनुकरण के द्वारा ही वो बारीकियां अनूभूति बन जाती हैं और मौलिकता तथा सृजनात्मकता से गायकी को सजाया तथा समृद्ध किया जाता हैं।

प्रत्येक घराने की शिक्षा देने का अपना तरीका था और प्रायः सभी में अनुकरण पर बहुत महत्व दिया गया है। घराने के प्रति समर्पित सभी

शिष्यों ने भी नवीनता, परम्परा, कला–कौशल और सृजन, अभ्यास प्रेरित गायकी और कला सृजित गायकी में पूरा संतुलन बनाए रखा।[1]

वैज्ञानिक उपकरण के अभाव में संगीतज्ञों की सतत् और सजीव साधना तथा उचित प्रयासों ने ही इस कला को शिष्य–परशिष्य स्थानान्तरित कर अमरत्व प्रदान किया है। शताब्दियों से ही गुरू–शिष्य परम्परा के रूप में संगीत शिक्षण चलता आ रहा है परन्तु 'घरानों' शब्द का प्रयोग मध्यकाल में मुस्लिम सभ्यता के प्रभाव का परिणाम है।[2]

सामगान में निपुण व्यक्ति यज्ञ कर्म के लिए विशेष रूप में बुलाये जाते थे। फलस्वरूप उद्गात वर्ग में सम्मिलित होने वाले अपने आप ही इन आचार्यों के पास प्रशिक्षण हेतु पहुंचते थे। संभवतः यही गुरू–शिष्य परम्परा का प्रादुर्भाव था।[3]

पुराणों के अनुसार मूल शाखाओं के प्रवर्तक मुनि वेद–व्यास हैं, जिन्होंने अपने चार शिष्यों को चार स्वतंत्र संहिताओं की शिक्षा दी जिसमें जैमिनी को ही जनसंहिता का अध्ययन कराया, अतः जैमिनी को ही आदि आचार्य कहा जाता है।

जैमिनी ने अपने पुत्र सुमन्तु को, सुमन्तु ने अपने पुत्र सुन्वानु को और सुन्वानु ने अपने पुत्र सुकर्मा को सामगान की शिक्षा दी। तत्पश्चात् सुकर्मा ने सामज्ञान की शिक्षा के संदर्भ में शिष्य–परम्परा प्रवाहित की।[4] इस प्रकार बाद के ग्रन्थों में भी गुरू–शिष्य परम्परा की प्रगाढ़ता के संकेत

1. सुधा श्रीवास्तव, भारतीय संगीत के मूलाधार, पृ.सं.–168, 2002
2. डॉ. लक्ष्मीनारायण गर्ग, संगीत, पृ.सं.–3, जून 2011
3. सारिका, संगीत, पृ.सं.–6, मई 2011
4. डॉ. शरतचन्द्र परांजपे, भारतीय संगीत का इतिहास, पृ.सं.–65

मिलते है। इस परम्परा को धीरे–धीरे विभिन्न राजाओं का आश्रय मिला और संगीत की इस शिक्षा प्रणाली ने खूब विकास किया।

''यदि पूच्छेत्य काकुत्सयो युवां कस्येति द्वारकौ।
वाल्मीकिस्य शिष्यौ द्वौ ब्रुतमेवं नराधिपतम्''।।[1]

लव और कुश दोनों ने वाल्मीकी से कहा था कि अगर श्रीराम पूछे कि तुम किनके पुत्र हो तो इतना कहना था कि हम ऋषि वाल्मीकी के शिष्य हैं। रामचरितमानस के बालकाण्ड की प्रथम चौपाई में गुरू की महिमा इस प्रकार बताई हैः–

''बंदौ गुरू पद पद्म परागा सुरूचि सुवास सरस अनुरागा।
अभिय मूरियम चूरण चारू शमन सकल भव रूज परिवारू।।[2]

अर्थात् गुरू के चरणों की रज्ञ को मैं प्रणाम करता हूँ जो सुन्दर प्रकाशवान, सुगन्धित, रसयुक्त और भक्ति को उत्पन्न करने वाली है।

महाभारत में भी गुरू–शिष्य परम्परा हर विद्या के क्षेत्र में विद्यमान थी। जब एक वर्ष तक पांडव अज्ञातवास में रहे थे तब राजा विराट के दरबार में अर्जुन ने वृहन्नाड़ा का रूप धारण करके राजा विराट की पुत्री देवी उत्तरा को संगीत की शिक्षा प्रदान की थी।[3]

नाट्य शास्त्र ने भी गुरू–शिष्य परम्परा का उल्लेख हैः–

---

1. 'उत्तराखण्ड' सर्ग 93, श्लोक–4 व 12
2. 'रामचरितमानस', बालकाण्ड, चौपाई–1
3. उमेश जोशी, भारतीय संगीत का इतिहास, पृ.सं.–98

''आचार्य भरत ने अपने सौ शिष्यों को नाट्य शिक्षा प्रदान की थी, इनमें कोहल, भरत का प्रमुख शिष्य था।''[1]

गुरू के सानिध्य में रहकर शिष्य साधनामय तेजस्वी जीवन बिताते थे। उसका शरीर तपोवेष्ठित होने के कारण स्वर्ण जैसा दैदिप्यमान होता था। संसार की विभिन्न कठिनाइयों से संघर्ष करने की उनमें शक्ति होती थी। शिष्यों में वार्तालाप, विवेचन, विश्लेषण और विचार–विनियम के द्वारा गम्भीर चिंतन की प्रवृति जागती थी। शिष्यों में आत्म–ज्ञान की अनुभूति हो जाती थी। शिष्य केवल राजपुंज ही नहीं बल्कि शक्तिपुंज होकर निकलते थे। ऐसे शिष्यों को भौतिक सुख–सुधिधा की कोई आकांक्षा नहीं होती थी।

गुरू–शिष्य परम्परा का विभिन्न शास्त्रों, वेद–वेदागों में भी वर्णन मिलता है। शिष्य गण, गुरूओं की श्रद्धा भाव से सेवा करते व यथाशक्ति उसके अभिभावक दक्षिणा प्रदान करते।

घराने का व्यक्तिगत सम्पत्ति की तरह प्रयोग किया जाता था। कालान्तर में घरानों की स्थापना व्यक्तिगत पहचान, शैलीगत विशिष्टता आदि को दर्शाने के लिए भी होती रही है। वर्तमान समय में संगीत शिक्षा की घराना पद्धति उसी प्रकार क्रियाशील हैं।

प्राचीन शिक्षा पद्धति में शिक्षार्थी की प्रतिभा, अनुसंधान क्षमता, सेवा, धैर्य व उदारता आदि गुणों पर विचार करने के बाद ही योग्य विद्यार्थी

1. शरतचन्द्र पराजंपे, भारतीय संगीत का इतिहास, पृ.सं.–323, 462

को आचार्य या गुरू के द्वारा शिक्षा प्रदान की जाती थी।

गुरू–शिष्य परम्परा से ही आगे चलकर घराना–पद्धति अस्तित्व में आई जो गुरू–शिष्य परम्परा का ही एक सुव्यवस्थित एवं संगठित रूप था।

संत कवि तुलसीदास जी ने रामचरितमानस में गुरू की वंदना करते हुए लिखा है :–

''बंदऊँ गुरू पद कंज कृपा सिंधु नर रूपहरि।
महामोह तम पुंज जासु बचन रविकर निकर।।''[1]

घराना पद्धति की इस परम्परा से बहुत लाभ प्राप्त हुआ जैसे–

1. संगीत कला को भविष्य के लिए सुरक्षित रखने में घराना पद्धति का महत्वपूर्ण योगदान रहा हैं।
2. इस परम्परा द्वारा सीना–दर–सीना तालीम हाती थी और गुरू–शिष्य को तराशने में पूरी तरह से ध्यान देता था।
3. घराना शैली में एक शिष्य अपने गुरू के प्रति पूर्णतः समर्पित होता था और गुरू–शिष्य को कठोर साधना कराकर निखार देता था।

संगीत क्षेत्र के कई घराने हैं जैसे दिल्ली, लखनऊ, किराना, रामपुर, पटियाला, ग्वालियर, आगरा, जयपुर, मेवाती, भिंडी बाज़ार,

1. संत कवि तुलसीदास, रामचरितमानस

डागर, सहसवान, तानसेन, उदयपुर, विष्णुपुर, वाराणसी, श्याम चौरासी, सेनिया, इमदादखानी घराना आदि। संगीत क्षेत्र में कल्पनागत विभिन्नताओं के कारण ही कई घरानों ने जन्म लिया।

घरानों की अपनी विशेषताएं होती हैं किराना घराने में स्वर को प्रमुखता देते हैं तो ग्वालियर आगरा घराने में लय को। ग्वालियर घराने में खुली आवाज़ लगाने का अपना तरीका है। तानें दानेदार ली जाती हैं जबकि किराने घराने में नक्कीदार आवाज़ एवं रेशम से मुलायम स्वरों का प्रयोग किया जाता है। इसी प्रकार घराना आयाम भारतीय संगीत की परम्परागत शिक्षा प्रणाली हैं।

औपचारिक शिक्षा पद्धति :– शिक्षा का अंग्रेजी अनुवाद "Education" हैं। यह शब्द लैटिन भाषा का है जिसका अर्थ है विकसित करना अथवा निकालना। 'शिक्ष्यते उपदिश्यते यत्र सा शिक्षा' अर्थात् जिस माध्यम अथवा प्रणाली के द्वारा उपदेश दिया जाता हैं वही शिक्षा है।

भाषा शब्दकोष के अनुसार–किसी विद्यार्थी के सीखने, सिखाने की क्रिया, पढ़ाई, उपदेश, सीख, तालीम, गुरू के समीप विद्याभ्यास, छह वेदांगों से वेदों के स्वर मात्रा का निरूपक एवं विधान, दबाव, शासन, सबक[1] भाषा शब्द के अनेक अर्थ हैं।

इसी प्रकार प्रो. हरनाम सिंह के शब्दों में–'मनुष्य को सही अर्थों में मनुष्य बनाने वाली शिक्षा ही शिक्षा कहलाती हैं।'[2] स्वामी विवेकानन्द

1. रामशंकर शुक्ल 'रसाल', भाषा शब्दकोष, पृ.सं.–146
2. प्रो. हरनाम सिंह, सिखिया दे सिद्धांत, पृ.सं.–5

के अनुसार–'मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना ही शिक्षा हैं।'[1]

इस प्रकार शिक्षा एक ऐसी आयोजित प्रक्रिया हैं जो किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास के साथ–साथ उसे सभ्य, सुयोग्य, सुसंस्कृत, सृहृदय व्यक्ति बनाकर सर्वांगीण विकास करती हैं।

संगीत शिक्षा का तात्पर्यः– विभिन्न प्रकार की भौतिक, आर्थिक, सामाजिक, ऐतिहासिक विषयों की शिक्षा के समान ही संगीत को भी एक सर्वश्रेष्ठ कला का दर्जा प्राप्त हो चुका है। यह एक मौखिक एवं प्रदर्शन प्रधान कला होते हुए भी अन्य विषयों की भांति अध्ययन, अनुसंधान एवं अध्यापन का विषय बन चुका है। संगीत की शिक्षा का शैक्षिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक महत्व है।

संगीत की शिक्षा का अर्थ स्वर, ताल युक्त धुनों एवं रोगों को सिखाने के साथ–साथ संगीत साधना में विद्यार्थी की आस्था व श्रद्धा को उत्पन्न करना है। गले एवं वाद्य में शुद्ध स्वरों–का उच्चारण अथवा शुद्ध स्वरों का निकास, आसन का नियम, नृत्य की भाव–भंगिमाओं का विकास करना हैं। संगीत की भाषा से विश्व बंधुत्व की भावना कराना है।[2]

संगीत की शिक्षा भारत में दो प्रकार से दी जाती हैः–

1. **व्यक्तिगत रूप में अथवा गुरू–शिष्य परम्परा**
2. **औपचारिक अथवा संस्थागत शिक्षा प्रणाली**

---

1. हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव, संगीत निबन्ध संग्रह, पृ.सं.–96
2. अमित कुमार बेनर्जी, हिन्दुस्तानी संगीतः परिवर्तनशीलता, पृ.सं.–123,124

गुरू–शिष्य परम्परा के बारे में हम पहले विचार कर चुके हैं। अब हम औपचारिक शिक्षा प्रणाली के बारे में विचार विमर्श करेंगे। 18वीं शताब्दी में ब्रिटिश साम्राज्य की स्थापना के पश्चात् धीरे–धीरे कलाओं और कलावारों को राजाश्रय प्रदान करने वाली रियासतों का पतन होने लगा। संगीतज्ञों को पहले जैसा सम्मान और प्रतिष्ठा प्राप्त नही थी।[1] ऐसे समय में संयोगवश ऐसे दो महान् संगीत उद्धारक और युग प्रवर्तक पं. विष्णुनारायण भातखण्डे एवं पं. विष्णु दिगम्बर पलुस्कर ने इस चुनौती का सामना करते हुए यह दृढ़ निश्चय किया कि संगीत शिक्षा के परिवर्तित रूप द्वारा समाज में संगीत की प्रतिष्ठा और सम्मान को पुनः स्थापित करेंगे।[2]

इन दोनों महान् विभूतियों ने ही संगीत शिक्षण संस्थाओं का अस्तित्व जन साधारण के समक्ष प्रस्तुत किया। वास्तव में संगीत संस्थाएं तो वैदिक समय से ही अस्तित्व में आ चुकी थी। धीरे–धीरे विशिष्ट प्रशिक्षण केन्द्रों के माध्यम से गुरूकुल और गुरू आश्रम का निर्माण हुआ।

याज्ञिक संदर्भ में सामगान बहुत हद तक तकनीकी हो चुका था। वेदांग साहित्य को पढ़ने से पता चलता हैं कि उस काल में अन्य वेदों की भांति ही सामवेद की तकनीक एवं उसके सिद्धांतों का अध्ययन करने के लिए कई साम परिषदों की स्थापना हो चुकी थी। इन परिषदों के साम स्वर वैशिष्ट्य और उच्चारण वैशिष्ट्य का विशेष रूप से अध्ययन किया जाता था।[3] वैदिक युग की सामपरिषद् एक प्रकार से संगीत शिक्षण संस्थाएं ही थी। धीरे–धीरे वैष्णव मन्दिरों में भी शिक्षा का कार्य किया

1. सारिका (लेख), विश्वविद्यालय संगीत का पाठ्यक्रम–दशा एवं दिशा, संगीत, पृ.सं.–6, मई 2011
2. सुधा श्रीवास्तव, भारतीय संगीत के मूलाधार, पृ.सं.–171, 2002
3. डॉ. पंकजमाला शर्मा, वैदिक संगीत अंक, पृ.सं.–82

जाने लगा। तक्षशिला, काशी, नालंदा (5वीं शताब्दी) एवं विक्रम शिला (11वीं–12वीं शताब्दी) भी प्रमुख विद्या केन्द्र बनें जहां 18 शिल्पों सहित सगीत एवं नृत्य की शिक्षा दी जाती थी।[1]

ग्वालियर के राजा मानसिंह तोमर ने संगीत के शिक्षण के लिए संगीत विद्यालय की स्थापना की जिसे ग्वालियर विद्यापीठ कहा गया।[2] अंग्रेजी साम्राज्य की फलस्वरूप संगीत को समाज में प्रतिष्ठित करने के लिए संगीत विद्वानों ने सराहनीय प्रयत्न किए एवं अनेक विद्यालयों की स्थापना की।

औपचारिक शिक्षा पद्धति के माध्यम से संगीत के प्रचार–प्रसार हेतु दोनों विद्वानों (पं. भातखण्डे व पं. पलुस्कर) ने अपने–अपने ढंग से स्वरलिपी का निर्माण किया जिसके कारण शिक्षा को एक समन्वित रूप मिला। दोनों विद्वानों ने गुरूकुल शिक्षा की सारी खूबियों को समयानुसार आवश्यकताओं के साथ जोड़कर शिक्षा को प्रस्तुत किया।

महाविद्यालय शिक्षा देने और लेने के केन्द्र बन गए। प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को एवं निष्ठावान विद्यार्थियों को उनकी क्षमता के अनुकूल शिक्षा देने का प्रावधान था। इस प्रकार घर–घर में संगीत को सम्मान मिला और जन साधारण में संगीत का प्रचलन हुआ। संगीत को बंद कोठरी से निकालकर खुले मैदान में लाया गया।

---

1. डॉ. मुकेश गर्ग, भारतीय संगीत में संगीत संस्थाऐं, पृ.सं.–5
2. शरतचन्द्र परांजपे, भारतीय संगीत का इतिहास, पृ.सं.–27

औपचारिक शिक्षा पद्धति का यह उद्देश्य था कि संगीत के क्रियात्मक, कलात्मक पक्ष के सभी पहलओं को समृद्ध किया जाए।

रामशंकर भट्टाचार्य के शिष्य क्षेत्रमोहन गोस्वामी ने 1871 में कोलकत्ता में संगीत विद्यालय की स्थापना की और संगीत को जन साधारण में प्रचलित करने का प्रयत्न किया।[1]

1874 में भास्कर राव बखले द्वारा पूना में गायन समाज संस्था की एवं 1887 में बम्बई में पारसियों द्वारा 'गाइनोतेजक' मण्डल नामक संगीत संस्था की स्थापना की गई। 1857 में पन्नालाल गोसाई ने दिल्ली में सितार संस्था प्रारम्भ की एवं बंगाल में संगीत शिक्षण की एक छोटी संस्था स्थापित की।[2]

सन् 1886 में बड़ौदा नरेश सियाजी राव के सहयोग से उ. मोलाबख्श ने बालक गायन समाज नामक संस्था की स्थापना की जिसे बाद में बड़ौदा स्टेट म्यूजियम कहा गया।[3]

पं. भातखण्डे द्वारा 1918 में माधव संगीत विद्यालय, 1920 में बड़ौदा संगीत विद्यालय, 1925–26 में लखनऊ में मैरिस कॉलेज ऑफ म्यूज़िक की स्थापना पं. विष्णु दिगम्बर पलुस्कर द्वारा 1901 में लाहौर में गंधर्व महाविद्यालय की स्थापना भी उल्लेखनीय है।[4]

इन दोनों महान् विभूतियों के प्रयत्नों के फलस्वरूप कालान्तर में

1. अमरेशचन्द्र चौबे, संगीत की संस्थागत शिक्षण प्रणाली, पृ.सं.–22
2. मंजूषी चौधरी, इंडियन म्यूज़िक इन प्रोफेशनल एवं अकेडमिक इन्स्टीट्यूशन्स, पृ.सं.–8
3. सुरेश गोपाल श्रीखण्डे, हिन्दुस्तानी शास्त्रीय गायन की शिक्षा प्रणाली, पृ.सं.–170
4. सारिका, संगीत, पृ.सं.–8

विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में संगीत का अध्ययन, अध्यापन एवं अनुसंधान किया जाने लगा। इस प्रकार औपचारिक शिक्षा प्रणाली के आधार पर भारतीय संगीत की शिक्षा प्रणाली अपने उच्चतम शिखर पर पहुंच गई हैं।

औपचारिक शिक्षा पद्धति से कलाकारों का निर्माण कर इन दोनों विभूतियों न इस शिक्षा प्रणाली को मान्यता प्रदान करवाई। माधव संगीत महाविद्यालय ग्वालियर के प्रथम समूह के छात्र श्री रामचन्द्र अग्निहोत्री ने भातखण्डे जी के संबंध में लिखा है कि ''पं. भातखण्डे जी के पास एक सप्त स्वर सीटी थी जिसे बजाकर वे उसकी आवाज़ से छात्र को अपनी आवाज़ मिलाने के लिए कहते थे। जो छात्र अपनी आवाज़ उस सीटी की आवाज़ से मिला लेते थे उसकी बुद्धिमता का परीक्षण कर उन्हें प्रवेश दे दिया जाता था।''[1]

इस औपचारिक शिक्षा प्रणाली के माध्यम से सांगीतिक अनुकूलता का परीक्षण कर विद्यार्थियों को कक्षा में प्रवेश दिया जाता है और उस पाठ्यक्रम का पूरा अभ्यास कराया जाता है। शिक्षण कार्य का निरीक्षण व उचित मार्गदर्शन किया जाता है। संगीत विद्यालयों व महाविद्यालयों का लक्ष्य केवल संगीत प्रचार ही नहीं अपितु एक अच्छे गायक–चिंतक, विद्वान्–शिक्षक का निर्माण भी होना चाहिए।[2]

शैक्षिक तकनीकी में अद्यतन विकास :– भारतीय संगीत प्रणाली एक महत्वपूर्ण एवं प्रभावी पद्धति है जो अनेक परिर्वतनों के बावजूद भी

1. श्री रामचन्द्र अग्निहोत्री, भातखण्डे स्मृति ग्रन्थ, पृ.सं.–318
2. डॉ. अलकनन्दा पालनीटकर, शास्त्री संगीत शिक्षा, पृ.सं.–16,171

गुरू–शिष्य परम्परा के चलते आज एक सशक्त रूप में विद्यमान है। आज के बदलते परिप्रेक्ष्य में संगीत को जन–जन तक पहुंचाने में दो महान् विभूतियों पं. विष्णुनारायण भातखण्डे और पं. दिगम्बर पलुस्कर जी का योगदान अविस्मरणीय है। इन्होंने संगीत शिक्षण संस्थाओं की स्थापना कर संगीत को व्यापक शिक्षा का रूप प्रदान किया है।

आज संगीत ने अपनी एक अलग पहचान बनाई हैं आज की संगीत महफिलों को विभिन्न प्रायोजकों से भी मदद् मिली है। अनेक गुणी विद्यार्थी शास्त्रीय संगीत में आचार्य की उपाधि से विभूषित हो रहे हैं। संगीत विषय में काफी साहित्य भी आज उपलब्ध है।[1] वर्तमान समय में गांधर्व महाविद्यालय वट–वृक्ष की भांति देश–विदेश में फैल चुका है जो परीक्षा, प्रकाशन व त्रैमासिक संगीत शिक्षक सम्मेलन का आयोजन कर संगीत की शिक्षा के स्तर को बढ़ाने के सहायक घटके के रूप में कार्य कर रहा है।[2]

आधुनिक समय में संगीत प्रणाली की तकनीकी में भी विकास हुआ है और इससे संबंधित प्रशासन की नीतियों एवं योजनाओं के निर्माण में मानव–संसाधन–विकास मंत्रालय, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग एवं राष्ट्रीय शैक्षणिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् आदि संस्थाओं की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण रही है।

अन्य महत्वपूर्ण शिक्षण संस्थाओं में आ.टी.सी. की संगीत रिसर्च अकादमी, कलकत्ता', 18 अप्रैल 1979 को मध्यप्रदेश सरकार द्वारा

1. श्री किरण फाटक भास्कर (लेख)–'शास्त्रीय संगीत कल आज और कल', संगीत कला विहार, पृ.सं.–5
2. डॉ. निशा पाठक (लेख), संगीत, पृ.सं.–4

स्थापित 'उस्ताद अलाउद्दीन खाँ संगीत अकादमी'[1], 14 अक्टूबर 1956 को स्थापित 'इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, खैरागढ़'[2], बंबई की नेशनल सेन्टर फॉर दि परफॉर्मिंग आर्ट (1–1–1966)[3] आदि प्रमुख हैं।

संगीत की शिक्षा एक ऐसी शिक्षा हैं जो जन मानस के मानसिक पटल पर अंकित हो जाती है और साथ ही कई रोगों के समाधान में भी सहायक हैं। जैसे–मानसिक असंतुलन, क्रोध, आवेग जैसे मनोरोगों का शमन संगीत की मधुर स्वर लहरियों द्वारा तो होता ही है साथ ही माइग्रेन, सिरदर्द, उच्च रक्तचाप, अनिद्रा जैसे रोगों से भी सहज छुट्कारा पाया का सकता है।[4]

भारत की युवा पीढ़ी को भारतीय संगीत कला से अवगत कराने के उद्देश्य से 1977 में 'स्पिक मैके' नामक संस्था का गठन किया गया। 'संकल्प' नामक संस्थाएं न केवल कलाकार को मंच प्रदान करती हैं बल्कि उन्हें कई पदवियों से सुशोभित कर प्रोत्साहित भी करती हैं जो वास्तव में शास्त्रीय संगीत के लिए बहुमूल्य योगदान है।[5]

वैंकटया ने इन्हें निम्न शीर्षकों के अन्तर्गत बताया है:–

1. डायल पहुंच (Dial Access) :– इसका तात्पर्य टेलीफोन नेटवर्किंग से हैं। इसकी सहायता से विद्यार्थी ओडियो डिलीवर व्यवस्था एवं अपनी पसंद का निवेदन करते हैं। इससे टेलीफोन करने वाले को संगीत शिक्षा से संबंधित ओडियो कैसेट्स कार्यक्रम की सुविधा मिल जाती हैं।

---

1. संगीत पत्रिका, पृ.सं.–54, 1992
2. अमरेशचन्द्र चौबे, संगीत की संस्थागत शिक्षण प्रणाली, पृ.सं.–52
3. डॉ. हुकुमचन्द, आधुनिक काल में शास्त्रीय संगीत, पृ.सं.–90
4. संगीत पत्रिका, पृ.सं.–41,42, 2001
5. डॉ. हुकुमचन्द, आधुनिक काल में शास्त्रीय संगीत, पृ.सं.–128

2. शैक्षणिक टेलीविजन (ETV) :– भारत में शैक्षणिक टेलीविजन शिक्षा की लोकप्रिय प्रणाली हैं। इसके माध्यम से हम कई स्तरों पर विशिष्ट टेलीविजन कार्यक्रमों के सम्पर्क में आते हैं। जैसे **UGC** (विश्वविद्यालय अनुदान आयोग), **IGNOU** (इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय) द्वारा दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम आदि से संबंधित शैक्षिक टेलीविजन कार्यक्रमों के माध्यम से हम सांगीतिक शिक्षा ग्रहण करने में भी काफी हद तक सफल हो सकते हैं।

3. विडियो (Video) :– इसके अन्तर्गत संगीत विषय से संबंधित छात्र अपनी आवश्यकता एवं सुविधायुक्त विडियो कैसेटों का प्रयोग कर सकता है और साथ ही किसी महान् संगीतज्ञ की आवाज़ को विडियो कैसेट्स रिकॉर्डरों पर रिकॉर्ड कर उसे सुरक्षित रख उसका अनुकरण कर संगीत की शिक्षा ग्रहण कर सकता है।

4. इन्टरएक्टिव विडियो (Interactive Video) :– इस विडियो के माध्यम से हम दूर बैठे हमारे शिक्षक के प्रश्नों के उत्तर पूछ सकते हैं और अन्तः क्रिया कर सकते हैं।

5. विडियोटेक्स्ट (Videotext) :– विद्यार्थी इसके माध्यम से भी प्रश्न पूछ सकता है। उदाहरणस्वरूप एक दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से संगीत का विद्यार्थी खुले विश्वविद्यालय द्वारा प्रस्तुत पाठ्यक्रम, काउन्सलिंग समय, परिक्षायें आदि के बारे में अगर कुछ जानना चाहता हैं तो उसे इस तरह की सूचनायें विडियोटेक्स्ट के माध्यम से प्राप्त हो सकती हैं।

6. टेलिकॉन्फ्रेन्सिंग (Teleconferencing) :– टेलिकॉन्फ्रेसिंग के माध्यम से दूरस्थ एज्यूकेशनल टेलीविजन कार्यक्रम देख कर टेलिफोन के माध्यम से जो कलाकार अपना कार्यक्रम प्रस्तुत कर रहे होते हैं उनसे प्रश्न पूछ सकता हैं या अन्य किसी संगीत संबंधी जानकारी प्राप्त कर सकता है तथा वो कलाकार टेलीविजन पटल के माध्यम से उसका उत्तर दे सकता हैं। इसे एकतरफा विडियों और दोतरफा ओडियों टेलिकॉन्फ्रेसिंग कहते हैं।

7. ई–मेल (E-mail) :– ई–मेल की सहायता से संगीत से संबंधित शिक्षक, विद्यार्थी, शोधकर्ता आदि अपनी सूचनाएं तीव्रता से भेज सकते हैं और प्राप्त भी कर सकते हैं।

8. कम्प्यूटर (Computer) :– इस युग की यह उत्तम एवं उन्नत तकनीक हैं जो जीवन के हर क्षेत्र में उन्नत सिद्ध हो रही है। कम्प्यूटर की सहायता से एक संगीत शिक्षार्थी अपनी या किसी अन्य कलाकार की रचना (कोई भी बंदिश या गीत, भजन आदि) को संग्रहित तथा लंबे समय के लिए सुरक्षित रख सकता है।

9. कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence) :– इसके द्वारा विद्यार्थी अपनी किसी भी समस्या का समाधान खोज सकता हैं। इन समस्याओं के समाधानों को खोजने में कम्प्यूटर की सहायता ली जाती है तथा विभिन्न सांतीतिक क्षेत्रों की व्यापक जानकारी का पता लगातार समस्याओं का समाधान किया जा सकता हैं।

10. कम्प्यूटर सहायतित अनुदेशन (CAI) :– कम्प्यूटर सहायतित अनुदेशन के माध्यम से शिक्षार्थी अपनी सुविधा के अनुसार संगीत विषय से संबंधित सामग्री प्राप्त कर सकता हैं, उसका चयन कर सकता है और मूल्यांकन भी कर सकता है। दूरस्थ शिक्षा के संदर्भ में कम्प्यूटर सहायतित अनुदेशन ने एक शिक्षक का स्थान ले लिया हैं।

11. स्थानीय क्षेत्र नेटवर्क (Local Network):- माइक्रो कम्प्यूटर पर काम करने वाले छात्र एवं शिक्षक स्थानीय क्षेत्र नेटवर्क के माध्यम द्वारा एक दूसरे से सम्पर्क रखते हैं और अपना रिकॉर्ड रख सकते हैं। किसी भी प्रकार की जानकारी जिसकी आवश्यकता हो प्राप्त कर सकते हैं।

12. सी–डी रोम (C.D. Rom)- (Compact Disk Read Only Memory) :– सी.डी. रोम अपने में 10 वर्षो के विभिन्न पत्रिकाओं के पिछले अंकों को संग्रहित कर सकता हैं। इस सी.डी. रोम को विडियो तकनीक से भी जोड़ा जा सकता हैं।

13. डिजीटल विडियो अन्तःक्रिया (Digital Video Interaction):– डिजीटल विडियो अन्तःक्रिया के माध्यम से बहु–आयामी, ओडियो–विडियो प्रस्तुतीकरण को प्रस्तुत किया जा सकता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि विभिन्न शैक्षिक तकनीकों ने अध्ययन के सभी क्षेत्रों में विद्यार्थियों की आवश्यकताओं एवं आकांक्षाओं को पूरा करने में मदद् की हैं और साथ ही अपने क्षेत्र का विस्तार किया हैं।(1–13)[1]

1. वैंकटैहिया, एन एजुकेशनल टेक्नोलॉजी, 1996

विभिन्न शैक्षिक तकनीकों का दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में भी काफी सहयोग है जिसके माध्यम से सांगीतिक शिक्षा भी ग्रहण की जा रही है।

दूरस्थ शिक्षा प्रणालीः– दूरस्थ शिक्षा पद्धति वह पद्धति हैं जिसमें विद्यार्थी दूर बैठे अपने शिक्षक से शिक्षा ग्रहण करता है। ऐसी शिक्षा जिसमें जन–साधारण विश्वस्तरीय घटनाओं से तीव्र गति से अवगत हो जाता हैं। हम दूर बैठे अपने शिक्षक से कम्प्यूटर व अन्य साधनों के माध्यम से न केवल बात कर सकते हैं बल्कि सूचनाओं का आदान प्रदान भी कर सकते हैं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में संचार प्रौद्योगिकी का सर्वोत्तम उपयोग हुआ है।

संगीत भी इस वैज्ञानिक पद्धति से अछूता नहीं है। दूरस्थ शिक्षा भी संगीत के क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाती जा रही हैं। प्रो0 आर0 सी0 मेहता ने 82 वर्ष की उम्र में अपनी पुस्तक "Doyen of Indian Musicology" में लिखा हैं कि 10000 से ही अधिक विषय इस शिक्षा (दूरस्थ) के माध्यम से पढ़ाने जा चुके हैं और यदि शीघ्र ही भारतीय संगीत को इस शिक्षा द्वारा ग्रहण नहीं किया गया तो हमारे लिए घातक होगा क्योंकि हम पहले ही इसमें विलम्ब कर चुकें। इसलिए वह समय अब आ गया हैं कि जब भारतीय इस कथन की सत्यता को जान ले कि "Music is for everyone and everyone is for Music."[1]

दूरस्थ शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो तब निर्देश या शिक्षा प्रदान करती है जब विद्यार्थी और शिक्षक शारीरिक रूप से तो दूर होते हैं किन्तु मानसिक विचारधारा बनी रहती है। इस शिक्षा प्रणाली में विद्यार्थी अपने

1. प्रो. आर.सी. मेहता, डॉयन ऑफ म्यूज़िकोलॉजी (सेमिनार, 29 नवम्बर 2000, भोपाल)

शिक्षक से सीना–ब–सीना बैठकर शिक्षा तो नहीं ले सकता परन्तु वह सूचना प्रौद्योगिकी के उपकरण के माध्यम से दूर बैठे अपने गुरू से बात भी कर सकता है और उसे देख भी सकता है।

दूरस्थ शिक्षा (Distance Education) शिक्षा की वह प्रणाली हैं जिसमें शिक्षक और शिक्षु को स्थान–विशेष अथवा समय–विशेष पर मौजूद होने की आवश्यकता नहीं होती।

यह प्रणाली अध्यापन और विशेष तौर तरीके तथा समय निर्धारण के साथ–साथ गुणवत्ता संबंधी अपेक्षाओं के संबंध में भी बड़ी उदार है।[1] यह प्रणाली सतत् शिक्षा तथा मौलिक रूप से वंचित क्षेत्रों में रहने वाले शिक्षकों के प्रति गुणवत्तामूलक शिक्षा के प्रति अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

संगीत के क्षेत्र में भी नई–नई तकनीकियों की सहायता से दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से संगीत की बारीकियों को समझा जा सकता है। जिन्हें हम और विस्तारित रूप में प्रस्तुत करेंगे।

□□□□□

1. दूरस्थ शिक्षा–विकिपीडिया मुक्तकोष

तृतीय अध्याय

"दूरस्थ शिक्षा प्रणाली"

तृतीय अध्याय

"दूरस्थ शिक्षा प्रणाली"

दूरस्थ शिक्षा प्रणाली ने समाज के दूर दराज क्षेत्रों में रहने वाले वर्गों तक पहुंचाने में बहुत सहायता की है। भारत देश अब सभी सूचना तकनीकियों में विजय पा चुका है। संगीत के सभी संगीतज्ञों एवं जानकारों को भी ये समझ लेना चाहिए कि दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के माध्यम से संगीत को आसानी से सीखा जा सकता है।

संगीत इतना समृद्ध है कि कोई भी इसे सुलभता से प्राप्त कर सकता है और दूरस्थ शिक्षा प्रणाली का तो हमें खुले दिल से स्वागत करना चाहिए और स्वीकार करना चाहिए। इस प्रणाली के द्वारा हमें एक नई पहचान मिली है। दूर–दराज क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को संगीत की शिक्षा इस प्रणाली के माध्यम से आसानी से प्राप्त हो सकती है। इस प्रणाली ने बढ़ती हुई दूरी को कम किया है।

संगीत का अनुपात 1:1 है। यह अपने आप में एक बहुत बड़ी बात हैं कि इसमें कोई भी व्यक्ति किसी को भी धोखा नहीं दे सकता। न स्वयं को और न ही किसी और को। हमारा शास्त्रीय संगीत हजारों वर्ष पुराना है और शास्त्रीय संगीत सिखाने के प्रति हमने एक उत्साह देखा है। शास्त्रीय संगीत शिक्षा ने अपनी छवि को बरकरार रखा है।

दूरस्थ शिक्षा प्रणाली क्या है ? इस प्रणाली का कोई एक अर्थ नहीं है बल्कि ये भिन्न–भिन्न नामों के द्वारा भी जानी जाती हैं जैसेः– Correspondence education (पत्राचार शिक्षा), Home study, Independent study, External study, Off campus study, Open learning, Open education आदि।

दूरस्थ शिक्षा प्रणाली एक ऐसी प्रणाली है यूं कहे कि एक ऐसी सीखने और सिखाने की प्रक्रिया है जो कि शिक्षा की पारम्परिक प्रणाली से बहुत प्रभावशाली है। यह वास्तव में एक ऐसी पद्धति है जो उन विद्यार्थियों को शैक्षिक अवसर पर उपलब्ध करवाती है जो किन्हीं कारणों से परम्परागत तरीके (सीना–ब–सीना) से शिक्षा ग्रहण नहीं कर पाते।

प्राचीन काल की कथानुसार एकलण्य नामक एक शिष्य अपने गुरू द्रोणाचार्य जिसे हम सभी जानते हैं, से धनुष विद्या सीखना चाहता था, किन्तु द्रोणाचार्य जी ने उसे अपना शिष्य बनाने से मना कर दिया था क्योंकि न तो वो ब्राह्मण था और ना ही क्षत्रिय किन्तु एकलव्य अपने गुरू के प्रति पूरी तरह समर्पित था। उसने अपने गुरू द्रोणाचार्य की छवि के अन्दर एक आकृति बनाई और अपनी धनुष विद्या को सीखना अथवा अभ्यास करना आरम्भ किया और इसी क्रम में उसकी धनुष कला को देख उस समय के सभी लोग आश्चर्य चकित रह गए।

अतः प्रमुख बात यह है कि वर्तमान समय में किसी भी विद्या को सीखने वाला इच्छुक विद्यार्थी न तो किसी कारणवश अनदेखा किया जा

सकता है और न ही ऐसा किया जाना चाहिए।[1]

आज इस प्रजातांत्रिक युग में न तो एकलव्य जैसे शिष्यों को अनदेखा किया जा सकता है और न ही द्रोणाचार्य जैसे शिक्षक ना कह सकते हैं।[2]

अतः दूरस्थ शिक्षा ने इस प्रकार की समस्या को दूर कर दिया है और किसी भी विद्या या शिक्षा को सीखना आसान कर दिया है। विभिन्न प्रकार की संचार तकनीकियों ने इसे और सुलभ बना दिया है। कहा गया है कि वो समय था जब विद्यार्थी सीखना चाहता था तो उसे अरस्तू के पास जाना पड़ता था। आज हमारे पास वो सभी माध्यम है जो अरस्तू को विद्यार्थी के पास ले जाते हैं।

अतः दूरस्थ शिक्षा प्रणाली उन सभी उपलब्ध मीडिया और तकनीकियों का उपयोग करती है जिनके द्वारा शैक्षिक विस्तार किया जा सके।[3]

दूरस्थ शिक्षा प्रणाली नियमित कक्षाओं से बिल्कुल अलग होती है क्योंकि इसके द्वारा हम कक्षा में बिना उपस्थित हुए वह सब जानकारियां पा सकते हैं जो नियमित कक्षाओं में होती है। अतः इस प्रणाली के द्वारा हम कभीं भी रहें चाहे घर या बाहर हम अपने दम पर, आत्मविश्वास पर आवश्यकतानुसार अपनी शिक्षा कभी भी, कहीं भी प्राप्त कर सकते हैं, उसे पूरा कर सकते हैं।

---

1. www.mu.ac.in/myweb-test/ma edu/M.A. Edu. O.D.L. Pdf

2. वही

3. वही

किसी भी वांछित पाठ्यक्रम के लिए हमें केवल नामांकन करना होता है चाहे वो कोई और विषय हो या डिग्री हो या डिप्लोमा हो या फिर संगीत की शिक्षा।[1]

भारत अब सभी सूचना तकनीकियों में तो विजय पा चुका है अब वक्त आ गया है कि संगीत के संगीतज्ञ ये समझ लें कि संगीत को दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के माध्यम से सीखा जा सकता है।

दूरस्थ शिक्षा प्रणाली सीखने की प्रक्रिया को और सुलभ बनाती है और विद्यार्थियों को यह सुविधा प्रदान करती हैं कि वो कहीं भी और कभी भी शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं।

"The Distance education make the learning process more easier and allow student to learn where they are not physically 'On site'"[2]

यह शिक्षा की वो प्रणाली है जो शिक्षार्थी को उस समय शिक्षा प्रदान करवाती है जब शिक्षार्थी व उनके शिक्षक एक ही जगह पर एक ही समय पर उपस्थित नहीं रहते।[3]

आज से 6 वर्ष पहले तक दूरस्थ शिक्षा प्रणाली प्रिंट मेटेरियल और पत्राचार के माध्यम से प्रदान की जाती थी किन्तु आधुनिक समय में विभिन्न प्रकार की सामग्री व उत्पाद जैसे वीडियो कॉनफ्रेंसिंग, प्रस्तुतिकरण

---

1. एथाबास्का यूनिवर्सिटी (कनाडा) (रिकॉग्नाइज़्ड)
   www.athabascau.ca/about au/distance education php
2. **www.slideshare.net/mobile/uo**
3. **www.alaasadik.net**

का समय आदि के द्वारा प्रदान की जाती है।[1]

दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में विषय वस्तु को तकनीकियों के माध्यम से जैसे इंटरनेट या प्री–रिकॉर्डड प्रोग्राम के द्वारा प्रस्तुत किया जाता है विद्यार्थी और शिक्षक एक दूसरे से ऑनलाईन और अन्य कई तकनीकियों की सहायता से सम्पर्क स्थापित करते हैं।[2]

दूरस्थ शिक्षा प्रणाली शिक्षा का वह क्षेत्र है जो पेडालॉजी, टेक्नोलॉजी पर केन्द्रित होता है एवं सूचना तकनीकी इस प्रकार से बनाई जाती है जिसका उद्देश्य विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करना होता है जब वा शारीरिक साइट पर "On site" न हो।[3]

"Distance education is a mode of delivering education and instruction often on an individual basis, to students who are not physically present in a traditional setting such as a classroom."[4]

"Distance education is a method of education in which the learner is physically separated from the teacher by space and time."[5]

(Rumble 1989)

---

1. www.alaasadik.net
2. www.slideshare.net (Fikri Gunes, 1807130)
3. www.slideshare.net (Report by Annabele E. Day. Roxas)
4. www.slideshare.net (Ikaf Tuocea-Assesment Presentation)
5. www.slideshare.net (Murtadha Alazmi, Suliman Alsubihi, Hussain Alazmi,6869)

इस प्रकार दूरस्थ शिक्षा प्रणाली को हम पत्राचार शिक्षा नियमित, शिक्षा, गृह अध्ययन, आत्मनिर्भर अध्ययन, मुक्त शिक्षा, लचीली शिक्षा आदि नामों से परिभाषित कर सकते हैं।

अतः हम कह सकते हैं कि दूरस्थ शिक्षा प्रणाली को कई नामों में परिभाषित किया जा सकता है।

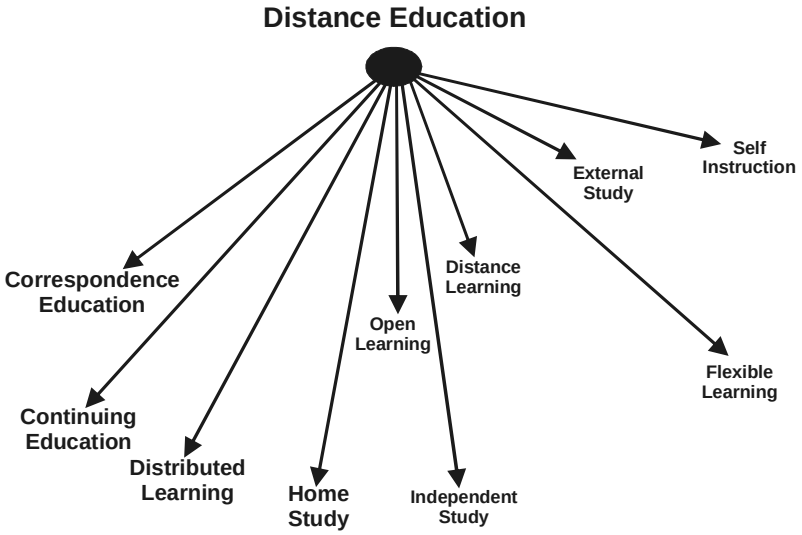

सूचना की विधियों का वह समूह जिसमें शिक्षा प्रदान करने की प्रक्रिया शिक्षा ग्रहण करने की प्रक्रिया से भिन्न होती है। इसलिए शिक्षक व विद्यार्थी के मध्य सम्पर्क प्रिंट, इलेक्ट्रोनिक्स एवं अन्य तकनीकियों के द्वारा स्थापित किया जाता है।[1]

दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में दो प्रकार की तकनीकियों को प्रयोग में लिया जाता है।

1. Synchronous (संयोजित)
2. Asynchronous (असंयोजित)

1. www.slideshare.net (Moore & Krisley, 1996)

संयोजित टेक्नोलॉजी ऑनलाईन शिक्षा की वो तकनीकी जिसमें सभी प्रतिभागियों को एक ही समय पर उपस्थित रहना होता है इसमें एक व्यवस्थित टाइम– टेबल की आवश्यकता होती है।

असंयोजित टेक्नोलॉजी ऑनलाईन शिक्षा की वो तकनीकी है जिसमें प्रतिभागी विद्यार्थी अपने समयानुसार विषय सामग्री का चयन करता है। विद्यार्थियों को एक साथ एक ही समय पर एकत्रित होने की आवश्यकता नहीं है।

1. **संयोजित तकनीकियाँ**:–टेलीफोन, विडियो कॉन्फ्रेसिंग, वेबकॉन्फ्रेसिंग, ओडियो कॉन्फ्रेसिंग, इंटरनेट चेट आदि।

2. **असंयोजित तकनीकियाँ**:– ओडियो कैसेट्स, ई–मेल, मेसेज मोड फोरम्स, प्रिंट मेटेरियल, वोइस
मेल/फैक्स,विडियो कैसेट्स आदि।

लगभग 90 ऑपन यूनिवर्सिटीस पूरे विश्व में स्थापित है जिनमें 15 भारत में ही हैं। पहला खुला विश्वविद्यालय भारत में सन् 1982 में प्रारम्भ हुआ था और भारत में नेशनल ऑपन यूनिवर्सिटी की स्थापना सन् 1985 में की गई।[1]

दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के साहित्यिक परिप्रेक्ष्य को अगर देखें तो पता चलता है कि:–

---

1. www.slideshare.net (IGNOU-STRIDE-PPT on Distance Learning)

1. पहला दूरस्थ शिक्षण विश्वविद्यालय 'यूनिवर्सिटी ऑफ साउथ अफ्रीका' 15 फरवरी 1946, को प्रारम्भ हुआ।[1]
2. 1962 – यूनिवर्सिटी ऑफ दिल्ली।
3. 1964 – कोठारी कमीशन
3. 1975 – पार्था सारथी कमीटी
4. 1978 – सीबीएसई. प्रोजेक्ट ऑपन स्कूल
5. 1982 – Dr. BRAOU
6. 1985 – IGNOU
7. 1989 – NOS (Now NIOS)

पहले DE (दूरस्थ शिक्षा) की टेक्नोलॉजी में पोस्टल सर्विस, ऑडियो टेप्स, रेडियो, पुस्तकें और प्राचीन प्रिंटर्स, शैक्षिक टेलीविजन शामिल थे। आधुनिक DE तकनीकियों में विडियों कॉन्फ्रेसिंग, LMS, मोबाइल लर्निंग, ई–मेल (चेट) शामिल है।

दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के कार्यः– दूरस्थ शिक्षा प्रणाली भविष्य की आवश्यकता है जिसे हम नकार नहीं सकते। यह प्रणाली संगीत कला का विश्लेषण, इतिहास, समीक्षा, संगीत के तत्वों की आमफहम जानकारी आदि के क्षेत्र में कल्पनानीत योगदान दे सकती है। जब तक किसी तकनीक को परखा नहीं जाएगा तब तक उसका उपयोग सशंयपूर्ण बना रहेगा। संगीत के प्रचार–प्रसार के नए आयाम को ढूंढने के लिए दूरस्थ शिक्षा की तकनीकियों की आवश्यकता है।

---

1. www.slideshare.net (IGNOU-STRIDE-PPT on Distance Learning)

1. व्यक्तिगत अध्ययनः– दूरस्थ शिक्षा प्रणाली छात्रों को अथवा शिष्यों को व्यक्तिगत अध्ययन के अवसर प्रदान करती है प्रत्येक छात्र अपनी बात को या अपनी समस्या को ई–मेल (E-mail) या ऑनलाईन के द्वारा अपने ट्यूटर को भेज सकते हैं। इसके द्वारा स्वतंत्ररूप से शिक्षा प्राप्त की जा सकती है।[1]

2. समूहीकृत अध्ययनः– इस प्रकार के अध्ययन में छात्र एक समूह के रूप में शिक्षक द्वारा शिक्षा ग्रहण कर सकते है इस प्रकार के अध्ययन में पाठ्यक्रम में एक छोटी संख्या समूह अध्ययन ही संभव है।

3. विद्यार्थी सहायताः– जिन विद्यार्थी को अपनी रूचि के अनुरूप शिक्षकों से शिक्षा ग्रहण करनी होती है और किन्हीं कारणवश वो उनके पास जाने में सक्षम नहीं हो पाते तो वे ऑनलाईन टीचिंग कक्षाओं के माध यम से शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं।

मान लीजिए कि कोई विद्यार्थी संगीत की शिक्षा ग्रहण करता चाहता है वो स्वयं राजस्थान में रहता है किन्तु उनके गुरू या शिक्षक महाराष्ट्र में रहते हैं तो उनसे उनकी मुलाकात बहुत मुश्किल हो जाती है। उसका कारण है कि आवागमन की समस्या इतनी दूर जाने के लिए पहले ही रिजर्वेशन कराना आवश्यक हो जाता है और यह संभव भी नहीं है कि वो हमें अभी का मिले या 1 5 दिन बाद का, इस स्थिति में दूरस्थ शिक्षा प्रणाली हमें ऐसे अवसर उपलब्ध करवाती है जिसकी सहायता से विद्यार्थी ऑनलाईन टींचिंग के द्वारा अपने गुरू से शिक्षा ग्रहण कर सकता है। और

1. संजय मिश्रा (लेख) 'ओपन डिस्टेन्स एण्ड इ–लर्निंग इन इण्डिया', 22, सितम्बर 2013 (इंटरनेट पर)

बिना किसी आने जाने की असुविधा से नियमित रूप से शिक्षा प्राप्त कर सकता है।[1]

4. पहुंचः– हम कहीं भी रहें चाहें देश में या विदेश में तब भी मीलों की दूरी के बावजूद भी अपनी शिक्षा को प्राप्त करने में नहीं चूक सकते। दूरस्थ शिक्षा हमें ऐसे अवसर प्रदान करती है।[2]

जैसा कि एथाबास्का विश्वविद्यालय (Athabasca University) जो कि कनाड़ा में स्थित है और दूरस्थ शिक्षा प्रदान करती है और वर्तमान में ऐसा कर रही है।

एथाबास्का विश्वविद्यालय (AU) विद्यार्थियों को एक व्यापक नेटवर्क उपलब्ध कराता है साथ ही शैक्षिक सलाहकार, परामर्शदाता, ट्यूटर्स, डेस्क कर्मी, अन्य सहयोगी स्टाफ को विद्यार्थियों के लिए उपलब्ध करवाता है और जो ऑनलाईन सदैव उपलब्ध रहते हैं। विद्यार्थी जब चाहे तब उनसे सम्पर्क कर सकते है और संबंधित जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।[3]

5. लाभः– दूरस्थ शिक्षा प्रणाली विद्यार्थियों को नियंत्रित कर लाभ प्रदान कराती है। अब छात्रों का अपनी इच्छाओं, आवश्यकताओं या अपने कैरियर को त्यागने की आवश्यकता नहीं, वो अपने अपने के साथ रहकर भी वो सब शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं जिन्हें पाने की कल्पना करने मात्र से ही उन्हें भय का अनुभव होने लगता था। अतः दूरस्थ शिक्षा, लाभ के वो

---

1. चर्चा, डॉ. विकास भारद्वाज, कोटा (राज.), दिनांक 17–3–2013, प्रातः 11 बजे
2. वही
3. **www.athabasca.ca/about au/distance education php, updated July, 2012**

सभी अवसर प्रदान कराती है जिनकी एक जागरूक विद्यार्थी को आवश्यता होती है।

6. लचीलापनः– दूरस्थ शिक्षा प्रणाली स्वयं लचीली होती हुई भी छात्रों को लचीलापन प्रदान करती है। इसमें अपना नामांकन करने के लिए किसी भी जगह पर जाने की जरूरत नहीं है। विद्यार्थी किसी कक्ष में या हवाई अड्डे पर अथवा किसी भी कार्यस्थल पर बैठकर ऑनलाईन द्वारा पंजीकरण करवा सकते हैं। वर्ष के किसी भी समय पर कोई भी पाठ्यक्रम शुरू किया जा सकता है यह प्रणाली लचीलापन प्रदान करती है।

7. सामर्थ्य/क्षमताः– इस प्रणाली का यह भी कार्य है कि यह छात्र या विद्यार्थी की क्षमता, समय के अनुकूल ही शिक्षा प्रदान करती है। अतः इस प्रणाली में छात्र किसी भी पाठ्यक्रम की फीस जमा कराने से लेकर पुस्तकों एवं अन्य शिक्षण सामग्री को एक ही स्थान पर बैठे हुए प्राप्त कर सकते हैं।[1]

8. समय की बचतः– यह प्रणाली समय की बचत कराती है। जो समय आने–जाने में, व्यर्थ की चिंताओं में अनायास ही व्यतीत हो जाता है जैसेः– किसी छात्रा के लिए यह चिंता का विषय हो जाता है जब उसे किसी शिक्षक या गुरू के पास जाना है और वो कई मीलों दूर रहता है तो उनके पास जाने की इस जरूरत को पूरा करने में असमर्थ रहती है। क्यूंकि उसे अपने परिवार माता पिता सभी की चिंताओं का ज्ञान है किन्तु दूरस्थ शिक्षा द्वारा न केवल उसे चिंताओं की मुक्ति मिलती है अपितु समय की भी बचत होती है।[2]

---

1. www.athabasca.ca/about au/distance education php, updated July, 2012

2. चर्चा, डॉ. विकास भारद्वाज, कोटा (राज.), दिनांक 17–3–2013, प्रातः 11 बजे

9. व्यवसाय के रूप में:– दूरस्थ शिक्षा प्रणाली न केवल शिक्षा को सबके समक्ष पहुंचाती है बल्कि विद्यार्थियों के लिए व्यवसाय के अवसर भी उपलब्ध करवाती है। इस प्रणाली के माध्यम से एक शिक्षित व्यक्ति दूर बैठे अपने विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करने के साथ–साथ उचित पारिश्रमिक भी प्राप्त कर सकता है।

इस प्रकार हम यह कह सकते हैं कि दूरस्थ शिक्षा प्रणाली हमें वो सब शैक्षिक लक्ष्य उपलब्ध कराती है जिनकी सजग छात्रों को आवश्यकता होती है। इस संसार में कई ऐसे लोग है जो पूरी तरह से समर्पित होने के बावजूद भी किन्हीं परिस्थितियों वश (जैसे दूरी, धन, समय) शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाते उन्हें यह प्रणाली उचित मार्ग प्रशस्त करती है।

ई–लर्निंग के लिये अन्य पदों का जैसे:– ऑनलाईन लर्निंग, वरचुअल लर्निंग, वेब वेस्ट लर्निंग का प्रयोग किया जाता है। ई–लर्निंग में ई शब्द इलेक्ट्रोनिक को संबोधित करता है। इसमें व्यक्तियों एवं समूहों द्वारा की जाने वाली शैक्षिक गतिविधियों को समावेशित किया जाता है। जो ऑन लाईन या ऑफ लाईन एक समय में अथवा अन्य इलेक्ट्रोनिक्स माध्यमों द्वारा संपादित की जाती है।

एडीसन के अविष्कार के कई दशकों के उपरान्त मार्शल मैक्लुहानु (Marshall Mcluhan 1964) ने कहा था "Medium is the Message" अर्थात् माध्यम ही संदेश है। मार्शल का अभिप्राय था कि प्रत्येक माध्यम अपनी विशेषताओं व योग्यताओं के द्वारा हमारी योग्यताओं

को आकार दिशा एवं वृद्धि करने की क्षमता प्रदान करते हैं।[1]

अतः माध्यम चित्रों, ध्वनियों एवं जीवन्तता के सही प्रयोग से विद्यार्थियों को अभिप्रेरित करते हैं।

दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के माध्यमः– जैसा कि नाम से विदित होता है कि दूरस्थ शिक्षा अर्थात् दूर रहकर ग्रहण और प्रदान की जाने वाली शिक्षा। जब हम हमारे शिक्षक या गुरू से दूर रहकर शिक्षा ग्रहण करना चाहेंगे तो निश्चित रूप से किन्हीं माध्यमों की आवश्यकता होगी। इन्हें ही दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के माध्यम कहा गया है।

यह हमें पता चल ही चुका है कि दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के लिए विभिन्न तकनीकियां और मीडिया उपलब्ध है। विभिन्न प्रकार की मीडिया के उपयोग द्वारा कई प्रकार की सूचनाएं इस प्रकार की प्रणाली में प्राप्त की जा सकती है। प्रत्येक माध्यम और प्रत्येक तकनीकी की अपनी एक ताकत होती है और अपनी एक कमजोरी भी। कई कारक इन मीडिया तकनीकियों को नियंत्रित करते हैं। इस शिक्षा प्रणाली में माध्यमों का उपयोग करना अधिक महत्वपूर्ण है, वनस्पत् तकनीकियों का चयन करने से।

दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के विद्यार्थियों के लिए WWW. (World wide websites) ने ऐसे कई स्त्रोत उपलब्ध करवाएं हैं जिनके माध्यम से किसी भी जानकारी को भली भांति समझा जा सकता है।

---

1. डॉ. रीता अरोड़ा, शैक्षिक तकनीकीः वर्धमान महावीर खुला वि.वि., कोटा, जनवरी 2008

1. प्रिंट माध्यम अथवा मुद्रण पर आधारित माध्यमः– दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में प्रिंट मीडिया सबसे प्रमुख माध्यम है। प्रिंट के प्रकारों में पुस्तकें मेनुअलस पाठ्यक्रम नोट्स और स्टडी गाइड्स है। प्रिंट का प्रयोग प्रायः सभी दूरस्थ शैक्षिक पाठ्यक्रमों के लिए किया जाता है।[1]

भारत तथा दूसरे देशों में दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में लगभग 20 माध्यमों का उपयोग किया जा रहा है। यह माध्यम अधिक लोकप्रिय इसलिए है क्योंकि इसके अन्तर्गत पाठ्यपुस्तकें, निर्देश पुस्तिकाऐं, शत्राचार पाठ एवं अन्य सामग्री सम्मिलित है।

I पाठ्यपुस्तकेंः– पाठ्यपुस्तकों से हम सब भली भांति पाठ्य पुस्तकें विषय वस्तु केन्द्रित होती है। शिक्षार्थी को स्वयं की प्रगति के बारे में फीड बेक प्राप्त करने हेतु विशेष प्रयास नहीं किये जाते। इसमें पाठ्यक्रम से संबंधित समस्त अधिगत बिन्दु एक साथ मुद्रित पाठ्यपुस्तकों में आ जाते हैं। एक शिक्षार्थी पाठ्यपुस्तक का उपयोग कक्षा में कालांश में, कालांश से पूर्व अथवा बाद में तथा विद्यालय समय के अतिरिक्त समय में भी कर सकता है।

II निर्देश पुस्तिका (Manuals) एवं मार्गदर्शनः– निर्देश पुस्तिका अध्यापकों के प्रतिस्थापक के रूप में काम करती है क्योंकि इनमें प्रत्येक पाठ के बारे में जानकारी होती है। इनमें चित्र, अभ्यास तथा निर्देश भी दिए हुए होते हैं चूंकि दूरस्थ शिक्षा में शिक्षार्थी शिक्षक से दूर रहते हैं, तो ये निर्देश पुस्तिकाऐं मार्गदर्शन के रूप में विद्यार्थी की सहायता करती है।[2]

1. डॉ. रीता अरोड़ा, शैक्षिक तकनीकीः वर्धमान महावीर खुला वि.वि., कोटा, पृ.सं.–336
2. डॉ. रीता अरोड़ा, शैक्षिक तकनीकीः वर्धमान महावीर खुला वि.वि., कोटा, पृ.सं.–338,339

III पत्राचार पाठ (Corsepondence lesson):– चूंकि कई बार विद्यार्थी शिक्षक से दूर रहता है तो शिक्षक छोटे–छोटे मॉड्यूल्स बनाकर जिनमें आवश्यक तथ्यों की जानकारी होती है। विद्यार्थी को उपलब्ध कराता है ताकि उसका लाभ विद्यार्थी को प्राप्त हो सके।[1]

संगीत के क्षेत्र में कई प्रकार की पत्र–पत्रिकाऐं जैसे कला समय, संगीत कला विहार, छायानट, संगीत मासिक आदि प्रचलित है। जिनसे विद्यार्थिर्यो को बहुत सहायता मिलती है। अपने विषय को समझने की।

2. श्रव्य –दृश्य आधारित माध्यम (Audio-Visual-Media):– इस माध्यम के अन्तर्गत शैक्षिक आकाशवाणी, शैक्षिक दूरदर्शन, टेलिफोन, रेडियो वीजन, ऑडियो कैसेट्स, विडियों कैसेट्स, शैक्षिक विडियों अनुदेशन आदि आते हैं।

I शैक्षिक आकाशवाणी:– दूरस्थ शिक्षा के माध्यम के रूप में आकाशवाणी एक अच्छा एवं उपयोगी माध्यम है। सूचनाओं के प्रसारण, विद्यार्थियों में कल्पना शक्ति का विकास, शिक्षार्थिर्यो में कुछ रहस्यों के बारे में जिज्ञासा पैदा करना आदि में इसका महत्वपूर्ण स्थान है रेडियो और टेलिवीजन का उपयोग शैक्षिक उपयोग के लिए बहुत वर्षो से किया जा रहा है।[2]

II रेडियो वीजन:– इस माध्यम में श्रव्य के साथ दृश्य साधनों का भी उपयोग किया जाता है। संगीत के विद्यार्थियों के लिए यह बहुत ही

1. डॉ. रीता अरोड़ा, शैक्षिक तकनीकी: वर्धमान महावीर खुला वि.वि.,कोटा, पृ.सं.–338,339
2. मूरे, 85

अच्छा माध्यम है। इसमें कभी–कभी रिकॉर्ड किये हुए आकाशवाणी कार्यक्रम दृश्य सामग्री के साथ में रेडियो वीजन के स्थान पर काम में लिए जाते हैं, जिनसे विद्यार्थियों को काफी सहायता मिलती है।

आकाशवाणी की लोकप्रियता एवं सहज उपलब्धता के कारण इसका उपयोग दूरस्थ शिक्षा में एक प्रभावशाली माध्यम के रूप में होता है।

III दूरदर्शनः– दूरदर्शन के दूरस्थ शिक्षा में एक सशक्त माध्यम माना गया है। साथ ही ये बहुत लोकप्रिय भी है चूंकि इसमें दृश्य एवं श्रव्य दोनों अनुभवों को शक्तिशाली रूप में प्रस्तुत करने की सामथ्यर्ता है।

IV ऑडियो विडियों कैसेट्सः– ऑडियो कैसेट्स आकाशवाणी पाठ प्रसारणों के प्रतिस्थापक के रूप में तथा विडियों कैसेट्स दूरदर्शन पाठ प्रसारणों के प्रतिस्थापक के रूप में माने जाते हैं।

संगीत के विद्यार्थियों के लिए विडियो कैसेट्स एक प्रमुख माध्यम हैं किसी भी सूचना को संग्रहित करने के लिए। भारत तथा विदेशों में लगभग सभी विश्वविद्यालयों में ऑडियों एवं विडियो कैसेट्स का प्रयोग किया जाता है। इन माध्यमों में न केवल आवाज को बल्कि आवाज के साथ–साथ चित्रों को भी संग्रहित किया जा सकता है।

V टेलिकॉनफ्रेसिंग (Teleconferencing):– मूरे और क्रिसले ने टेलिकॉनफ्रेसिंग को इस तरह परिभाषित किया है कि टेलिकॉनफ्रेसिंग एक ऐसा माध्यम हैं जो शिक्षार्थी एवं शिक्षक के मध्य कुछ टेलिकम्युनिकेशन्स टेक्नोलॉजी के द्वारा सूचनाऐं प्रदान करता है।[1]

टेलिकॉनफ्रेसिंग चार प्रकार की होती हैं:–

(अ) ऑडियो

(ब) ऑडियो ग्राफिक्स

(स) वीडियो

(द) कम्प्यूटर[2]

"http://www.distlearn.pp.asu.edu/dlt.info/tele-text.html"

इस साइट के द्वारा यह पता चलता हैं कि दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में टेलिकॉनफ्रेसिंग टेक्लोलॉजी कैसे काम करती है। ऑडियो कॉनफ्रेसिंग, टेलीकॉनफ्रेसिंग की सबसे सामान्य एवं कम खर्चीली प्रणाली है जो कि ऑडियो सैम्पल के साथ प्रस्तुत की जाती है।

"http://www.utexas.edu/ce/cit/de/deprimar/tech.audio.html."[3]

ऑडियोग्राफिक्स टेलिकॉनफ्रेसिंग प्रणाली में कम्प्यूटर का उपयोग किया जाता है।

---

1. मूरे, क्रिस्ले – अध्याय – 5 'टेक्नोलोजी एण्ड मीडिया फोर डिस्टेन्स एडूकेशन (आर्टिकल), एरिजोन स्टेट यूनिवर्सिटी समर–1998'
2. वही
3. वही

(I) एक तरफा विडियो–दो तरफा ऑडियो अंतक्रियाः– इस प्रणाली में विभिन्न क्षेत्रों में रहने वाले विद्यार्थी दूरदर्शन केन्द्र के प्रस्त्रोताओं से अंतक्रिया कर सकते हैं। उपग्रह (Satelite) आधारित सम्प्रेषण (Communication) से विद्यार्थी और प्रस्त्रोता के मध्य दूरभाष सम्प्रेषण सरल होता है। इस प्रक्रिया में एक तरफा विडियों व दो तरफा ऑडियो सम्प्रेषण होता है।

(II) दो तरफा ऑडियो–दो तरफा विडियो अंतक्रियाः– इस प्रकार की कॉनफ्रेंसिंग में विभिन्न केन्द्रो पर विद्यार्थी व शिक्षक एक दूसरे की न केवल आवाज सुन सकते हैं अपितु उन्हें देख भी सकते हैं।

इस प्रणाली के माध्यम से संगीत के कई शिक्षक अपने दूर बैठे शिक्षार्थियों को शिक्षा प्रदान करते हैं और कर रहे हैं। कई कलाकार इस माध्यम से संगीत शिक्षा प्रदान कर रहे हैं।

(III) चित्र दूरभाष टेलीकॉनफ्रेसिंगः– इस प्रणाली में एक तरफा अगतिशील चित्रों के प्रसारण द्वारा समर्पित ध्वनि आधारित अंतक्रिया सम्मिलित है। अगतिशील चित्र, सूक्ष्म तरंगों केवल लाईन एवं अन्य श्रव्य संकेतों द्वारा दूरभाषों के माध्यम से भेजे जाते हैं। इस प्रणाली में दूरभाष तथा उपग्रह का नेटवर्क संप्रेषण होता है जो क्षेत्र विशेष में काम करता है।[1]

(IV) कम्प्यूटर कॉनफ्रेसिंगः– इस प्रणाली में दूरस्थ शिक्षार्थियों की कुछ जिज्ञासाऐं होती हैं जिनके उत्तर केन्द्रिय कम्प्यूटर से प्राप्त किये

1. डॉ. रीता अरोड़ा, शैक्षिक तकनीकी, पृ.सं.– 349 एम.एड.

जाते हैं। चूंकि केन्द्रिय कम्प्यूटर प्रणाली में विभिन्न विषयों के बड़े पैमाने पर आंकड़े सम्मिलित होते हैं। औपचारिक शिक्षण संस्थाऐं, शिक्षा प्रसार केन्द्र एवं विश्वविद्यालयों के क्षेत्रीय अध्ययन केन्द्रों पर सूचना की उन्नत प्रौद्योगिकी द्वारा इस प्रकार की कॉन्फ्रेन्सों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।[1]

(VI) कम्प्यूर एवं इंटरनेटः– कम्प्यूटर, नेटवर्क संदेश शीघ्र भेजने का अत्यंत उपयोगी साधन है। यह कम्प्यूटर तथा शिक्षार्थी, शिक्षक तथा शिक्षार्थी एवं शिक्षार्थी तथा शिक्षार्थी के मध्य अंतक्रिया की सुविधा प्रदान करता है।

इंटरनेट अनेक अलग–अलग कम्प्यूटर्स नेटवर्कस् का एक संयुक्त नेटवर्क है जिसमें प्रत्येक नेटवर्क एक ऐसे माध्यम से जुड़ा होता है, जिसमें वह अन्य नेटवर्क से सूचनाओं का आदान–प्रदान सरलता से कम समय में कर सकता है।

जिन कार्यों की केवल कल्पना ही की जा सकती है वे सभी कार्य आज इंटरनेट के माध्यम से आसानी से सम्पन्न किये जा सकते हैं। विभिन्न आवश्यक सूचनाओं को आसानी से हजारों किलोमीटर दूर इंटरनेट द्वारा भेजा जा सकता है। www (worldwideweb.) द्वारा इंटरनेट पर संग्रहित ज्ञान तक पहुंचा जा सकता है।[2]

---

1. डॉ. रीता अरोड़ा, शैक्षिक तकनीकी, पृ.सं.– 349, एम. एड.
2. डॉ. नीलू शर्मा (लेख), संगीत कला विहार, पृ .सं. –25,26

संगीत के क्षेत्र में इंटरनेटः– वर्तमान युग में सूचना तकनीकी के नये आयाम अर्थात् इंटरनेट द्वारा संगीत कला के सैद्धांतिक एवं क्रियात्मक पक्ष को विश्व के किसी भी स्थान पर आसानी से समझा जा सकता है। संगीत की प्रमुख जानकारियांः– संस्थाऐं, पाठ्यक्रम, कलाकारों संबंधी जानकारी, विडियो, ऑडियो एवं सी.डी. सूची, पुस्तकें, संगीत सम्मेलन, रिकॉर्डिंग स्टुडियो, वाद्य विक्रेता सूची आदि इंटरनेट पर उपलब्ध है। इसके अतिरिक्त विषय संबंधी अन्य जानकरी को भी प्राप्त किया जा सकता है।[1]

संगीत शिक्षा को विश्व व्यापी बनाने के लिए इंटरनेट की प्रमुख सेवाऐं जैसेः– ईमेल, ऑनलाईन चेटिंग, विडियो कॉन्फ्रेसिंग, सजूसेट एवं व्यवसाय हेतु ई–कामर्स का प्रयोग किया जा सकता है।[2]

इस प्रकार कहा जा सकता है कि यदि दूरस्थ शिक्षा में इंटरनेट जैसे केन्द्रों का जाल सा फैला दिया जाए तो संगीत के क्षेत्र में भी जनतंत्र स्थापित किया जा सकता है उस तकनीकी प्रयोग से रसिकता का भी विस्तार होगा और साथ ही संगीत उत्पादन में इसका उपयोग लाभप्रद सिद्ध होगा।

यहां हम ऐसी कई साइट्स (sites) के बारे में बता रहे हैं जो दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के माध्यमों को समझने में बहुत मदद् करती हैः–

- http://www-test.asdl.peachnet.edu/dlearn/dlvideobased.html.

  यह साइट वीडियो आधारित निर्देश देती है।

---

1. डॉ. नीलू शर्मा (लेख), संगीत कला विहार, पृ .सं. –25,26
2. वही

- http://www.uzevakfi.org.tr/tec/html.
  यह साइट टेलीविजन ब्रोडकास्ट जैसेः–
  One-way Asynchronous communication medium
  को प्रस्तुत करती है।

- http://www-distlearn.pp.asu.edu/dlt info/text/dlt info/tele text.html.
  यह साइट टेलीकॉनफ्रेसिंग टेक्नोलॉजी को निर्देशित करती है जैसेः– सेटेलाईट, माइक्रोवेव और इन्स्ट्रकशनल टेलीविजन।

- http://www.utexas.edu/cc/cit/de/deprimar/ techaudio.html.
  यह साइट ऑडियोग्राफिक्स सिस्टम के बारे में निर्देशित करती है।

- http://media.ucsc.edu/videoconf/distedinfo.html.
  यह साइट वीडियो कॉनफ्रेसिंग से संबंधित तथ्यों को प्रदर्शित करती है।

- http://www.cs/uwyo.edu/---rex/virtualu/ sld003.htm.
  यह साइट कम्प्यूटर आधारित निर्देशों को मल्टीमीडिया (CD Rom) और इंटरनेट आधारित जैसे ई–मेल और www में विभाजित करती है।

- http://www.uzevakfi.org.tr/tec.html.
  यह साइट टेक्नीकल परिभाषाओं जैसे (Telnet, E-mail, DVD) को परिभाषित करती है।

- http://www.utexas.edu/cc/cit/de/deprimar/techweb.html.
  यह साइट टेक्नोलॉजी की विशेषताओं और समस्याओं के बारे में बताती है।

- http://elmo.scu.edu.au/sponsored/ausweb/ausweb95/papers/education2alexander/.
  यह साइट तकनीकी विकास और उसके उदगम् को (world wide web) को प्रदर्शित करती है।

- http://www.pit.ktu.1t/HP/coper/kiev.new/cit/apch4/act25.htm.
  यह साइट भी बहुत सूचनाओं के साथ विभिन्न मीडिया और तकनीकियों को जो दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के लिए आवश्यक है परिभाषित करती है।

दूरस्थ शिक्षा प्रणाली का उद्देश्यः– दूरस्थ शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य संगीत के क्षेत्र में संगीत और नृत्य की पारम्परिक परम्परा को प्रचलित कर उसे आगे बढ़ाना है।

नई पद्धतियों और आधुनिक तकनीकियों का उपयोग करते हुए उसे आकर्षक बनाते हुए संगीत की कला को ऊंचाई पर दैदीप्यमान कर स्थापित करना है। इस शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य, उन विद्यार्थियों को जो किसी कारणवश दूर बैठे अनुभवी शिक्षक से शिक्षा ग्रहण नहीं कर पाते हैं, उन्हें उचित अवसर प्रदान करती है।

दूरस्थ शिक्षा प्रणाली संगीत एवं नृत्य की इस परम्परागत शैली को एक नया रूप प्रदान करती है और उसे विस्तारित करने का प्रयास करती है। कलाई काविरि कॉलेज ऑफ फाइन आर्ट्स (तिरूचिरापल्ली) दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से संगीत कला को देश–विदेश में विस्तारित करती है एवं प्रसिद्ध करती है।[1]

दूरस्थ शिक्षा प्रणाली आधुनिक तकनीकियों का उपयोग करती हुई शिक्षा को प्रभावशाली बनाती है तथा संगीत शिक्षा के स्तर को सुधारती है।

'सास्त्र' यूनिवर्सिटी (तमिलनाडू) के अनुसार दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के निम्नलिखित उद्देश्य हैः–

(1) एक असामान्य चैनल (Alternative) प्रदान करना उन्हें जो उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं।

(2) उन विद्यार्थियों को दूसरा अवसर प्रदान कराना जो पहले किसी परिस्थितिवश उच्च शिक्षा ग्रहण नहीं कर पाए।

---

1. www.Kalaikaviri_dep.com/aims and objectives

(3) जो पहले ही किसी सरकारी नौकरी में या रोजगाररत हैं। उन्हें आधुनिक ज्ञान और निपुणता उपलब्ध करवाना।

(4) इस प्रणाली के लचीलेपन को अपनाते हुए सभी जन समुदाय के लिए इसे उपलब्ध करवाना।

(5) इस प्रणाली के उद्देश्य सभी विद्यार्थियों के लिए अपने स्तर पर शिक्षा उपलब्ध कराना, इसमें स्थान, समय अंतराल आदि के स्तर पर लचीलापन है।[1]

यूनिटी यूनिवर्सिटी कॉलेज के अनुसार दूरस्थ शिक्षा प्रणालीः–

(1) उन्हें एक ऐसा अवसर प्रदान करती है जो शिक्षा के अवसर को प्राप्त करना खो चुके हैं, उन्हें फिर से नये आयाम उपलब्ध करवाती है।

(2) सभी नागरिकों को चाहे वो सरकारी नौकरियों में हो या न हो, महिलाऐं चाहे ग्रहिणी हो या न हो और सभी व्यस्कों को उनके क्षेत्र में समान शिक्षा के अवसर उपलब्ध करवाती है। आधुनिक और आने वाले ज्ञान के बारे में आवश्यक जानकारी प्रदान कराती है।

(3) इस प्रणाली के आधार पर शिक्षार्थी बड़ी ही सुगमता से अपने अनुसार विषय का चयन कर सकते हैं, इसमें न तो किसी प्रकार की उम्र का बंधन है और न ही किसी प्रकार की नियमबद्धता। शिक्षार्थी अपनी इच्छानुसार सीखने की विधि, उपर्युक्त शिक्षक चुन

1. www.sastrauniversity.com

सकते हैं जैसेः– किसी भी प्रकार की सामग्री, पुस्तकें, समाचार पत्र, पुस्तिकाऐं, ऑडियो, वीडियो आदि।

(4) इस प्रणाली में शिक्षा का मानक स्तर भी अन्य विश्वविद्यालयों या नियमित विश्वविद्यालयों की भाँति होता है।

(5) दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के द्वारा सभी में देशों में एकता और सदभावना बनी रहे इस बात को महत्व दिया गया है।[1]

(6) जो लोग अपनी कला अथवा हुनर को और बढ़ाना चाहते हैं उन लोगों के लिए यह एक अच्छा एवं उपर्युक्त तरीका है। अपनी नौकरी के साथ–साथ अपने ज्ञान संचय में वृद्धि करना इसका उद्देश्य है।

(7) इस प्रणाली में उन शिक्षार्थियों को जो अपने विषय में शोध कर रहे हैं गहनता से चिंतन और मनन करने का अवसर प्रदान किया जाता है।

(8) इस प्रणाली के द्वारा अपने संचित ज्ञान और अर्जित ज्ञान को नियमित किया जा सकता है।

(9) शिक्षार्थियों के लिए यह प्रणाली कम खर्च में अधिक अवसर प्रदान करती है ताकि अधिक से अधिक विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर सके।[2]

---

1. www.uuc.edu.et/distance/objectives.html

2. वही

शिक्षण की इस विधा को व्यापक रूप से छात्र दर्शकों तक पहुंचाया जा सकता है और उनकी आवश्यकताओं को पूरा किया जा सकता है। दूरस्थ संगीत शिक्षा छात्रों की विभिन्न मांगों को पूरा करने का एक समाधान सिद्ध हो सकता है। इसके आधार पर नई तकनीकियों का प्रयोग करते हुए (जैसे सी.डी. रोम, इलेक्ट्रोनिक्स ग्रन्थों, मल्टीमीडिया) शैक्षिक अभिवृद्धि की जा सकती है।[1]

दूरस्थ संगीत शिक्षा सीखने सिखाने की एक प्रभावी विधि है जो तेजी से बढ़ रही हैं शैक्षिक शोधकर्ताओं ने उन उद्देश्यों और परिस्थितियों को भी खोज निकाला है जिनमें दूरस्थ शिक्षा अत्यधिक महत्व रहती है।[2]

संगीतविदो ने हमेशा गुरू–शिष्य परम्परा का ही संगीत शिक्षा के लिए उपयोगी माना है सस्थागत संगीत शिक्षा प्रणाली को किसी भी तरह से भारतीय संगीत के लिए इतना प्रभावी नहीं माना। किन्तु भाग्यवश कुछ ऐसी संस्थाऐं जैसेः– संगीत रिसर्च एकेडमी, कलकत्ता, ध्रुपद कैन्द्र, भोपाल आदि ने सिद्ध कर दिया है कि संगीत की शिक्षा संस्थाओं के माध्यम से भी बहुत प्रभावी हो सकती है।[3] अतः दूरस्थ शिक्षा को संगीत में अपना स्थान बनाने के लिए प्रभावीशाली रूप से आना पड़ेगा। इसके पहले कुछ प्रमुख क्षेत्रों को ध्यान में रखते हुए पाठ्यक्रम बनाना पड़ेगा जैसेः–

(1) अपने पढ़ाने की विधि के उद्देश्य साफ एवं स्पष्ट बनाने होंगे।

(2) अपने उद्देश्य (पाठ्यक्रम संबंधित) को केन्द्रित करना होगा।

(3) अपने ज्ञान की विधि की स्पष्टता से व्याख्या करनी होगी।

---

1. अन्तर्राष्ट्रीय परिसंवाद संगोष्ठी, भारत भवन, भोपाल 27–29 नवम्बर 2000
2. www.uidaho.edu/evo/dist/o-html>
3. अन्तर्राष्ट्रीय परिसंवाद संगोष्ठी, भारत भवन, भोपाल 27–29 नवम्बर 2000

(4) क्या और कैसे पढ़ाया जा रहा है उस पर समय–समय से ध्यान रखना होगा। वैज्ञानिकों के प्रयोगों के आधार पर यह प्रमाणित हो चुका हैं कि हमारा महान् संगीतिक ज्ञान प्रकृति के बहुत नजदीक है।[1]

Ekaf Tnuocca के अनुसार दूरस्थ शिक्षा प्रणाली की मुख्य विशेषताए हैंः–

1. अत्यधिक लचीलापन
2. समय व धन की बचत
3. कम खर्चीली

समस्यायेंः–

1. सामाजिक सम्पर्क का अभाव
2. सभी शिक्षार्थियों के लिए फोर्मेंट आदर्श नहीं है।
3. कुछ रोजगारत लोग ऑनलाईन डिग्री की नहीं स्वीकारते।

दूरस्थ शिक्षा प्रणाली की विशेषताऐंः–जिन्दगी के हर पहलू में दूरस्थ शिक्षा का प्रभाव दिखाई देने लगा है। कम्प्यूटर और इंटरनेट का प्रभाव जल्द ही और गहराएगा ऐसा मेरा विश्वास है। शिक्षा के क्षेत्र में इसकी उपयोगिता स्पष्ट रूप से सिद्ध हो चुकी है।

---

1. ब्रेनडिट, जोशिन फ्रांस्ट :– नाद ब्रह्मः द वर्ल्ड इज साउण्ड : डेस्टिनी बुक्स रोचेस्टर : 79 :1987

दूरस्थ संगीत शिक्षा भविष्य की आवश्यकता है। इसे हम अस्वीकार नहीं सकते। यह सूचना प्रोद्योगिकी के आधुनिक युग में संगीत जगत के लिए नई संभावना है। इसी संदर्भ में इसकी प्रमुख विशेषताएं हैः–

- ❖ इस प्रणाली के माध्यम से हम भारतीय संगीत को देश के साथ–साथ विश्व के हर कोने तक लोकप्रिय बना सकते हैं।[1]

- ❖ कोटा (राज.) की सुश्री निशि जैन ने कहा कि दूरस्थ संगीत शिक्षा से हम अपने संगीत को विश्वव्यापी बना सकते हैं।[2]

- ❖ इसकी प्रमुख विशेषता यह है कि यह प्रणाली समूची दुनिया को एक कक्षा में बदल देगी।

- ❖ पुस्तकें, रेडियो, कैसेट्स, टेलीविजन, विडियो आदि बहुत पहले से दूरस्थ संगीत शिक्षा में सहायक रहे हैं किन्तु अब उसमें इंटरनेट क्रांति ने एक महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

- ❖ भोपाल के भारत भवन में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय परिसंवाद में पुणे के प्रो. एच.वी.सहस्त्रबुद्धे ने कहा कि दूरस्थ संगीत शिक्षा में सीना–ब–सीना शिक्षा की परम्परा खत्म नहीं होगी बल्कि यह गुरूओं के लिए आने वाले समय में एक ऐसे उपकरण के रूप में साबित होगी जिसके माध्यम से वे अपनी पहुंच को बहुत आगे तक बढ़ा सकते हैं और जो आने वाले समय में होने वाले परिवर्तनों के

---

1. संगीत पत्रिका, पृ.सं. –16,17, अक्टूबर 2002
2. वही

अनुरूप होगी जिसका पूरा–पूरा लाभ विद्यार्थी ले सकेंगे।[1]

- इंटरनेट के जरिये विद्यार्थी भारत के विभिन्न संगीतकारों की रचनाओं का रसास्वादन कर सकते हैं।

- इस शिक्षा प्रणाली में विद्यार्थी को श्रेष्ठ एवं मन पसंदीदा गुरूओं का चयन करने में भी सहायता मिलेगी। वह एक ही नहीं बल्कि अनेक गुरूओं एवं संगीतविदों से मार्गदर्शन प्राप्त कर सकेंगे।

- इस प्रणाली के द्वारा घरानों की रूढिवादिता कम हो पाएगी उनमें एक खुलापन आएगा। गुरूओं में प्रतिस्पर्धा बढ़ेगी जो अन्ततः संगीत की समृद्धि के लिए हितकर हो जाएगी।

- दूरस्थ संगीत शिक्षा में समय और स्थान की कोई बाध्यता नहीं होती। अपनी सुविधानुसार विद्यार्थी समय का चयन कर शिक्षा ग्रहण कर सकता है। वर्तमान युग कम्प्यूटर अथवा इंटरनेट का युग है जो विद्यालयों तथा पुस्तकों के अतिरिक्त ज्ञान वर्धन या शिक्षा प्राप्त करवाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।[2]

- दूरस्थ संगीत शिक्षा अपनी पहुंच कहीं भी बना सकती है चाहे आप निकटतम शहर में हो या मीलों दूर, कहीं भी रहकर विद्याार्थी अपना पाठ्यक्रम और डिग्री पूरी कर सकते हैं।[3]

---

1. प्रो. ए.बी. सहस्त्रबुद्धे, (भाषण–उम्मीद की नई किरणःदूरस्थ संगीत शिक्षा) नवम्बर 2002
2. डॉ. शर्मीला टेगोर,(लेख–दूरस्थ शिक्षा संगीत शिक्षण परम्परा में एक परिर्वतन) संगीत कला विहार, पृ.सं. 14
3. www.distance learning net.com

- ❖ दूरस्थ संगीत शिक्षा प्रणाली में एक प्रकार का लचीलापन है। किसी भी समय पर, अपने कक्षा में, अपने कार्यस्थल पर या अन्य कहीं भी बैठकर अपना कार्य किया जा सकता है। विद्यार्थी किसी व्यवसाय या नौकरी में कार्य करते हुए भी इस प्रणाली के द्वारा शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं।[1]

- ❖ इंटरनेट पर खोज करके देखा गया है कि संगीत में दूरस्थ शिक्षा को प्रारम्भ करने को लेकर प्रो. आर.सी.मेहता कहते हैं कि दुनिया में 10 हजार से भी अधिक विषय दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से पढ़ाये जा चुके हैं। यदि संगीत के लिए यह तकनीक नहीं अपनाई गई तो संगीत के लिए बहुत ही खतरनाक (Fetel) बात होगी।[2]

दूरस्थ शिक्षा प्रणाली शिक्षा प्रदान करने की एक ऐसी विधि है जो विद्यार्थी शिक्षक के पारस्परिक व्यवहार के अभाव में कार्य करती है। दूरस्थ संगीत शिक्षा की और भी कई विशेषताएं है जैसेः–

स्वतंत्रता एवं अनुकूलनशीलताः– दूरस्थ शिक्षा की एक सबसे बड़ी विशेषता यह भी है कि यह प्रत्येक व्यक्ति के लिए आसानी से पहुंच में है। यह विद्यार्थी को अनुकूलता प्रदान करती है जिससे वो अपने पाठ्यक्रम सामग्री के साथ आसानी से सामंजस्य बिठा सकता है। यह अनुकूलनशीलता उसे स्वतंत्रता प्रदान करती है कि वो काफी अच्छा के अनुरूप सीखने की प्रक्रिया का चयन कर सकता है।[3]

आत्म प्रेरणाः– पारम्परिक रूप से शिक्षा के विद्यार्थियों को स्वयं

1. www.distance learning net.com
2. www.artindia.net (Article by Rajive Trivedi)
3. www.prokerala.com

को आत्म प्रेरित करती है ताकि वो अपने उपर्युक्त वातावरण का निर्माण कर सके। एक विद्यार्थी के लिए आत्म प्रेरणा स्वयं की वृद्धि के लिए बहुत महत्वपूर्ण है।[1]

स्वयं सीखकर स्वयं कमानाः– दूरस्थ शिक्षा प्रणाली उनके लिए बहुत लाभकारी है जिनके पास उपर्युक्त डिग्री है वो अपनी पढ़ाई के साथ–साथ नौकरी या व्यवसाय भी कर सकते हैं। ये स्वयं सीखकर स्वयं कमाने की भी विधि है।[2]

समय व धन की बचतः– विद्यार्थी को कहीं भी यात्रा करने की आवश्यकता नहीं है न देश में न विदेश में इस ऑनलाईन विधि के द्वारा विद्यार्थी बिना किसी यात्रा खर्च के घर पर ही प्राप्त कर सकता है ये न केवल समय की बचत करता है अपितु धन की भी बचत करता है।[3]

यह प्रणाली उन लोगों के लिए है जो शारीरिक रूप से कमजोर है जैसे (अपंग, घायल, बुजुर्ग) उपलब्धता प्रदान करती है साथ ही वो लोग जिनके ऊपर पारिवारिक जिम्मेदारियां है जैसे (माता–पिता–घर पर नौजवान बालक–बालिकाएं) उनके लिए में भी शिक्षा को सुलभता प्रदान करती है।[4]

दूरस्थ शिक्षा प्रणाली ने पिछले कुछ वर्षों में काफी हद तक सफलता प्राप्त की है जिनमें दोनों (विद्यार्थी एवं शिक्षक) ही नई तकनीकी के आधार पर आरामदायक स्थिति महसूस कर रहे हैं।[5]

---

1. **www.prokerala.com**
2. वही
3. वही
4. **www.USjournal.com**
5. वही

दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के कार्यक्रम जीवन में आगे बढ़ने एवं सीखने की प्रक्रिया को लम्बे समय तक के लिए प्रेरित करते हैं। इस प्रणाली के माध यम से अतिरिक्त ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। यह मानसिक तनाव को कम करती है और संतोष अथवा संतुष्टि को बढ़ाती है। विद्यार्थियों को यह अवसर प्राप्त होता है कि वे ऑनलाईन स्टडी के माध्यम से पूरे विश्व में अन्य किसी भी विद्यार्थी, गुणी जन या शिक्षकों से विचार निनिमय कर सकते हैं और अपने ज्ञान संचय में वृद्धि कर सकते हैं।[1]

ऑनर्लाइन लर्निंग विद्यार्थियों को एडवांस टेक्नोलॉजी से युक्त प्लेटफार्म उपलब्ध करवाती है। यह प्रणाली विद्यार्थियों का अंतर्राष्ट्रीय नेटवर्किंग के माध्यम से शिक्षा के बेहतर अवसर उपलब्ध करवाती है।[2]

दूरस्थ शिक्षा (एक ऐसे आर्शीवाद के रूप में) विद्यार्थियों के सामने आई है जो नौकरी करते हुए अथवा जो किसी कारणवश निसमित कक्षायें ग्रहण नहीं कर पाते हैं।[3]

भारत जैसे देश में जहां आधारभूत बी.ए. डिग्री किसी भी अच्छी नौकरी के लिए आवश्यक है, दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम ऐसे कई अवसर विद्यार्थी के सम्मुख रखता है जिसके द्वारा वो अपनी समस्या दूर कर सकता है और आसानी से अपने विषय, गुरू, अध्ययन सामग्री आदि का चयन कर सकता है किन्तु विशेषताओं के साथ–साथ कुछ समस्याऐं भी है जो दूर दूरस्थ संगीत शिक्षा से ग्रहण करते समय हमारे समक्ष आती हैः–

---

1. http://in answers.yahoo.com
2. @wash u Law Blog., 4 March, 2013
3. www.htcampus.com

दूरस्थ शिक्षा प्रणाली की समस्याऐंः– जिन्दगी के हर पहलू पर जहां कम्प्यूटर और इंटरनेट का व्यापक प्रभाव देखने को मिलता है। वहीं दूसरी और यह बात भी सामने आती है कि भारतीय संगीत खास तौर पर शास्त्रीय संगीत के संबंध में इंटरनेट या कम्प्यूटर क्या प्रभावी हो पाएगा ?

क्या यह दूरस्थ शिक्षा प्रणाली गुरू–शिष्य परम्परा के प्रभुत्व को बनाए रखने में सक्षम रहेगी ? दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के द्वारा पारम्परिक सांगीतिक परम्परा का हास होगा या नहीं ? इसी संबंध में दूरस्थ संगीत शिक्षा प्रणाली की कई समस्याऐं समक्ष आईः–

- ❖ दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में गुरू शिष्य प्रणाली की पारम्परिकता, शुद्धता, सूक्ष्मता एवं कला–सौन्दर्य प्रभावी रूप से कार्य नहीं कर पाते।

- ❖ संगीत का इतिहास इतना मौखिक और पारम्परिक है कि इसे कोई आधुनिक तकनीक नहीं बदल सकती। दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में गुरू–शिष्य की सीना–ब–सीना पद्धति का अभाव इसे अधूरा बनाए रखता है क्योंकि जितने हाव–भाव मुखाकृति और स्वरों का प्रभाव साक्षात् रूप से प्रभावित करता है उतना दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में गुरू से शिष्य प्रभावित नहीं हो पाता है।

- ❖ भोपाल में हुए एक अन्तर्राष्ट्रीय परिसंवाद में एक रसिक श्रोता श्री श्याम मुंशी जी ने कहा है कि शास्त्रीय संगीत की बारीकियां

गुरू–शिष्य परम्परा के ज़रिए ही शिष्य तक पहुंच सकती है, उन्होंने यह शंका व्यक्त की कि मीलों दूर बैठा गुरू इंटरनेट पर अपने शिष्य की गलती को कैसे ठीक कर पाएगा ?[1]

- पं. छन्नूलाल जी मिश्र जो कि ठुमरी गायन शैली के प्रसिद्ध गायक है के अनुसार ''संगीत कोई ऐसी चीज़ नहीं है जिसे टेक्नोलॉजी के माध्यम से सीखा जाए। यह तो सम्मुख रहकर सीखने की कला है, अनुभव करने की विद्या है जो सीना–ब–सीना ही संभव है।''[2]

- डॉ. एस.एस. दुर्गा ने कहा है कि ''दूरस्थ शिक्षा प्रणाली शास्त्रीय संगीत के लिए एक चुनौती है और एक सुनहरा मौका भी है।''[3]

- दूरस्थ शिक्षा प्रणाली की सबसे बड़ी समस्या यह है कि क्या कम्प्यूटर खरीदने का खर्च विद्यार्थी वहन कर पायेगे या नहीं ? और दूसरा उसमें इंटरनेट कनेक्शन करवाना क्या सभी के लिए आसान होगा ? यह सबसे बड़ी समस्या बनी हुई है।[4]

- चूंकि दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में गुरू–शिष्य के बीच साक्षात् सम्पर्क नहीं हो पाता जितना कि कक्षागत शिक्षक प्रणाली में होता है। इसलिए यह प्रणाली अनेक समस्याओं को जन्म देती है।

अनुशासनहीनताः– जैसा कि इस प्रणाली में शिक्षक की शारीरिक अनुउपस्थिति रहती है, जो विद्यार्थी से समय–समय पर आवश्यक प्रश्न

1. संगीत पत्रिका, अन्तर्राष्ट्रीय परिसंवाद, नवम्बर 2000
2. चर्चा, पं. छन्नू लाल जी मिश्र, 21 फरवरी 2013, कोटा (राज.), रात्रि 8:30 बजे
3. संगीत पत्रिका, अन्तर्राष्ट्रीय परिसंवाद, नवम्बर 2000
4. चर्चा, पं. श्री लखनलाल शर्मा, संगीतज्ञ, कोटा (राज.), 11 फरवरी 2014 रात्रि 9:00 बजे

पूछते है कार्य क्षेत्र के संबंध में जानकारी लेते है। ऐसी स्थिति में विद्यार्थी के लिए दूरस्थ शिक्षा प्रणाली अनुशासनहीन साबित हो सकती है क्योंकि उसमें उचित नियंत्रण का अभाव रहता है।[1]

शिक्षक से साक्षात्कार का आभावः– शिक्षक से व्यक्तिगतरूप से साक्षात्कार का अभाव विद्यार्थी के लिए एक बड़ी समस्या है बिना शिक्षक के निर्देश कुछ विद्यार्थियों को समझने में भी परेशानी का सामना करना पड़ता है तो यह प्रणाली की बड़ी समस्या है।[2]

अध्ययन एवं नौकरी के बीच असंतुलनः– दूरस्थ शिक्षा प्रणाली तभी उपर्युक्त है जब नौकरी एवं अध्ययन के बीच संतुलन बिठाया जा सके अन्यथा यह एक बड़ी समस्या बन सकती है।[3]

तुरन्त प्रतिपुष्टि का अभावः– परम्परागत शिक्षा प्रणाली में अपनी प्रस्तुति के आधार पर तुरन्त प्रतिपुष्टि प्राप्त हो जाती है किन्तु दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में प्रतिपुष्टि के लिए इंतजार करना पड़ता है जब तक कि शिक्षक ने उनके कार्य को अच्छी तरह से समझा न हो।

अकेलापनः– अधिकांशतः विद्यार्थियों को अकेले अध्ययन करना पड़ता है। दूरस्थ शिक्षार्थी उस अकेलेपन के कारण सामाजिक साक्षात्कार नहीं कर पाता है जो कि कक्षागत वातावरण में अधिक संभव है।[4]

---

1. निशाथा अब्राहम ब्रिजीश (आर्टिकल ऑन इंटरनेट), एडवानटेज़ एण्ड डिस्एडवान्टेज़ ऑफ डिस्टेन्स लर्निंग
2. वही
3. बी.दिव्या (आर्टिकल ऑन इंटरनेट), दूरस्थ शिक्षा प्रणाली–एडवानटेज़ एण्ड डिस्एडवान्टेज़ 25, सितम्बर 2008
4. वही

- ❖ दूरस्थ शिक्षा प्रणाली की यह एक समस्या है कि इसे सीखने का उपर्युक्त वातावरण नहीं मिल पाता है। गुरू–शिष्य के बीच किसी प्रकार का मेल–मिलाप नहीं हो पाता जो कि संगीत शिक्षा के लिए आवश्यक है।[1]

- ❖ दूरस्थ शिक्षा प्रणाली की यह भी एक प्रमुख समस्या हैं कि विद्यार्थी को स्वयं को प्रोत्साहित करना पड़ता है कोई इसे प्रोत्साहित करने वाला उसके निकट नहीं होता।

- ❖ दूरस्थ शिक्षा प्रणाली चूंकि आधुनिक तकनीकी क्षमता व विकास पर आधारित होती है अतः यह लगातार शिक्षा प्रदान करती रहे यह संभव नहीं है क्योंकि कभी भी किसी तरह की तकनीकी खराबी का सामना इसे करना पड़ सकता है। जिसके कारण विद्यार्थियों को भी इससे मिलने वाली असुविधा का सामना करना पड़ सकता है।

कई बार शिक्षार्थी अध्ययन करना आवश्यक नहीं समझते क्योंकि या तो वो घर पर या फिर कहीं ऑफिस में व्यस्त होते हैं। कई बार समय की अनुकूलता उन्हें नहीं मिल पाती जिस कारण वो मैनेजमेंट और अपने काम को अनदेखा नहीं कर पाते, जिस कारण बहुत सा पहले का कार्य अधूरा रह जाता है और कई विद्यार्थी अध्ययन के समय अपना प्रोत्साहन खो देते हैं जो कि इस प्रणाली के लिए अच्छी बात नहीं है।[2]

---

1. www.prorkerala.com
2. www.selfgrowth.com

दूसरी तरफ विद्यार्थी को कई प्रायोगिक कक्षाओं के संबंध में समस्याओं का सामना करना पड़ता है। कई बार केवल पुस्तक से पढ़कर ही नहीं समझा जा सकता जब तक कि उस प्रायोगिक रूप से न समझा जाए और संगीत में तो यह अति आवश्यक है।[1]

इस प्रकार दूरस्थ शिक्षा प्रणाली की कई खूबियां है तो कई समस्याऐं भी। अतः इसके अतंर को समझना अत्यन्त आवश्यक हो जाता है। इस प्रणाली ने एक तरफ शिक्षा के नवीन आयाम उपलब्ध करवाये हैं तो दूसरी ओर कई समस्याओं को भी जन्म दिया है। अतः इस प्रणाली की उपयोगिता को हम अगले अध्यायों में स्पष्ट करने का प्रयत्न करेंगे।

□□□□□

1. www.selfgrowth.com

चतुर्थ अध्याय

"वर्तमान परिप्रेक्ष्य में दूरस्थ शिक्षा प्रणाली की प्रासंगिकता"

दूरस्थ शिक्षा, शिक्षा का वह स्वरूप है जिसमें शिक्षार्थी को दूर रहकर शिक्षा प्रदान करने की व्यवस्था की जाती है। आज के इस तकनीकी युग में दूरस्थ शिक्षा का अपना एक महत्व है। यह प्रणाली विद्यार्थियों को वह व्यवस्था उपलब्ध करवाती है जिसमें उन्हें किसी भी प्रकार से विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में शिक्षा ग्रहण करने नहीं जाना पड़ता है, अपितु वह अपने–अपने स्थानों पर रहकर भी दूरदर्शन, रेडियो, अकाशवाणी, टेप–रिकार्डर, ऑडियो–वीडियो कैसेट्स या यों कहें इंटरनेट, कम्प्यूटर एवं वीडियो कॉनफ्रेंसिंग के माध्यम से भी ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।

यह प्रणाली वर्तमान युग की आवश्यकता है। विद्यार्थी अपने स्थान पर ही रहकर प्रगति कर सकते हैं। अपने ऑडियो लेक्चर्स, और वीडियो क्लिप्स को रिप्ले भी कर सकते हैं। यह प्रणाली शिक्षा के व्यवसायिक विकास के संबंध में भी बड़ी उपयोगी है।[1]

संगीत शिक्षा के संदर्भ में यदि हम बात करें तो संगीत शिक्षा को दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से सीखे जाने के लिये विद्यार्थी को किसी प्रकार की बाध्यता के, सुगमता के साथ प्रभावी रूप से सीखा जा सकता है।

---

1. E-leader, slovakia-2006 (How Distance Education has Changed Teaching and Role of Instructor)

संगीत और दूरस्थ शिक्षा के बीच की खाई को पाटते हुए पाश्चात्य जगत के विद्वान शान फेनिंग ने कहा है कि ''यदि विद्यार्थी गुणी है तो संगीत में सीना–ब–सीना तालीम की आवश्यकता नहीं है। Music for everyone and everyone for Music का उद्घोष करना ही होगा और इसके लिए उच्च तकनीकी की मदद की आवश्यकता होगी''।[1]

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अगर देखें तो संगीत द्वारा दूरस्थ शिक्षा की आवश्यकता उन लोगों के लिए अधिक प्रभावी है जो भौगोलिक स्थिति से दूर हैं, विश्वविद्यालय, शिक्षा संस्थानों से दूर हैं। इन लोगों के लिए ही इन्फोर्मल कोर्स शुरू किये गये हैं। संगीत की सभी विधाओं (गायन, वादन एवं नृत्य) का ज्ञाान आधुनिक तकनीकी से दूर बैठे छात्रों को मिले तो यह शिक्षा अधिक प्रभावशाली सिद्ध होगी।[2]

आधुनिक युग कम्प्यूटर, विज्ञान एवं तकनीकी क्षेत्र की दृष्टि से बहुत ही प्रभावी युग है। आधुनिक तकनीकियों ने न केवल दैनिक जीवन को सहयोग दिया है, बल्कि यह सांसारिक सार्वभौमिकता का आधारभूत कारक भी है।

संगीत रचनात्मकता की कुंजी है। संगीत शिक्षा को और खुशनुमा बनाती है। यह विश्वव्यापी भाषा है। जिनके भाव स्वरूप में एकता पार्ठ जाती है और स्वरों के माध्यम से ही हम भाव को समझ सकते हैं। स्वरों की भाषा एक है, भाव एक है इसीलिए इस भाषा को यूनिवर्सल भाषा कहा गया है। संगीत के पास वो सभी आध्यात्मिक शक्तियां मौजूद हैं जो किसी

1. डॉ. नमिता यादव (लेख), संगीत, पृ.सं.–20–22
2. वही

भी मनोदशा को समक्ष लाकर आपको भावुक कर सकती है। यह संगीत ही है जो जन समुदाय को निकट लाने का उन में, प्रेम का निर्वाह करने का अनूठा कार्य करता है।[1]

आधुनिक युग को इलेक्ट्रॉनिक एवं विज्ञान का युग कहा जाए तो कोई संदेह नहीं होगा। अतः इन्हीं संसाधनों के माध्यम से भारतीय शास्त्रीय संगीत का विस्तार व फैलाव प्राचीन काल की अपेक्षा अधिक हुआ है। संगीत आज विकास की ऊँचाईयों को अधिकतम रूप से छू रहा है। मेडिकल एवं इंजीनियरिंग जैसे विषयों की भाँति ही संगीत भी पूरी तरह से व्यावहारिक विषय है।[2]

ब्रायन शेपर्ड जो कि थोर्टन स्कूल,यनिविर्सिटी ऑफ साउर्थन केलिफोर्निया के कम्पोज़र सहायक प्रोफेसर हैं। यह पेडालोजिकल (शैक्षणिक) टेक्नोलॉजी के विशेषज्ञ है और साथ ही नई–नई तकनीकियों के माध्यम से जैसे इंटरनेट दो (2) से संगीत के क्षेत्र में नए आविष्कारों को जन्म दे रहे हैं। यह कार्यरत कम्पोज़र हैं जो तुरंत टेक्नोलॉजी की मद्द से स्वतः संगीत की धुनें बनाते हैं।[3]

यहाँ हम बात करते है 21वीं शताब्दी की टेक्नोलॉजी की। कई तरह के शास्त्री संगीत, गायन, वादन एवं नृत्य पर आधारित वीडियो इंटरनेट पर, यू ट्यूब पर उपलब्ध हैं जो कि आधुनिक शिक्षा प्रणाली से संबंधित हैं। इन वीडियोज़ में कई विचार, तकनीकियों को केन्द्रित किया गया है, इसके साथ ही यह भी बताया है कि इन तकनीकियों को लागू कैसे किया जाए।[4]

---

1. **www.pianoaround the world.com**
2. **डॉ. महारानी शर्मा, संगीत कला विहार, अगस्त 2010**
3. **www.artistshousemusic.org**
4. **उत्कर्ष लोकेश, इनसाइट–(टेक्नोलॉजी एण्ड इट्स रोल इन ट्वंटी फस्ट सेन्चुरी एजुकेशन) ऑन इंटरनेट**

यू ट्यूब पर एक वीडियो उपलब्ध है जो आधुनिक तकनीकी को और भी सुचारू रूप से व्यक्त करता है– "How to use Technology in education"(21st century You tube)[1] यह सारी आधुनिक तकनीकियां प्रदर्शित करती हैं कि वर्तमान समय में दूरस्थ शिक्षा की प्रासंगिकता है। इस प्रणाली की यह उपादेयता है कि यह प्रणाली और 'सोशल मीडिया इन एजुकेशन' लोगों के विचारों को आदान–प्रदान करने में सहायता करती है। विद्यार्थी ऑनलाइन विषयवस्तु को भी सुन कर अपना समर्थन व्यक्त कर सकता है और उसके माध्यम से कई प्रकार के लिखित,ऑडियो, वीडियो, 2 D, 3D, विषय वस्तु बनाकर अपना संगीत निर्मित कर सकता है।

दूरस्थ शिक्षा प्रणाली ने विद्यार्थियों के लिए एक ऐसा प्लेटफार्म उलब्ध करवाया है जिसमें विद्यार्थी अपनी सुविधानुसार और अपने ही स्थान पर शिक्षा ग्रहण कर सकता है। शिक्षा ग्रहण करने के इस बदलते परिप्रेक्ष्य में अगर आप कार्यरत हैं और एक अच्छी शिक्षा अथवा डिग्री प्राप्त करना चाहते हैं तो दूरस्थ शिक्षा प्रणाली आपके कॅरियर को बढ़ाने में बहुत उपयोगी सिद्ध होगी।[2]

इस प्रणाली द्वारा विद्यार्थी अपनी शिक्षा तकनीकी को और प्रभावी रूप में उपयोगी बना सकते हैं और वो भी विभिन्न आधुनिक उपकरणों की मदद से जैसे कई तरह के चित्रों, वीडियो, ऑडियो एवं कम्प्यूटर के माध्यम से अपनी लिखित शैली को प्रभावी बना सकते हैं।

---

1. www.youtube.com-How to used Technology in Education
2. www.citehr.com (Article by Smita Choudhury)

विद्यार्थी अपने विचारों और सुझावों को ऑनलाइन टीचिंग के माध्यम से एक–दूसरे से बाँट सकते हैं। 'ई–लाईब्रेरी' विद्यार्थियों को सूचनाऐं एकत्रित करने में सहायता प्रदान करती है।

'गुरू वेब फोमर्स' एक ऐसी वेबसाईट है जो उन विद्यार्थियों के प्रश्नों के उत्तर दे सकती है जिन्हें कुछ जानने की जागरूकता है।

एक आर्टिकल के अनुसार ''यह दूरस्थ शिक्षा प्रणाली एवं उससे संबंधित संस्थाऐं इस शिक्षित समाज में शिक्षा को प्रोत्साहित करने व उसे आधुनिक बनाने में विभिन्न प्रकार की विधियों के माध्यम से एक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करती हैं।''[1]

दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के संदर्भ में कई लोगों के विचार इस प्रकार है–

- ''दूरस्थ शिक्षा प्रणाली उन लोगों के लिए विशेष तौर पर उपयोगी है जो कार्यरत हैं और काम करने के साथ–साथ पढ़ाई भी करना चाहते हैं। यह उनके लिए उपयोगी है जो किन्हीं कारणों से अपनी शिक्षा नियमित नहीं कर पाए।[2]

- "Distance education is not value less. If it would have been so, people would hve rejected it long ago. It is a boon for those who could not pursue or even start their education in general or in particular due to some reasons."[3]

---

1. wikieducator.org
2. India study channel.com
3. वही

- ‘‘कोई भी शिक्षा व्यर्थ नहीं है। यही कथन दूरस्थ शिक्षा के लिए भी लागू होता है। यह आपको नई वस्तुओं को सीखने में सहायता करेगी, आपके शिक्षा स्तर को बढ़ाएगी और एक अच्छा व्यक्तित्व बनाएगी।’’[1]

ई–लर्निंग के संबंध में कहा गया है कि

‘‘ई–लर्निंग शिक्षा के क्षेत्र में एक नया सिद्धान्त है जो कि इंटरनेट टेक्नोलॉजी द्वारा प्रयोग में लाया जाता है। यह डिजिटल विषय सूची को प्रदर्शित करता है और शिक्षक व शिक्षार्थी दोनों के लिए शिक्षानुकूल वातावरण निर्मित करता है। ई–लर्निंग शैक्षिक समाज व विचारों को ता–उम्र निर्मित करता रहता है।[2]

ब्रिटिश आगमन के पश्चात् भारत में नए–नए विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों का निर्माण हुआ और उनमें से अधिकतर अंग्रेजी माध्यम के। चूँकि विद्यालय और विश्वविद्यालय पहले कम थे और बहुत दूरी पर थे इसलिए विद्यार्थियों को जिनमें बालक–बालिकाऐं थे उन्हें मीलों दूर तक यात्रा करनी पड़ती थी और कई बार नदियों को पार करके जाना पड़ता था। इस संबंध में सन् 1893 में स्वामी विवेकानन्द जी ने एंग्विश में कहा कि ‘‘If our girls & boys are unable to reach the schools, then the schools must be brought to the door step to every home.’’ और स्वामी जी ने यह भी कहा कि आने वाले सौ वर्षों में ऐसा अवश्य होगा।[3]

---

1. India study channel.com
2. www.researchgate.net
3. Heralding- Education-to-Home (ETH), through E-learning

दूरस्थ शिक्षा के संबंध में कहा गया है कि–

"Institutional based, formal education where the learning group is separate, and where interactive telecommunication system are used to connect learners, resources and instructors."[1]

दूरस्थ शिक्षा प्राथमिक रूप से मेल द्वारा दी जाती थी जिसे हम पत्राचार कोर्स भी कहते थे। निर्देश के माध्यम प्रमुखतः पुस्तकें, पेपर डोक्यूमेन्ट्स और अन्य प्रिन्टेड सामग्री होती थी। किन्तु अब यह प्रणाली एक रंगीन कम्प्यूटर आधारित ग्राफिक स्त्रोतों के द्वारा पूरी तरह परिपक्व हो चुकी है।

वर्तमान समय में ऐसे कई विश्वविद्यालय हैं जो ऑनलाइन लर्निंग के क्षेत्र में नए–नए विचारों के साथ आगे आए हैं। मीडिया ने हर जगह अपनी पहुँच बनाई है। एक प्रमुख महत्व की बात यह है कि इस प्रणाली में एक व्यक्ति घर पर अथवा कार्यस्थल पर रहकर भी डिग्री प्राप्त कर सकता है। [2]

जैसा हम सबको यह विदित है कि आधुनिक समय में मीडिया सर्वत्र व्याप्त है। यह हमारी रोज़मर्रा की ज़िन्दगी का हिस्सा है। मीडिया, शिक्षा के क्षेत्र में भी एक प्रमुख भूमिका अदा करता है। मीडिया एवं टेक्नोलॉजी में वो शक्ति है जो व्यक्तित्व को निखारती है, साथ ही विश्व को हमारे वर्तमान को समझने में मदद करती है।

---

1. www.articles base.com

2.

हम यह देख और समझ चुके हैं कि अत्यधिक संख्या में लोग इंटरनेट और तकनीकियों पर निर्भर हो चुके हैं। कई सूचनाओं को एकत्रित करना, समाचार पढ़ना, संगीत सुनना,चलचित्रों को डाउनलोड करना, गेम्स खेलना और कार्य करना आदि, ये सब मीडिया के प्रमुख भाग हैं और शिक्षा के लिए बहुत महत्व भी रखते हैं। मीडिया, संस्कार, खेल,कूद, सूचनाऐं, मनोरंजन एवं तत्काल ज्ञान को हमारे समक्ष प्रस्तुत करने में अहम् भूमिका अदा करता है।[1]

यहां पर हम उदाहरण लेते हैं ''Zee'' चैनल का। ''Zee'' चैनल ऐसे सिद्धान्तों को सामने लेकर आया है जिनको उन्होंने नाम दिया– Zee Interactive Learning System (ZILS)। यह सिस्टम न केवल समकालीन और असमकालीन सुविधाऐं प्रदान करता है अपितु व्यक्तिगत आवश्यकताओं के आधार पर उपर्युक्त स्रोत भी उपलब्ध करवाता है।[2]

एक सर्वे के अनुसार पाया गया कि वर्ष 2008 तक 15 प्रतिशत विद्यार्थियों द्वारा ऑनलाइन विधि द्वारा शिक्षा ग्रहण की गई जो वर्ष 2012 में बढ़कर 31 प्रतिशत हो गई। लगभग 54 प्रतिशत विद्यार्थी पूरी तरह से उन विषयों के अन्तर्गत शिक्षा प्राप्त करते हुए पाए गए जो पूरी तरह से टेक्नोलॉजी पर आधारित थी। यह भी देखा गया कि वो विद्यार्थी जो ऑनलाइन लर्निंग द्वारा सीखते हैं वो परम्परागत सीना–ब–सीना प्रणाली की अपेक्षा बेहतर तरीके से प्रस्तुति दे पाते हैं।[3]

---

1. बिपाशा चौधरी, मीडिया एण्ड लर्निंग न्यू डायमेन्शन (ऑन इंटरनेट)
2. www.articlebase.com
3. www.edtechreview.in

ऑनलाइन लर्निंग वर्तमान समय में इस दृष्टि से भी महत्व रखती है कि एक तो इसके द्वारा विद्यार्थियों को डिजिटल सिटीजनशिप एवं इंटरनेट सुरक्षा के बारे में जागरूक बनाया जाता है और दूसरा शिक्षकों को डिजिटल नेटिव्स के बारे में तैयार किया जाता है। ऑनलाइन लर्निंग के 5 तरीके जो शैक्षिक उत्पादकता को बढ़ाने का कार्य करते है:–[1]

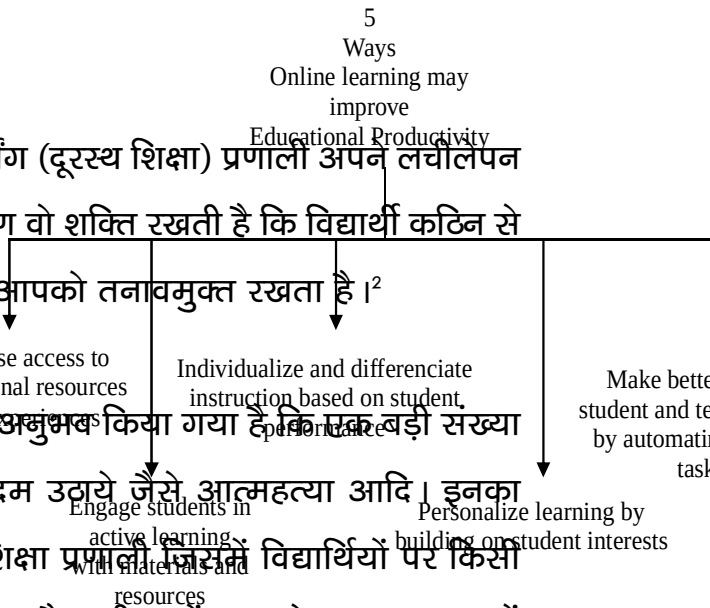

ओपन एवं डिस्टेन्स लर्निंग (दूरस्थ शिक्षा) प्रणाली अपने लचीलेपन एवं मित्रतापूर्ण व्यवहार के कारण वो शक्ति रखती है कि विद्यार्थी कठिन से कठिन परिस्थिति में भी अपने आपको तनावमुक्त रखता है।[2]

पिछले कुछ वर्षो में यह अनुभव किया गया है कि एक बड़ी संख्या में विद्यार्थियों ने बड़े गलत कदम उठाये जैसे आत्महत्या आदि। इनका कारण हमारी चलती आ रही शिक्षा प्रणाली जिसमें विद्यार्थियों पर किसी भी सर्टिफिकेट को हासिल करना और परीक्षा में पास होना इन सब बातों

1. www.onlinedegreeprograms.com
2. www.col.org

के लिए बाध्य किया जाना शामिल है। जिनसे अनावश्यक तनाव विद्यार्थी अपने भीतर महसूस करने लगता है। अतः दूरस्थ शिक्षा प्रणाली ने तनावमुक्त वातावरण बनाने में भी एक अहम भूमिका निभाई है।[1]

अस्तुः दूरस्थ शिक्षा प्रणाली विद्यार्थी के लिए तनावमुक्त शिक्षा का वातावरण, जीवन भर के लिए शिक्षा प्रत्येक व्यक्ति की इच्छा एवं आवश्यकता के आधार पर कम तनाव, स्थान और चयन की स्वतंत्रता, परीक्षाओं पर कम तनाव और जीवन को सुन्दरता के साथ जीने का वातावरण उपलब्ध कराती है।

दूरस्थ शिक्षा माध्यम कई विश्वविद्यालयों द्वारा अपनाया गया। आर्थिक बाधाओं के कारण विभिन्न क्षेत्रों में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए साधन का अभाव है। वहां भारत में धीरे–धीरे कई विश्वविद्यालयों ने नोट्स उपलब्ध कराने की प्रक्रिया, पत्रक मूल्यांकन प्रणाली, पत्राचार कार्यक्रम शुरू कर दिया।

सुलभता से प्रवेश, निकास, विनियमन, अध्ययन की स्वयंभूगति, पाठ्यक्रमों के चयन में लचीलापन, अध्ययन एवं परीक्षा के स्व–निर्धारित स्थान आदि विशेषताओं ने शिक्षा के क्षेत्र में इस दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के प्रयोग को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह लगभग 74 प्रतिशत वृद्धि हुई है। सन् 1995 से 1998 तक हमारे देश में मुक्त विश्वविद्यालयों में वार्षिक नामांकन, सिर्फ तीन साल में 2,00,939 से 3,50000 तक चला गया है। इसी तरह संचयी नामांकन लगभग

1. www.col.org

(1995में 5,71983, 1998 में 10,50,000) दोगुना हो गया है।[1]

पीढ़ी दर पीढ़ी टेक्नोलॉजिज़ का बढ़ता स्वरूप

Models of Distance Education and Associated Delivery Technologies	Characteristics of Delivery Technologies					
	Flexibility			Highly Refined Materials	Advanced Interactive Delivery	Instructional variable Costs Approaching Zero
	Time	Place	Pace			
FIRST GENERATION The Correcpondence Model Print	YES	YES	YES	YES	NO	NO
SECOND GENERATION The Multi-Media Model						
. Print	YES	YES	YES	YES	NO	NO
. Audiotape	YES	YES	YES	YES	NO	NO
. Videotape	YES	YES	YES	YES	NO	NO
. Computer-based Learning	YES	YES	YES	YES	YES	NO
. Interactive Video (Disk & Tape)	YES	YES	YES	YES	YES	NO
THIRD GENERATION- The Telelearning Model						
. Audioteleconferencing	NO	NO	NO	NO	YES	NO
. Videoteleconferencing	NO	NO	NO	NO	YES	NO
. Audiographics communication	NO	NO	NO	YES	YES	NO
. Broadcast TV/Radio and Audioteleconferencing	NO	NO	NO	YES	YES	NO
FOURTH GENERATION- The Flexible Learning Model						
. Interactive Multimedia (IMM) Online	YES	YES	YES	YES	YES	YES
. Internet based access to www resources	YES	YES	YES	YES	YES	YES
. Computer mediated communication	YES	YES	YES	YES	NO	YES
FIFTH GENERATION- The Intriligent Flexible Learning Model						
. Interactive Multimedia (IMM) Online	YES	YES	YES	YES	YES	YES
. Internet based access to www resources	YES	YES	YES	YES	YES	YES
. Computer mediated communication	YES	YES	YES	YES	YES	YES
. Campus portal access to institutional processes & resources	YES	YES	YES	YES	YES	YES

(1)

1. www.internationalpeaceandconflict.org

इन आंकड़ों में अन्य विषयों के साथ–साथ संगीत विषय भी प्रमुखता से छात्र–छात्राओं द्वारा चयनित किया जाता है। दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के माध्यम पांच चरणों में अपनाए गए जिन्हें क्रमशः प्रथम पीढ़ी, द्वितीय पीढ़ी, तृतीय पीढ़ी, चतुर्थ पीढ़ी एवं पंचम पीढ़ी कहा गया जिसे क्रमशः उपरीलिखित सारणी द्वारा प्रदर्शित किया जा चुका है।

यहां प्रस्तुत चित्र दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के माध्यमों को पीढ़ी–दर पीढ़ी प्रदर्शित करते हैंः–

1

Print Material

2

Audio Tape

3

Video Tape

1. Image received from www.amazingexcel.com
2. Image received from www.deviantarl.com
3. Image received from www.lifetimememoriestodvd.com

1

Computer Based Learning

2

Audio Teleconferencing

3

Video Conferencing

---

1. Image received from www.wikispaces.com
2. Image received from www.orange.mu.blog.pgi.com
3. Image received from www.avconferencing.blog.com

Audiographic Communication

1

2

Online class for multiple centres

Interactive Multi Media Online

---

1. Image received from www.thesocialvoiceproject.blogspot.com
2. Image received from www.rkmvu.ac.in

Internet Based Access to www resources **1**

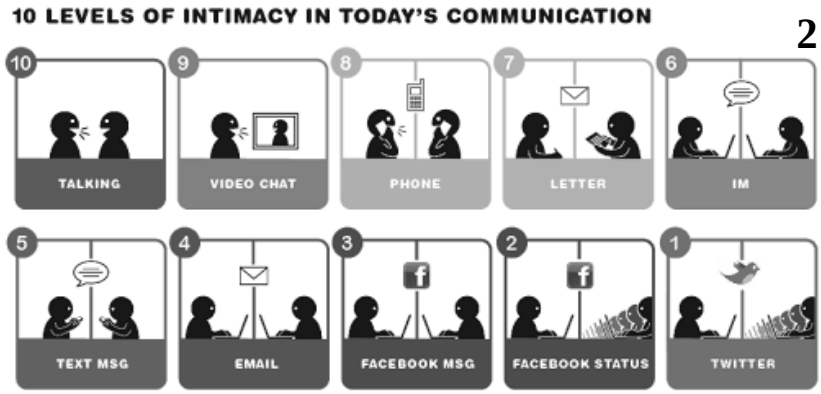

2

Computer M

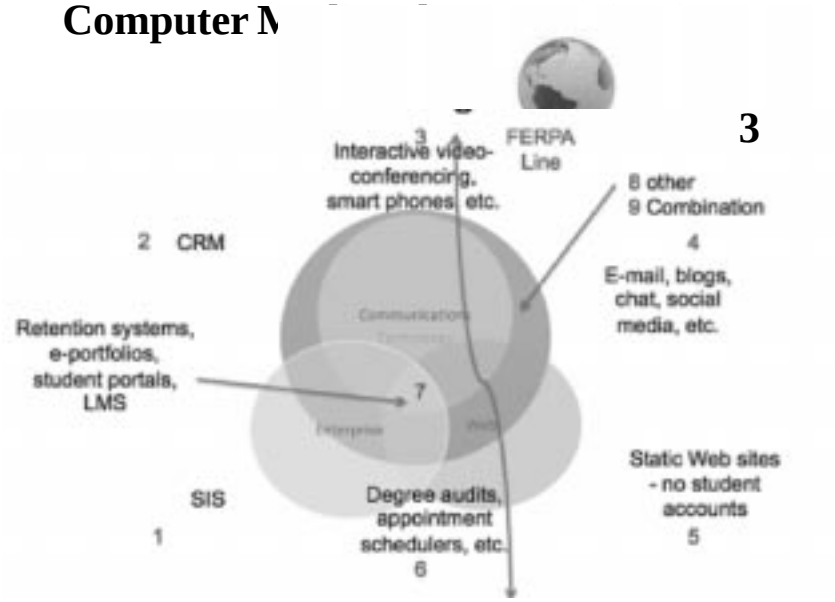

3

Communication Technologies

---

1. Image received from www.ourcloudcomputing.wordpress.com
2. Image received from www.blog.pentalks.com
3. Image received from www.nacada.ksu.edu

पिछले कुछ वर्षो में इस शिक्षा प्रणाली में जो संस्थागत वृद्धि हुई हैं उसे हम यहां प्रदर्शित कर रहे हैं।

दूरस्थ शिक्षा प्रणाली की संस्थागत वृद्धि

1

वर्ष	ओपन विश्वविद्यालय	दूरस्थ शिक्षण संस्थाऐं	कुल दूरस्थ शिक्षण संस्थाऐं
1962	–	1	1
1970–71	–	17	17
1975–76	–	22	22
1980–81	1	33	34
1985–66	2	38	40
1990–91	5	46	51
1995–96	7	50	57
2000–01	9	70	79
2005–06	13	104	117
2009–10	14	186	200

1. स्त्रोत दूरस्थ शिक्षण कमिटी डाटाबेस, 2007

विद्यार्थियों के नामांकन के आधार पर ओपन यूनिवर्सिटीज़ (OUs) और दूरस्थ शिक्षण संस्थाऐं (DEIs) का विभाजन निम्न सारणी में दर्शाया गया है–

1

क्र.सं.	वर्ष	SOUs	DEIs	Total
1	1962–63	–	1,112	1,112
2	1970–71	–	29,500	29,500
3	1980–81	–	1,66,428	29,500
4	1985–86	17,009	3,38,090	3,55,090
5	1990–91	1,02,820	4,89,994	5,92,814
6	1995–96	2,00,939	8,02,061	10,03,000
7	2000–01	5,22,506	8,55,494	13,78,000
8	2005–06	9,75,844	8,57,680	18,33,524
9	2009–10	16,29,732	20,07,012	36,36,744

इस प्रकार हम देख रहे हैं। कि दूरस्थ शिक्षा प्रणाली ने अब तक तीव्रता के साथ वृद्धि की है, जो कि एक सफलता का सूचक है।

Debate-Org. एक ऐसा ऑनलाइन सर्वे प्लेटफार्म है जो कि खुले रूप से वाद–प्रतिवाद की स्वतंत्रता लोगों को देता है। इस सर्वे में करीब 60 प्रतिशत लोगों ने कहा कि ऑनलाइन शिक्षा प्रभावशाली है

1. माधव मैनन कमिटी रिपोर्ट, 2011

जबकि 42 प्रतिशत लोग अब भी यह मानते हैं कि यह शिक्षा प्रणाली इतनी प्रभावी नहीं है।[1]

एक और सर्वे के अनुसार यह पाया गया कि सन् 2002 में केवल 2 प्रतिशत विद्यार्थी ऑनलाइन शिक्षा ग्रहण कर रहे थे जबकि सन् 2010 तक यह संख्या 30 प्रतिशत तक बढ़ी और निर्माताओं का यह भी अनुमान है कि यह संख्या 2016 तक 50 प्रतिशत तक बढ़ेगी तथा विद्यार्थी ऑनलाइन कोर्स द्वारा शिक्षा ग्रहण कर सकेंगे।[2]

भले ही ऑनलाइन लर्निंग धीमी गति से चल रही है किन्तु इसमें कोई दो राय नहीं कि किसी भी शिक्षा को इसके माध्यम से ग्रहण किया जा सकता है। जैसा कि हम पहले ही सर्वे में हुई वृद्धि से यह पता लगा चुके हैं। संगीत के परिप्रेक्ष्य में अगर हम बात करें तो हमें यह ज्ञात है कि कई संगीत विद्यार्थी प्राइवेट संगीत शिक्षा, ग्रहण करने में असमर्थ रहते हैं। उनके लिए ऑनलाइन कोर्स बल्कि ''यू ट्यूब'' एक सशक्त माध्यम है संगीत को सीखने एवं समझने का।[3]

ठंडे देशों में दूरस्थ शिक्षा की शुरूआत पहले इसलिए हुई क्योंकि 0 से 40^0 नीचे तापमान पर छात्र कक्षा में बैठ ही नहीं सकते थे। इसी कारणवश लेक्चर्स को टेक्स्ट और ऑडियो फाइल में बदला गया तथा इंटरनेट के माध्यम से हर विद्यार्थी से सम्पर्क स्थापित किया गया।[4] भारत में भी हिमाचल, जम्मूकश्मीर ठंडे प्रदेश हैं अतः इस प्रकार की शिक्षा देना और लेना लाभप्रद सिद्ध हो रहें हैं।

---

1. www.opencolleges.edu.au
2. वही
3. वही
4. डॉ. नमिता यादव, संगीत, पृ.सं.–22

इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए हम यह कह सकते हैं कि यह शिक्षा प्रणाली अध्यापन एवं शिक्षण के तौर तरीकों तथा समय निर्धारण के साथ–साथ गुणवत्ता संबंधी अपेक्षाओं से समझौता किए बिना प्रवेश मानदण्डों के संबंध में बड़ी उदार है।[1]

डॉ. शंकर सिंह के अनुसार– उच्च शिक्षा के क्षेत्र में हमारे देश में दूरस्थ शिक्षा के उद्देश्य से स्थापित किए विश्वविद्यालय मुक्त विश्वविद्यालय हैं। ऐसे विश्वविद्यालय भारत, यू.के. तथा अन्य देशों में कार्यरत हैं। इन विश्वविद्यालयों में प्रवेश अथवा नामांकन के लिए विद्यार्थियों पर उनके पूर्व शैक्षिक योग्यताओं की जरूरत का बंधन नहीं लगाया जाता है। इस दूरस्थ शिक्षा प्रणाली ने समाज के दूर–दराज के क्षेत्रों में रहने वाले वर्गों तक पहुँचने में बहुत सहायता की है।[2]

यहां कई ऐसी कड़ियां प्रस्तुत की जा रही है जो दूरस्थ शिक्षा की नीतियों एवं उसकी प्रासंगिकता को और विस्तृत रूप से परिभाषित करती है।

दूरस्थ शिक्षाः– कई अवसर 'ओपन' हैं अब–

- http://www.livehindustan.com/news/edu/naidishaye/article1-open-university-269-276-173077html.

- उच्चतर शिक्षा क्षेत्र में दूरस्थ शिक्षा से संबंधित नई नीतिः– http://www.education.nic.in/hindiweb/DL/DL-

1. मुक्त ज्ञानकोष, विकिपीडिया
2. दूरस्थ शिक्षा–विकिपीडिया

newspolicy.pdf.

- राज्यपाल ने किया दूरवर्ती–व्यावसायिक शिक्षा के क्रान्तिकारी अभियान का शुभारम्भः– http://www.electroniki.com/ARTICLE-1.html.

- The International Association for K-12 Online Learning (http://www.inacol.org)

- The United States Distance Learning Association (http://www.usdla.org)

- An Instructional Media Selection Giude for Distance Learning. (http://www.usdla.org/html/resources/ 2_USDLA)

- Instructional_Media_Selection_Guide.pdf, an official publication of the United States Distance Learning

- http://www.txdla.org/The Texas Distance Learning Association (TxDLA)[1]

1. hi-wikipedia-org/wiki/दूरस्थ_शिक्षा

स्मिता चौधरी ने दूरस्थ शिक्षा की उपादेयता को कुछ इस तरह से व्यक्त किया हैः–

"Distance Learning has provided An Excellent platform to students for learning at their own convienience and at their own place. In this rapidly changing system of learning, if you are working and need a good degree as well as specialized knowledge to enhance your career then Distance Education can be your cup of tea."[1]

यहां प्रस्तुत सारणी में वर्ष 2009–10 तक की दूरस्थ शिक्षण संस्थाओं की संख्या एवं उनमें नामांकित विद्यार्थियों की संख्या को दर्शाया गया है।[2]

REACHING OUT

Year	Distance teaching institutions	Student enrollment
1962	1	1,112
1970-71	17	29,500
1980-81	34	1.6 lakh
1985-86	40	3.5 lakh
1990-91	51	5.9 lakh
1995-96	57	10.3 lakh
2000-01	79	13.7 lakh
2005-06	117	18.3 lakh
2009-10	200	36.6 lakh

1. www.citehr.com
2. www.archive.financialexpress.com

इस सारणी के आधार पर यह तो स्पष्ट होता है कि दूरस्थ शिक्षा प्रणाली ने हर वर्ष प्रगति की है और दूरस्थ शिक्षा पद्धति को प्रभावी बनाया है। डेली पोस्ट नामक समाचार पत्रिका जो कि जालंधर में प्रकाशित होती है, में अशोक मित्तल जी चांसलर ऑफ लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी (एल.पी.यू.) ने दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के संबंध में कहा है किः–

[1]

DAILYPOST 30 October 2011

'LPU has opened 155 centres for distance learning'

DP **CORRESPONDENT**
Jalandhar

Ashok Mittal, Chancellor, Lovely Professional University (LPU) has said the university had opened a total 155 study centres for distance learning programmes across the country.

In a statement here on Saturday, he added the states where these centres had been opened included Punjab, New Delhi and NCR, Andhra Pradesh, Chandigarh, Bihar, Gujarat, Haryana, Himachal Pradesh, Maharashtra, Orissa, Rajasthan, Uttar Pradesh, West Bengal and Jammu and Kashmir.

"These centres are aimed to provide both academic as well as administrative support to students", he said, adding LPU had opened two study centres in Jalandhar also.

Proud student at LPU Distance Education Centre HARINDER PAL

Mittal added that distance education courses were an efficient way for the students to enhance learning and to expand access to higher education.

He added by opening the Lovely Professional University study centres for distance learning, they were ensuring that an innovative pedagogy was developed to help students get education which was flexible, economical, convenient and effective by all means.

He said the recognised distance education programmes were considered equivalent to their corresponding regular programmes.

---

1. www.Lpu.in

(Distance Education Secenario in India)

भारत में दूरस्थ शिक्षा प्रणाली का दृश्य लेख इस प्रकार हैः–[1]

- 14 (ओपन यूनिवर्सिटी)
  खुले विश्वविद्यालय – 1 नेशनल यूनिवर्सिटी और 13 स्टेट ओपन यूनिवर्सिटीस्
- 150 Dual mode providers of higher education
- 120 Open School

कुछ सिविल कर्मचारियों ने दूरस्थ शिक्षा के संबंध में कहा है कि ओपन लर्निंग स्कूल्स सफलताओं को भी निर्माण भी करते हैं। उनके विचार कुछ इस प्रकार हैः–

हिन्दी विषय में बी.ए. की डिग्री पूरी करने के पश्चात् IGNOU (Indira Gandhi National Open University) से कुमार ने 2007 सिविल सेवा परीक्षा को उत्तीर्ण किया और उसके पश्चात् डबल एम.ए.पहले हिन्दी में और फिर पब्लिक पोलिसी में उसी विश्वविद्यालय से उत्तीर्ण किया।

"I think it should not be generalised that distance learning is inferior to formal education."[2]

Keshvendra Kumar
Distt. Collector, Wayanad
Kerala, UPSC Rank 45, 2007.

1. www.slideshare.net
2. www.hidustantimes.com

कोमल गानात्रा के शब्दों में:–

"Formal education system doesn't have the Capacity to cover each and every student, future belogs to online & distance education."[1]

Komal Ganatra
Adminstrative Officer,
Defence hq, Delhi,UPSC Rank 592, 2012.

आनन्द पटेल के शब्दों में:–

"Distance learning should be promoted in the country so that a student residing in the remotest part of country can avail it."[2]

Anand Patel
Distt. development officer,
Bharuch, Gujrat, UPSC Rank 32,2010

इस प्रकार दूरस्थ शिक्षा प्रणाली तीव्रोतर उन्नति के शिखर पर पहुंच रही है और जीवन के हर क्षेत्र में हर समय हर परिस्थितिनुसार शिक्षा

1. www.hidustantimes.com
2. वही

के अवसर उपलब्ध कराती है। जीवन के हर क्षेत्र में हम ऑनलाइन लर्निंग, टीचिंग आदि का प्रयोग देख रहे हैं। उदाहरणः– ऑनलाइन टीचिंग, ऑनलाइन लर्निंग और चाहे ऑनलाइन शोपिंग हो।

दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के लिए आवश्यक है इंटरनेट सिस्टम अच्छा एवं प्रभावी हो। अपनी बात को दूसरे तक पहुंचाने के लिए एक अच्छा नेटवर्क होना बहुत आवश्यक है साथ ही टेक्नोलॉजी का ज्ञान होना भी आवश्यक है कम्प्यूटर, इंटरनेट को उपयोग में लेने की जानकारी भी होनी चाहिए।

1

टेक्नोलॉजी की सहायता से दूरस्थ शिक्षा प्रणाली को और प्रभावी बनाने का प्रयास किया जा रहा है। अतः अन्य विषयों की भांति संगीत को भी दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के माध्यम से सीखा जाने लगा है। संगीत शिक्षा की प्रगति के लिए भी जहां जिसकी और जैसी आवश्यकता हो उसके

1. www.gizmag.com

अनुरूप इलेक्ट्रोनिक उपकरणों का उपयोग एवं सहयोग लिया जाने लगा है जिसके भावी परिणाम भी अच्छे दिखाई दे रहे हैं।[1]

यही नहीं इस विधा को और सुलभ एवं जनप्रिय बनाने के लिए विद्यार्थी घर बैठे संगीत शिक्षा ग्रहण कर सकता है। इसके लिए दूरस्थ शिक्षा प्रणाली ने कई ऐसे आयाम सुलभ करा दिए हैं जैसे– कम्प्यूटर और विभिन्न सीडीज़ (CDs) के माध्यम से संगीत की दूरस्थ शिक्षा प्रणाली की उपादेयता सिद्ध हुई है।[2]

आधुनिक युग में संगीत का क्षेत्र इतना विस्तारित हो चुका है कि इसमें दूरस्थ शिक्षा प्रणाली अथवा ऑनलाइन, टीचिंग एवं लर्निंग ने अपना अभूतपूर्व योगदान दिया है। ऑनलाइन संगीत डिग्री और विषय (Course) आज विद्यार्थियों के लिए सुलभ है।

ऐसे विद्यार्थी जो संगीत की शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं किन्तु किन्हीं कारणवश (जैसे शारीरिक कमी, धन की कमी आदि) यह शिक्षा प्राप्त करना उनके लिए कठिन हो जाता है तो ऐसी परिस्थिति में ऑनलाइन स्कूल और 'पत्राचार' कोर्स उनके लिए ऐसे सुअवसर उपलब्ध करवाता है जिसकी सहायता से उन विद्यार्थियों की हार्दिक इच्छा की पूर्ति होती है। आज कई ऐसे विश्वविद्यालय हैं जो ऑनलाइन कोर्स उपलब्ध करवा रहे हैं और जिसे विद्यार्थी घर बैठे और अपने उचित समयानुसार ग्रहण कर सकता है। उसके लिए सर्वप्रथम विद्यार्थी को यह पता करना होता है कि महाविद्यालय अथवा विश्वविद्यालय मान्यता प्राप्त हो और इसके पश्चात्

1. डॉ. महारानी शर्मा, संगीत कला विहार, अगस्त 2010
2. वही

कितनी फीस अथवा अतिरिक्त राशि है इसका ज्ञान आवश्यक है। साथ ही शिक्षक के बारे में सम्पूर्ण जानकारी लेना भी आवश्यक होगा। भली भांति जानकारी प्राप्त करने के पश्चात् ही नामांकन किया जाना चाहिए।[1] अन्य विषयों की भांति ही इस प्रणाली को संगीत शिक्षा ने भी अपनाया है और इसका लाभ सभी विद्यार्थियों ने उठाया है। भले ही संगीत विषय, विद्यालय पाठ्यक्रम का ही एक हिस्सा है किन्तु फिर भी विद्यालय के बाहर भी ऐसी कई संस्थाएं है जो कि मान्यता प्राप्त है और संगीत की शिक्षा दे रही है।

दूरस्थ शिक्षा पूरे तरीके से विद्यार्थियों को शिक्षा उपलब्ध करवा रही है। रिकॉर्डिंग मिक्सिंग और डिजिटलाईजिंग के कोर्स भी इस प्रणाली के द्वारा कराए जाते हैं। शोधों के आधार पर यह भी पाया गया है कि चिकित्सा के क्षेत्र में भी संगीत चिकित्सा पाठ्यक्रम उपलब्ध है। सूक्ष्म एवं विशिष्ट पाठ्यक्रम जैसे नोटेशन सिस्टम, कॉन्सर्ट हॉल, आर्किटेक्चर कोर्स आदि भी लिए जाते हैं, जो कि एक प्रस्तुतकर्ता और निर्माता को संगीत की आधारभूत जानकारी का ज्ञान कराते है जिससे और प्रभावी कार्यक्रम को जनता के समक्ष प्रस्तुत किया जा सके।[2]

संगीत में भी योग्य एवं उचित सॉफ्टवेयर जो कि योग्य डाटाबेस से संयुक्त हो, उसकी आवश्यकता होती है, जो ऑडियो, वीडियो, टेक्स्ट के चयन व निर्माण के साथ– साथ उनका संरक्षण भी कर सके। जब तक सॉफ्टवेयर इन सब विशेषताओं के साथ होता है जो उचित डाटा को सुरक्षित रखता है तो वह उपर्युक्त सॉफ्टवेयर होता है। INMUSNET जो INFLIBNET2 के बाद निर्मित किया गया वह टेक्स्ट को व चित्रों को

1. www.musiced.about.com
2. www.omenad.net

सुरक्षित करने में काफी हद तक अपनी भूमिका निभाता है।[1]

इस प्रकार इन सभी तकनीकियों की सहायता से इस प्रणाली की सार्थकता दिनों दिन बढ़ती जा रही है। किसी भी तकनीकी को प्रयोग में लाने के लिए आवश्यक तथ्यों को ध्यान में रखना अति आवश्यक है जैसे कम्प्यूटर, इंटरनेट, नेटवर्क, ब्रोडकास्टिंग सिस्टम, ऑडियो, वीडियो क्वालिटी और क्लीयरटी आदि।

इंटरनेट अच्छी कम्पनी का होना आवश्यक है ताकि किसी भी प्रकार की परेशानी का सामना शिक्षा ग्रहण करते वक्त न करना पड़े साथ ही उचित नेटवर्क होगा तो शिक्षा ग्रहण करना और भी आसान व सुलभ व सुन्दर होगा। साथ ही ऑडियो एवं वीडियो क्वालिटी का भी ध्यान रखना आवश्यक है। जब तक एक से दूसरे तक आवाज़ स्पष्ट सुनाई न देगी तो अध्ययन करना व्यर्थ होगा। अतः ऑडियो व वीडियो सिस्टम भी उचित होना चाहिए।[2]

यह भी आवश्यक है कि प्रत्येक देश के ब्रोडकास्टिंग सिस्टम को हम समझें। "The electronics communication encompasses telecommunication, broadcasting and information technology, leading to a global information, infrastructura which is capable of carrying any type of information like text data, video or vioce."[3]

---

1. www.inflibnet.uc.in

2. चर्चा, डॉ. विकास भारद्वाज, 17 मई 2015, कोटा (राज.), प्रातः 11:00 बजे

3. विजयनन्दा के.आनन्द सागर के., इन्फोरमेशन एण्ड कम्यूनिकिशन टेक्नोलॉजी;एन इण्डियन पर्सपेक्टिव (ओन इंटरनेट)

"The transmission system can be delivery media like satelite and cable. Thus the broadcaster has become an information provider."[1]

इस प्रकार दूरस्थ शिक्षा प्रणाली वर्तमान समय में अपनी प्रासंगिकता बनाए हुए है। "The most advantage of online distance education is to earn a degree from one's home or work place. we can get knowledge and information through charts, maps, graphs, moving images, slides and video clippings and even audio recordings via internet. It helps to understand the entire syllabus without the help of a teacher. The students are able to interact with their peers through online class projects-mails and also with the help of online conferencing and chat makes learning easier and entertaining. The availability of online libraries with their huge collection of books has also made the learning process easier and worthwhile."[2]

यह प्रणाली आज के युग में प्रत्येक व्यक्ति की आवश्यकताओं की पूर्ति करती है। आने वाले भविष्य में यह न केवल अच्छे परिणाम लेकर प्रस्तुत होगी बल्कि जन–जन के लिए सुलभ होगी।

---

1. www.shodhganga.inflibnet.ac.in
2. www.slideshare.net

कभी भी कोई भी अपनी शिक्षा ग्रहण करने की इच्छा को जो किन्हीं परिस्थितिवश ग्रहण पूरी नहीं हो पाई थी, उसे ग्रहण कर पायेगा। संगीत की प्रायोगिक शिक्षा ग्रहण कर पायेगा वीडियो कॉनफ्रेंसिंग के माध यम से। यह माध्यम सभी दूरस्थ शिक्षा के प्रकारों में सबसे अधिक सशक्त माध्यम है, जो वर्तमान समय की परिस्थितियों के अनुकूल हैं।

□□□□□

पंचम अध्याय

‘‘भारतीय संगीत में दूरस्थ शिक्षा प्रणाली का महत्व एवं औचित्य’’

पंचम अध्याय

''भारतीय संगीत में दूरस्थ शिक्षा प्रणाली का महत्व एवं औचित्य''

भारतीय संगीत कला अपने प्राचीनतम ज्ञान के साथ अभी तक नवीनता समेटे हुए है। आज तक इस पवित्र एवं सुन्दर कला की प्रगति–जाति, प्रबंध, ख्याल, ध्रुवपद, धमार, टप्पा, ठुमरी, ऋतुगान, लोकगीत, भक्ति गीत इस प्रकार कई शैलियों में हुई। सम्पूर्ण विश्व में भारत ही केवल एक मात्र ऐसा कलाप्रेमी देश है जो सुमधुर संगीत के अधिकाधिक विविध प्रकारों से जाना जाता है।

आज राज्यों की एवं केन्द्रिय सरकारें भारतीय कलाओं के पुनरूत्थान में पूर्ण सहयोग प्रदान कर रही है। गत कई वर्षों में ऐसे उच्च श्रेणी के कलाकार जैसे भास्कर बुवा, मियाँ जान, अब्दुल करीब खाँ, पलुस्कर जी, फैयाज़ खाँ, हैदर खाँ, वज़ीर खाँ, हफीज़ खाँ, पं. औंकारनाथ ठाकुर, बड़े गुलाम अली खाँ आदि दिवंगत होकर हमसे बिछुड़ गए हैं। किन्तु इनमें से ही कई गायकों और वादकों के रिकॉर्ड आज भी विद्यमान हैं जिन्हें सुनकर भावी पीढ़ी उनका अनुकरण कर लाभान्वित हो सकती है।

आधुनिक समय में भी समस्त मूर्धन्य कलाकारों के घरानेदार शिष्य आज भी शिष्यों को शिक्षा प्रदान कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त स्वयं

की संस्थाऐं भी कार्यरत हैं जो संगीत के प्रचार–प्रसार में सक्रिय रूप से अपना योगदान दे रही हैं। इन्हीं घरानेदार कलाकारों में से कई कलाकार ऐसे हैं जो दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से संगीत की शिक्षा प्रदान कर रहे हैं। उदाहरणार्थः– भारतरत्न पं. भीमसेन जी जोशी जी के पुत्र (किराने घराने से संबंधित), श्री आनन्द भीमसेन जोशी जी वीडियो कॉनफ्रेंसिंग के माध्यम से दूर बैठे छात्र–छात्राओं को संगीत की विधिवत शिक्षा प्रदान कर रहे हैं। साथ ही श्री राजेन्द्र कण्डलगांउकर (किराना घराना), भी ऑनलाइन विधि द्वारा उत्तर भारतीय संगीत की शिक्षा प्रदान कर रहे हैं।

इसी प्रकार से उत्तर भारतीय संगीत के क्षेत्र में बहुत से ऐसे घराने से संबंधित कलाकार हैं, जो वीडियो कॉनफ्रेंसिंग के माध्यम से संगीत सिखा रहे हैं और इसी के साथ ही साथ दक्षिण भारतीय संगीत के भी विभिन्न कलाकार उदाहरणार्थः– दक्षिण भारतीय संगीत का प्रसिद्ध स्कूल "Carnatic Vocal Music School, Bangalore, Karnataka" के प्रमुख विद्वान् कलाकार श्री लालकुडी जयरमन (प्रसिद्ध वॉयलिन वादक) से श्री शंकरीकृष्णन् और श्री शंकरीकृष्णन् से सुश्री वी. विजयलक्ष्मी ने संगीत की शिक्षा प्राप्त करी और वर्तमान समय में वीडियो कॉनफ्रेंसिंग के माध्यम से संगीत की शिक्षा यू.एस.ए., सिंगापुर आदि स्थानों के शिष्यों को प्रदान कर रही हैं। यह केवल एक ही स्कूल नहीं है, जो घरानेदार रूप से चल रहा हो। इसके अलावा बहुत से ऐसे स्कूल्स हैं जो नई पीढ़ी को संगीत की शिक्षा प्रदान कर रहे हैं और साथ ही दूरस्थ संगीत शिक्षा को भी उतना ही महत्व दे रहे हैं जितना कि पूर्व में सीना–ब–सीन तालीम को देते थे।

आकाशवाणी के पास आज भी कई दिग्गज कलाकारों के रिकॉर्ड प्राप्त हैं। इसी संग्रह का टेप के ऊपर पुनर्मुद्रण करने से उसको स्वयं के और संगीत के विद्यार्थियों के काम में भी लाया जा सकता है।

जैसा हमें विदित हो चुका हैं कि जीवन के हर पहलू पर कम्प्यूटर और इंटरनेट का प्रभाव दिखाई देना लगा है। शिक्षा के क्षेत्र में इसकी उपयोगिता और भी अच्छी तरह से सिद्ध हो चुकी है।

वर्तमान युग क्रान्ति का युग है। सनातन शिक्षा पद्धति में बदलाव अत्यन्त आवश्यक है। दूरस्थ संगीत शिक्षा, गुरू शिष्य परम्परा के लिए लाभकारी सिद्ध होगी। संगीत की सृजन एवं लोकव्यापीकरण में दूरस्थ संगीत शिक्षा का बहुत बड़ा महत्व है।[1]

प्राध्यापक डॉ. रागिनी त्रिवेदी ने कहा है कि ''दूरस्थ शिक्षा पद्धति से जब एकलव्य तैयार हो सकता है तो आज के युग में वर्तमान संसाधनों का उपयोग कर कई एकलव्य क्यों तैयार नहीं किए जा सकते ?''[2]

रविन्द्र नाथ टैगोर ने भी कहा है कि ''यदि हमारे बालक एवं बालिकाएं विद्यालय और महाविद्यालय तक जाने में असमर्थ हैं तो विद्यालयों की शिक्षा को प्रत्येक घर तक पहुँचाना एक आवश्यक कार्य है।''[3]

संगीत कला की उपयोगिता को समझाते हुए फ्लोरिडा म्यूज़िक एजुकेटर्स एसोसिएशन के अनुसार "Music and the fine arts have

1. संगीत पत्रिका, पृ.सं.–15, अक्टूबर 2002
2. अन्तर्राष्ट्रीय परिसंवाद, भोपाल, 27 नवम्बर 2000
3. डॉ. विजनना भटहार– हेरल्डिंग एजुकेशन–टू–होम (ऑन इंटरनेट)

been a significant portion of every culture's educational system for more than 3000 years. The human brain has been shown to be 'hard wired' for music; there is a biological basics for music being an important part of human experience. Music and Arts surrounded daily life in our present day culture. Most present days artists, architechts and musicians acquired their interests during public school fine arts classes... Education without the fine arts in fundamentally improverished and subsequently leads to an impoverished society."[1]

विलियम इयरहार्ट (फोर्मल प्रेसीडेन्ट ऑफ द म्यूज़िक एजुकेटर्स इन नेशनल कॉन्फ्रेंस) ने भी कहा है कि ‘‘संगीत, ज्ञान के सभी क्षेत्रों जैसे गणित, विज्ञान, भूगोल, इतिहास, विदेशी भाषा, शारीरिक शिक्षा और व्यवसायिक शिक्षा आदि को बढ़ाता है।’’[2]

सगीत भावनाओं की अभिव्यक्ति करने की भाषा है इस कला, संस्कृति को आजीवन जीवित रखने के लिए दूरस्थ संगीत शिक्षण प्रणाली बहुत ही प्रभावी एवं अच्छी प्रणाली है।

उन विद्यार्थियों के लिए जो किन्हीं कारणवश जैसे भौगोलिक परिस्थितियाँ, अत्यधिक दूरी, उचित परिस्थिति का अभाव आदि संगीत

1. www.flmusiced.org
2. Morrsison Steven J. "Music Students and Academy Growth"- EBSCO. Web-20, Feb. 2010

की शिक्षा ग्रहण नहीं कर पाए किन्तु संगीत में अत्यधिक रूचि रखते हैं, ऐसे कई दूरस्थ शिक्षण विश्वविद्यालय हैं जो संगीत की शिक्षा देते हैं और प्रमाण पत्र कोर्स एवं डिग्री उपलब्ध करवाते हैं। उदाहरणार्थः–

1. बर्कली ऑनलाइनः–

यह संगीत का एक ऐसा विश्वविद्यालय है जो विद्यार्थियों के लिए कई व्यवसायिक पाठ्यक्रम, डिग्री प्रोग्राम, स्वयं अपना प्रोग्राम बनाना एवं कई ऐसे मल्टीकोर्स सर्टिफिकेट्स एवं व्यक्तिगत कोर्सेज़ उपलब्ध करवाता है। इसके पाठ्यक्रम में संगीत का निर्माण, प्रस्तुति, संगीत व्यवसाय, गीत लिखना, वाद्यवृन्दीकरण सब कुछ सिखाया जाता है। बर्कली शिक्षकों द्वारा और पूरे विश्व में मान्य है। स्वयं ए.आर.रहमान जो प्रसिद्ध संगीत निर्माता निर्देशक हैं ने इसी विश्वविद्यालय से ऑनलाइन संगीत शिक्षा ग्रहण की और वर्तमान समय में ऑनलाइन विधि के माध्यम से संगीत की शिक्षा प्रदान कर रहे हैं।[1]

A.R. REHMAN AT BERKLEE COLLEGE OF MUSIC

1. www.musiced.about.com

2. वेलीसिटी स्टेट यूनिवर्सिटीः–

यह विश्वविद्यालय वेलीसिटी में नोर्थ डाकोटा में स्थित है, यह पूरी तरह से दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के माध्यम से संगीत विषय में अण्डरग्रेजुएट प्रोग्राम उपलब्ध करवाता है। ऑनलाइन कोर्सेज़ से संगीत की थ्योरी, संगीत का इतिहास, पियानो सिखना आदि उपलब्ध करवाता है। यह कोर्स सभी के लिए उपलब्ध हैं। संगीत शिक्षक भी स्वयं MTNA (Music Teachers National Association) की तैयारियों में है।

3. मेरी पेपर्ट स्कूल ऑफ म्यूज़िकः–

यह विश्वविद्यालय संगीत शिक्षा में मास्टर डिग्री (एम. म्यूज़) उपलब्ध करवाता है।

4. जुड्सन कॉलेजः–

यह विश्वविद्यालय संगीत शिक्षा में बी.ए. डिग्री उपलब्ध करवाता है।

5. ओबर्न यूनिवर्सिटीः–

यह विश्वविद्यालय संगीत शिक्षा में एम.ए. डिग्री उपलब्ध करवाता है।

6. बॉस्टॉन यूनिवर्सिटीः–

यह विश्वविद्यालय संगीत शिक्षा में एम.ए. डिग्री एवं डॉक्टर ऑफ म्यूज़िकल आर्ट्स इन म्यूज़िक एजुकेशन उपलब्ध करवाता है।

7. स्टीफन एफ.आस्टिन स्टेट यूनिवर्सिटीः–

यह विश्वविद्यालय संगीत शिक्षा में एम.ए. डिग्री उपलब्ध करवाता है।

8. यूनिवर्सिटी ऑफ हवाई एट मनोआः–

यह विश्वविद्यालय संगीत शिक्षा में एम.ए. डिग्री उपलब्ध करवाता है।

9. यूनिवर्सिटी ऑफ नोर्थन लोबाः–

यह विश्वविद्यालय इन्डिपेन्डेन्ट स्टडी एवं संगीत शिक्षा में एम.ए. डिग्री उपलब्ध करवाता है।

10. यूनिवर्सिटी ऑफ साउथर्न मिसिसिप्पीः–

यह विश्वविद्यालय बहुत सारे संगीत विषयक कोर्सेज़ जैसे सांगीतिक मनोविज्ञान, सांगीतिक मनोरंजन आदि उपलब्ध करवाता है।

11. यूनिवर्सिटी ऑफ नोर्थ टेक्सासः–

यह विश्वविद्यालय संगीत शिक्षा में एम.ए. डिग्री उपलब्ध करवाता है।

12. वेस्ट टेक्सास ए.एण्ड.एम. यूनिवर्सिटीः–

यह विश्वविद्यालय संगीत शिक्षा में एम.ए. डिग्री उपलब्ध करवाता है।

13. यूनिवर्सिटी ऑफ साउथर्न मैनेः–

यह विश्वविद्यालय संगीत से संबंधित धुनें बनाना सिखाता है।

---

14. इण्डियाना यूनिवर्सिटीः–

यह विश्वविद्यालय ए.एससी. इन म्यूज़िक टेक्नोलॉजी एवं कई ऑनलाइन प्रोग्राम उपलब्ध करवाता है।

15. वेंधम एकेडमी ऑफ म्यूजिकः–

यह एकेडमी पियानो एजुकेशन में टेक्नीकल डिप्लोमा करवाती है।

16. पोडन्ट ब्लेंक म्यूज़िक स्कूलः–

यह विश्वविद्यालय कई व्यवसायिक प्रोग्राम उपलब्ध करवाता है जैसे संगीत निर्माण, ध्वनि रिकॉर्डिंग, ऑडियो निर्माण, संगीत धुन निर्माण, ध्वनि डिजाइन, ऑडियो मिक्सिंग एवं गीत लेखन आदि।

17. ज्योर्जिआ पेरीमिटर कॉलेजः–

इस विश्व विद्यालय के ऑनलाइन प्रोग्राम सहायक प्रो. स्लेवा माइल फ्रूडिहेन्टो द्वारा सिखाए जा रहे हैं। कई तरह के थ्योरी ऑनलाइन प्रोग्राम भी सिखाए जाते हैं। (1–17)[1]

संगीत की सभी विधाऐं चाहे गायन हो वादन हो या फिर नृत्य सभी में दूरस्थ शिक्षा प्रणाली कारगर है। सभी कलाओं को कला प्रेमी इस प्रणाली की सहायता से सीख सकते हैं। इंटरनेट पर कई ऑनलाइन संगीत कक्षाऐं उपलब्ध हैं जैसेः–

- Online Classical Vocal Music Class.
- Online Guitar Class.

1. www.musiced.about.com

- Online Dance (Classical/Western) Class.
- Online Sitar Class.
- Online Piano Class etc.

इस संदर्भ में दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के माध्यम से सितार वाद्य को सिखाने वाले एक अनुभवी कलाकार डॉ. विकास भारद्वाज से हुई बातचीत में उन्होंने स्पष्ट किया कि वो यू.एस.ए. (USA) में स्थित श्री हर्ष खींची जी को सितार की शिक्षा प्रदान कर रहे हैं जिसमें उन्हें किसी तरह की कोई परेशानी का सामना नहीं करना पड़ता। वीडियो कॉनफ्रेंसिंग के माध्यम से वो उन्हें 'राग देस' सिखा रहे थे वे माइक्रोफोन का उपयोग स्पीकर्स के स्थान पर करते हैं, ताकि आवाज़ स्पष्ट सुनाई दे।[1]

उनसे मेरे द्वारा पूछे गए प्रश्न कुछ इस प्रकार के थे जिनके उन्होंने बड़ी ही सुलभता के साथ उत्तर दिएः–

प्रश्न 1– विकास जी क्या आपको दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के द्वारा संगीत सिखाना सुलभ लग रहा है ?

उत्तरः– जी हाँ, बिल्कुल। पिछले चार–पाँच वर्षो से मैं ऑनलाइन कक्षाऐं ले रहा हूँ। मुझे कोई परेशानी का सामना नहीं करना पड़ता है।

प्रश्न 2– वीडियो कॉनफ्रेंसिंग में आपको कभी कोई तकलीफ हुई ?

---

1. चर्चा, डॉ. विकास भारद्वाज, 27 जनवरी 2012, कोटा (राज.) प्रातः 11:30 बजे

उत्तरः– यदि इंटरनेट कनेक्शन उत्तम क्वालिटी का हो तो कोई समस्या नहीं होती।

प्रश्न 3– क्या इसमें गुरू वो सब शिक्षागत बातें विद्यार्थी को समझा पाते हैं जो सीना–ब–सीना अर्जित की जाती हैं ?

उत्तरः– जी, मेरे हिसाब से जब किसी विद्यार्थी की आवश्यकताओं की पूर्ति हो रही है या किसी कारणवश वो सीना–ब–सीना तालीम नहीं ले पा रहा हो अपने पंसदीदा शिक्षक से तो वीडियो कॉनफ्रेंसिंग एक ऐसा उपयुक्त माध्यम हैं जो इन समस्याओं का निवारण करता है। अतः मुझे इसमें किसी प्रकार से असहज महसूस नहीं होता।

प्रश्न 4– क्या आपको ध्वनि ठीक प्रकार से सुनाई देती है ?

उत्तरः– यदि शिक्षक बजाये और विद्यार्थी सुने तथा जब विद्यार्थी बजाये और शिक्षक सुने तो ध्वनि स्पष्ट रूप से सुनाई देती है। एक साथ बजाने पर परेशानी आती है। (प्रश्न 1–4)[1]

---

1. चर्चा, डॉ. विकास भारद्वाज, 27 जनवरी 2012, कोटा (राज.) प्रातः 11:30 बजे

साक्षात्कार–डॉ. विकास भारद्वाज जी के साथ, मई 2014

ऐसे कई विद्यालय एवं विश्वविद्यालय भारत में भी विद्यमान हैं, जो संगीत की शिक्षा पत्राचार के माध्यम से एवं ऑनलाइन विधि द्वारा प्रदान करते हैं। जिन विद्यार्थियों ने केवल 10+2 लेवल पास किया है और किसी भी विश्वविद्यालय से बी.ए. की डिग्री प्राप्त कर चुके हैं वह भी बी. म्यूज़िक कर सकते हैं। उनमें से ऐसे कई इन्स्टीट्यूशन्स हैंः–

- अन्नामलाई यूनिवर्सिटी, तमिलनाडू
- इन्स्टीट्यूट ऑफ कोरेस्पोन्डेन्स एजुकेशन
- यूनिवर्सिटी ऑफ मद्रास
- केलिकर आर्ट्स कॉलेज, केरला
- भारथीदसन विश्वविद्यालय, तमिलनाडू
- क्वीन मैरी कॉलेज, चैन्नई
- भारथीयार यूनिवर्सिटी कोयम्बटूर, तमिलनाडू
- बंगाल म्यूज़िक कॉलेज, कोलकाता आदि।[1]

संगीत हमारी जिन्दगी में एक अहम भूमिका रखता है, यह हमारी संस्कृति की धरोहर है। संगीत वो कहता है जो शब्द नहीं कहते।

"Music helps us speak words
We can not always express."

बॉस्टॉन यूनिवर्सिटी संगीत शिक्षा के लिए ऑनलाइन टीचिंग के माध्यम से ऐसे अवसर उपलब्ध करवाती है जो शिक्षार्थियों की तीव्र उन्नति

1. www.bestindia.edu.com

के लिए आवश्यक है। यह विश्वविद्यालय बी.ए.,एम.ए. एवं डॉक्टर ऑफ म्यूज़िकल आर्ट्स इन म्यूज़िक एजुकेशन के कोर्सेज़ भी करवाती है।[1]

इंडियन डांस स्कूल एक ऐसी चेरिटेबल संस्था है जो गौरी जोग (Under IRS Section 501 (3) (C) With EIN 26-3110772) के द्वारा चलाई गई है जो कत्थक नृत्य द्वारा शारीरिक स्वस्थ्यता को बढ़ावा दीजिए और भारतीय संस्कृति की एक अनूठी कला को सिखाती है।[2]

1000 से भी अधिक विद्यार्थियों को सन् 1999 से यह विद्यालय आधारभूत नृत्य शिक्षा दे रहा है। जरूरतमंदो को यह विद्यालय मुफ्त में भी नृत्य की शिक्षा प्रदान करता है। यह विद्यालय ऑनलाइन कत्थक शिक्षा भी प्रदान करता है।[3]

नवम्बर 2014 तक यह विद्यालय लगभग 350 डांस शो नोर्थ अमेरिका और भारत में कर चुका है, जिसमें कृष्ण लीला, शकुन्तला, झांसी की रानी, कत्थक यात्रा, ईस्ट मीट वेस्ट, फायर–द– फेयरीटेल, रामायाणा, डांस फॉर औलम्पिक आदि शामिल है।[4]

भारतीय संगीत ने भी इस प्रणाली को काफी हद तक अपना लिया है। वर्तमान समय में भारत में ऐसे कई विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय एवं छोटी–बड़ी संगीत एकेडमीज़ कार्यरत हैं जो ऑनलाइन अथवा ई–लर्निंग के माध्यम से संगीत की शिक्षा प्रदान कर रहे हैं और उसे जन–जन तक पहुँचाने का भरसक प्रयत्न कर रहे हैं। उनमें से कुछ के नाम

1. **www.musiceducation.bu.edu**
2. **www.gaurijog.com**
3. वही
4. वही

अधोलिखित हैंः–

1. Heralding Education to Home through e-learning-Vijanana Bhathar

2. Distance Education-BLSI-Alagappauniversity

3. Madhya Pradesh Bhoj University

4. ICOM-International College of Music, Kuwallalampur, Malasia

5. International Academy of Indian Classical Music & Art

6. Raga Academy of Indian Music

7. MLN Academy of Music and Dance, Hyderabad

8. Saraswathi Music Academy

9. Vibration Academy of Music, Ahemdabad

10. Swarbhoomi Academy of Music

11. Shankar Mahadevan Academy of Online Music

12. A.R. Rehman Academy of Online Music

13. Varanasi Academy of Indian Classical Music

14. Deobrat Mishra Academy of Indian Classical Music

15. Divya Indian Music Academy

16. Online Classes of Indian Vocal Music byDeshpande

17. GAALC Academy of Indian Music

18. Kalpavriksha Online College of Arts

19. Carnatic Music Lessons Online by Sarali on Skype

20. The Global School of Music and Dance

21. University of Mumbai-Open & Distance Learning

22. Carnatic University of Music

23. Soma Sarkar Online Music Classes

24. Madhuri Dixit Online Dance Classes

इस प्रकार यह और ऐसी कई संस्थाऐं हैं जो ऑनलाइन टीचिंग के माध्यम से संगीत की शिक्षा विद्यार्थियों को प्रदान कर रही हैं जो कि वर्तमान समय में इसकी महत्ता को सिद्ध करती हैं।[1]

डॉ. रागिनी त्रिवेदी के अनुसार ''20वीं शताब्दी के बाद औद्योगिकी संचार तकनीकी में तुरन्त बदलाव आया है अतः शिक्षकों की सिखाने की तकनीकी में भी परिवर्तन आया है।''[2]

पं. विद्याधर व्यास ने अपने आलेख में कहा है कि ''क्रमबद्ध शिक्षा योजना के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार की संगीत शिक्षा के लिए पारम्परिक गुरू एवं गुरू शिष्य परम्परा को नई व्यवस्था में ढलना चाहिए। जो इससे बचकर रहेगा या बचने की कोशिश करेगा हानि उसी की ही होगी। हमें अपने संगीत को विश्व भर में प्रतिष्ठित करना है और इसके लिए इंटरनेट जैसी तकनीक कम समय में बहुत बड़ा परिणाम दे सकती है।''[3]

इंटरनेट पर आज ऐसी कई सर्विसेज़ मौजूद हैं जो भारतीय संगीत से जुड़े कलाकारों को डिजीटल प्लेटफार्म उपलब्ध करवा रही हैं। इससे

1. source-internet(www)
2. www.omenad.net
3. संगीत पत्रिका, अन्तर्राष्ट्रीय परिसंवाद पृ.सं.–17, अक्टूबर 2002

कलाकारों को भी आय का नवीन साधन प्राप्त हो रहा है।

आज इंटरनेट पर म्यूज़िक का मार्केट तेजी से बढ़ रहा है। ऐसे में गाना डॉट कॉम, आर्टिस्ट्स अलाउड, माय बैण्ड, ओके लिसन डॉट कॉम और फ्लाइट जैसी इंटरनेट सर्विसेज़ म्यूज़िशियन को अपने साथ जोड़ रही है और उन्हें हर महीने अच्छा भुगतान कर रही हैं। गाना डॉट कॉम देश का सबसे बड़ा म्यूज़िक डेस्टीनेशन है। इसने हाल में ही 100 स्वतंत्र कलाकारों के साथ साइन–अप किया है। इस बारे में गाना डॉट कॉम के वाइस प्रेसीडेन्ट श्री अविनाश मुंडालियर कहते हैं कि ''शीघ्र ही हम स्वतंत्र कलाकारों का एक अलग सेक्शन लॉन्च करने जा रहे हैं।''[1]

सावन डॉट कॉम, धिनगाना डॉट कॉम और गाना डॉट कॉम जैसे म्यूज़िक स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म्स पर एडवरटाइजिंग से मिलने वाले रेवन्यू का एक हिस्सा कलाकारों के साथ शेयर किया जाता है। आर्टिस्ट्स अलाउण्ड, फ्लाइट एवं ओके लिसन श्रोताओं को प्लेटफॉर्म्स से म्यूज़िक डाउनलोड करने की सुविधा देते हैं।[2]

मायबैण्ड जैसे डिजीटल प्लेटफॉर्म को सोशल नेटवर्क की तरह तैयार किया गया है। इस पर स्वतंत्र कलाकार अपने संगीत को प्लेटफॉर्म पर बेच सकते हैं। म्यूज़िक बैण्ड साइफर का इस बारे में कहना है कि ''डिजीटल प्लेटफॉर्म से कलाकारों को भी काफी हद तक लाभ पहुँचा है। इससे हमारी पहुँच बढ़ी है और हमें पता लग जाता है कि कौन किस तरह का म्यूज़िक पसंद कर रहा है।[3]

---

1. लेख, राजस्थान पत्रिका, 4 नवम्बर 2012
2. वही
3. वही

इंडियन रागा जैसे प्लेटफॉर्म ने भी एक ई–कोमर्स स्टोर तैयार किया है जहाँ म्यूज़िशियन अपना संगीत बेच सकते हैं और फ्रिमियम मॉडल अपना सकते हैं। इसमें म्यूज़िशियन्स से बेसिक फीस ली जाती है और प्लेटफॉर्म की सारी सुविधाऐं दी जाती है। इससे कलाकारों को फायदा हो रहा है।[1]

अतः दूरस्थ शिक्षा प्रणाली ने संगीत के हर क्षेत्र में अपने पैर पसार लिए हैं। अब समय आ गया है कि इसका उपयोग और भी अच्छे तरीके से किया जाये, जिससे हमारा संगीत सशक्त, समृद्ध और प्रतिष्ठित बन सके। संगीत एक भावनात्मक कला है जिसका जुड़ाव मन से है ''मन से बड़ा न कोई''। मन का सुकून अथवा आत्मिक आनन्द ही भारतीय संगीत है।

ऑनलाइन लर्निंग ने शिक्षा के सभी क्षेत्रों में अपनी जगह बना ली है। तो संगीत इससे अछूता क्यों रहे ? जीवन के हर पहलू को यदि गौर से देखा जाए तो व्यक्ति का जीवन इतना व्यस्त हो चुका है कि उसे हर कार्य को करने के लिए ऑनलाइन विधि का सहारा लेना सुलभ लगता है। चाहे वो एजुकेशन हो व्यवसाय हो शॉपिंग हो या फिर मनोरंजन।

वर्तमान समय में ऑनलाइन शॉपिंग, ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन, ऑनलाइन इंटरव्यूज़, ऑनलाइन नेट बैंकिंग, ऑनलाइन जॉब, ऑनलाइन डिलीवरी आदि सब कुछ ऑनलाइन उपलब्ध है और फिर जब व्यक्ति की आवश्यकताओं की पूर्ति इस ऑनलाइन विधि के द्वारा हो रही है तो वह

1. लेख, राजस्थान पत्रिका, 4 नवम्बर 2012

इधर–उधर क्यों भटकेगा।

संगीत में भी ऐसी कई वेबसाइट्स हैं जो घर बैठे ही संगीत की हर विधा की शिक्षा प्रदान करती हैं जैसेः–

- musictheory.net
- howtoplaypiano.ca
- playbassnow.com
- justineguitar.com
- ultimateguitar.com
- teoria.com
- swarganga.org
- raag.hindustani.com
- surgyan.com
- shadjamadhyam.com
- tanarang.com
- carnaticindia.com
- allmusic.com
- onlineriyaz.com
- itcsra.org
- chandrakantha.com
- clilck4classical.com etc.

इस प्रकार यह एवं ऐसी अन्य कई वेबसाइट्स इंटरनेट पर उपलब्ध हैं जिनकी सहायता से इच्छुक संगीत विद्यार्थी संगीत की शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं।

'पियानो एनसाइक्लोपीडिया' एक ऐसी वेबसाइट्स है जो उन लोगों के लिए पूरी तरह समर्पित है जो बिना किसी महंगे एवं प्राइवेट ट्यूशन के पियानो सिखना चाहते हैं।[1]

यह वेबसाइट्स विद्यार्थियों को पियानो लर्निंग कम्यूनिटी एवं विस्तृत गृह अध्ययन के साथ पियानो कोर्स करवाती हैं। इसके द्वारा सिखाई जाने वाली विधि भी काफी हद तक सफल है।[2]

यहाँ प्रस्तुत किए गए चित्र यह प्रदर्शित करते हैं कि शिक्षार्थी रूचि के साथ अपने मन को केन्द्रित कर ऑनलाइन विधि के माध्यम से संगीत सीख रहे हैं।

इन चित्रों के माध्यम से हमें यह पता चलता है कि देश भर में दूरस्थ शिक्षा प्रणाली का प्रयोग अत्याधिक अनुपात में किया जा रहा है साथ ही यह आने वाली नई पीढ़ी के लिए उपयोगी एवं प्रभावशाली विधि साबित हो रही है।

---

1. पियानो एनसाइक्लोपीडिया–ए वेबसाइट ऑफ पियानो टीचिंग
2. वही

Image Received from www.youtube.com

Image Received from www. santoorlessons online.com

Image Received from www. article.wn.com

Image Received from www. youtube.com

Image Received from www. youtube.com

Image Received from www. article.wn.com

Image Received from www. youtube.com

ऑनलाइन लर्निंग और परम्परागत लर्निंग में एक बड़ी विशेषता यह है कि ऑनलाइन, विद्यार्थी गाना–बजाना सीखता है कानों से सुनकर जबकि विद्यार्थी जो परम्परागत तरीके से सीखता है उसे स्वरलिपि (नोटेशन) को याद करना पड़ता है।[1]

ऑनलाइन शिक्षा, विद्यार्थी को एक उन्मुक्त एवं खुला वातावरण उपलब्ध करवाती है जहाँ उन्हें किसी भी तरह से अपने मनपसंद गुरू, गीतों, प्रकारों एवं सीखने की सामग्री आदि का चयन करने की स्वतंत्रता है।

इसी संदर्भ में मोबाईल टेक्नोलॉजी ने भी ऑनलाइन संगीत शिक्षा को और प्रभावशाली बनाया है। नए–नए एप्लीकेशन्स जो कि स्मार्ट एनरॉइड फोन की आवश्यकता है, ने सब कुछ सिखा दिया है।[2]

'गिटार प्रो' एक ऐसा लर्निंग टूल है जो ऐरोबास संगीत के द्वारा निर्मित किया गया है एवं लोगों की बिना किसी संगीत विद्यालय तथा शिक्षक के सहायता करता है।[3]

लिंडा रेसेगुइर ने ऑनलाइन गिटार लर्निंग के संबंध में कहा है कि " For biginners (Online) courses can help them to get a feel for the instrumental and play a few simple songs for an intermediate or advanced player they can be really useful to learn a specific style of guitar playing or simply improve playing skills while having fun."[4]

---

1. www.opencolleges.edu.au
2. वही
3. वही
4. www.onlinecourse.com

लिंडा रेसेगुइर एरोबास संगीत की मार्केटिंग मैनेजर हैं और उनका विश्वास है कि भले ही ऑनलाइन कोर्सेज़ और मोबाईल एप्स बहुत अच्छे सप्लीमेन्टरी टूल्स हैं किन्तु फिर भी वो यह महसूस करती हैं कि विद्यार्थी, जो बहुत ऊँचें स्तर तक पहुँचना चाहते हैं उनको एक अच्छे शिक्षक की आवश्यकता अवश्य होगी।

" If you realy want to learn a musical instrument and reach a satisfying playing level, you need a good teacher."[1]

और यह बात काफी हद तक उचित भी है क्योंकि गुरू को ''गुर्रुब्रह्माः गुर्रुविष्णुः गुर्रु देवो महेश्वराः। गुर्रुसाक्षात् परम् ब्रह्माः तस्मैः श्री गुरवेनमः।।'' साक्षात् परम् ब्रह्मा माना गया है। अतः गुरू की महिमा सदैव मानी जाती रही है और मानी जाती रहेगी। चाहे वो गुरू ऑनलाइन विधि द्वारा शिक्षा देता हो या फिर सीना–ब–सीना किन्तु गुरू की अनिवार्यता है।

मेरे अध्ययन के अन्तर्गत यह देखने में आया है कि जितने ऑनलाइन शिक्षक हैं वो बहुत ही लगन के साथ संगीत की बारीकियों को सिखा रहे हैं और शिक्षार्थी भी पूरी रूचि के साथ सीख रहे हैं। यदि गुरू में सिखाने की लगन है तो वह छोटी से छोटी बारीक चीज़ भी अपने शिष्य को ऑनलाइन सिखायेगा यदि उसकी इच्छा शक्ति हो तो। इस विधि में समय की भी कोई बाध्यता नहीं है। समय तो आमने–सामने बैठ कर सीखने में लगता है। ऑनलाइन में भी आमने–सामने बैठा जाता है किन्तु अन्तर

1. www.onlinecolleges.com

केवल एक इलेक्ट्रोनिक उपकरण का होता है, विशेष तौर पर वीडियो कॉनफ्रेंसिंग में।

अतः 'गुरू बिन ज्ञान कहाँ से पाऊँ' छन्द बिल्कुल सत्य है। ऑनलाइन विधि से भी एक अच्छा गुरू उतने ही अच्छे तरीके से सिखायेगा जितना कि सीना–ब–सीना पद्धति में। यह केवल गुरू पर निर्भर करता है। एक अच्छे गुरू के लिए दोनों प्रकारों में एक ही बात होगी।

अपने इस शोध कार्य को मूर्त रूप प्रदान करने के उद्देश्य से मैंने कुछ ख्याति प्राप्त कलाकारों से बात की, जिससे मुझे अपने कार्य को प्रभावशाली तथा परिणाम की ओर अग्रसर होने में बहुत सफलता मिली। यह वार्तायें मैंने टेलीफोन, मोबाईल, साक्षात्कार एवं ई–मेल के माध्यम से की, जिनसे मुझे कुछ आधारभूत उत्तर भी प्राप्त हुए। कई गुणीजन परम्परागत विधि को ही उत्तम मानते हैं और कुछ दोनों को समान मानते हैं लेकिन अधिकतम लोग दूरस्थ शिक्षा प्रणाली को लाभप्रद मानते हैं।

पं. हरिप्रसाद चौरसिया जी से हुए साक्षात्कार में जब मैंने उनसे अपने विषय से संबंधित प्रश्न पूछा कि आप भारतीय संगीत में दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के महत्व को मानते हैं अथवा नहीं तो उन्होंने मुझे कुछ इस तरह से उत्तर दिया कि ''यह कला भावनात्मक कला है। सुर की महिमा को सामने रहकर ही सिखा जा सकता है दूर रहकर नहीं।''[1]

---

1. चर्चा, पं. हरिप्रसाद चौरसिया, नवम्बर 2009, रात्रि 7:30 बजे

उनका इस पक्ष को मानना था कि गुरू शिष्य परम्परा ही सर्वाधिक उचित है।

साक्षात्कार–पं. हरिप्रसाद चौरसिया जी के साथ नवम्बर 2009

पं. विश्व मोहन भट्ट जी से मैंने मोबाईल के वॉट्सप एप के द्वारा इस विषय के संदर्भ में बातचीत की, तो उन्होंने कहा कि ''वर्तमान समय में कलाकार बल्कि सभी इतने व्यस्त हैं कि यात्रा करने का वहन एवं समय की बाध्यता अधिक रहती है। ऐसे समय में दूरस्थ शिक्षा अथवा ऑनलाइन टीचिंग एक उत्तम विधि साबित होगी।''[1]

बनारस के पं. छन्नू लाल जी मिश्र का कहना है कि ''संगीत केवल गुरु शिष्य परम्परा द्वारा ही सिखाई जाने वाली कला है।''[2] इनका मानना हैं कि संगीत केवल सीना–ब–सीन पद्धति द्वारा ही अपनाया जा सकता है।

इसका कारण मेरे हिसाब से यह भी माना जा सकता है कि ऐसे महान् संगीतज्ञ जो कि पिछले काफी वर्षों से संगीत की शिक्षा प्रदान करते आ रहे हैं और दूरस्थ शिक्षा प्रणाली अथवा ऑनलाइन टीचिंग जैसी नई टेक्नोलॉजी की ओर उन्मुख नहीं हो पायेंगे। इसी कारण वो इस नवीन तकनीक से अनभिज्ञ हैं और इसे अभी तक स्वीकार नहीं पाए।

ऐसे कई कलाकार हैं जो अभी तक भी परम्परागत तरीके से ही संगीत की शिक्षा प्रदान कर रहे हैं और नई टेक्नोलॉजी को अपनाने से डर रहें हैं। इसका कारण उनका इस विधि की तरफ ध्यान न देना अथवा नई तकनीक को न समझना हो सकता है मेरे अनुमान से।

---

1. चर्चा, (व्हाट्सप मैसेज द्वारा) पं. विश्वमोहन भट्ट, 3 मई 2015, रात्रि 7:30 बजे
2. चर्चा, पं. छन्नू लाल जी मिश्र, 25 फरवरी 2014, रात्रि 8:00 बजे

साक्षात्कार पं. छन्नू लाल जी मिश्र के साथ, 25 फरवरी 2014

श्रीमती संगीता बन्धोपाध्याय से हुई वार्ता में उन्होंने मेरे द्वारा पूछे गए प्रश्न का जवाब कुछ इस तरह से दिया ''संगीत को दोनों ही तरीकों से सीखा एवं सिखाया जा सकता है। जैसी समय एवं स्थिति की मांग हो आवश्यकतानुसार उसी तरीके को अपनाया जा सकता है।''[1]

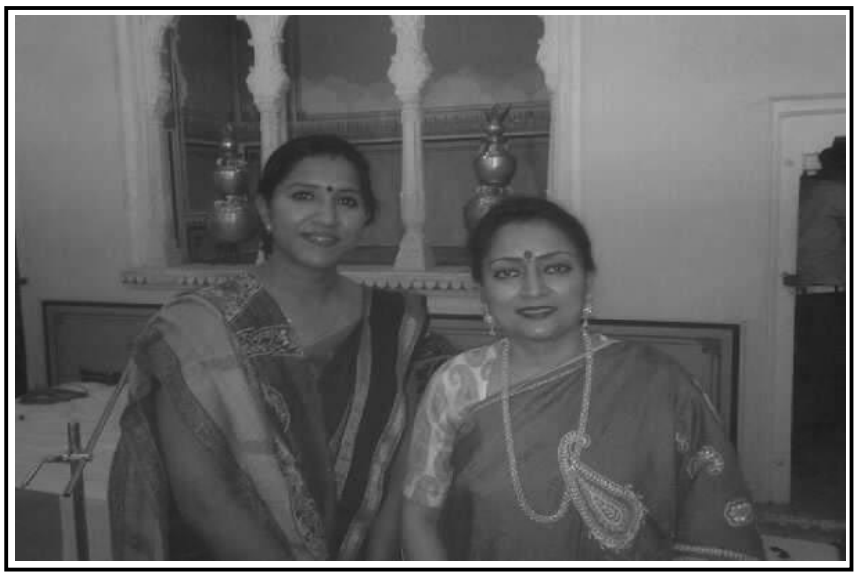

साक्षात्कार श्रीमती संगीता बन्धोपाध्याय, 21 फरवरी 2013

1. चर्चा, श्रीमती संगीता बन्धोपाध्याय, 21 फरवरी 2012, रात्रि 8:30 बजे

पं. रजनीश जी मिश्र (पं. राजन मिश्र जी के सुपुत्र) द्वारा मुझे इस तरह उत्तर प्राप्त हुआ कि ''संगीत को गुरू शिष्य परम्परा द्वारा ही सीखा जाता आ रहा है, जिसमें भाव महत्व रखते हैं और भाव पास रहकर ही सीखे जा सकते हैं दूर रहकर नहीं। ऑनलाइन टीचिंग आज के युग में प्रभावी हो सकती है।''[1]

श्री राजेन्द्र जी कण्डलगांउकर (पूना, महाराष्ट्र) से फोन पर हुई बातचीत में आपने ऑनलाइन संगीत की शिक्षा को बहुत उपयोगी एवं लाभप्रद बताया। आपने कहा कि आप वर्तमान में यू.के. न्यूज़ीलैण्ड आदि जगहों पर संगीत की शिक्षा ऑनलाइन विधि के माध्यम से प्रदान कर रहे हैं। आपके लगभग 78 शिष्य देश भर में ऑनलाइन विधि से संगीत की शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं।[2]

श्री मनीष राज्य गुरू (गुजरात) से हुई वार्ता में इन्होंने भी दूरस्थ शिक्षा प्रणाली को 100 प्रतिशत प्रभावी एवं उपयोगी बताया है एवं समय की बचत को महत्वता दी है। आपने एक ऐसा सोफ्टवेयर भी बनाया है जिसमें 'सा' बजाने पर 2–3 घण्टे बाद भी उसकी आवृत्ति नहीं बदलती है।[3]

मैंने कई सांगीतिक कलाकारों से ई–मेल के द्वारा सम्पर्क स्थापित किया जिनमें से कई ने मुझे अपने जवाबों से पूर्ण रूप से आश्वस्त किया।

'श्री हर्ष खींची' जो यू.एस.ए. में रहते हैं एवं पिछले 4–5 वर्षों से सितार की कक्षा ऑनलाइन विधि द्वारा सीख रहे हैं। आपका मानना है कि

1. चर्चा, (फोन पर) पं. रजनीश जी मिश्र, 10 मई 2015, रात्रि 9:00 बजे
2. चर्चा, (फोन पर) श्री राजेन्द्र जी कण्डलगाउंकर, 4 मई 2015, प्रातः 10:00 बजे
3. चर्चा, (फोन पर) श्री मनीष राज्यगुरू, 4 मई 2015, प्रातः 11:00 बजे

अगर मन में सच्ची लगन हो तो कोई भी विधि चाहे ऑनलाइन या सीना–ब–सीन, कारगर साबित होती है। आप भारत में स्थित अपने गुरू से सितार की शिक्षा ऑनलाइन विधि द्वारा ग्रहण कर रहे हैं एवं आपको यह विधि अत्यधिक लाभप्रद लगती है।[1]

'शंकर महादेवन एकेडमी' के सहायक श्री बकुल जी का कहना है कि दूरस्थ शिक्षा प्रणाली बहुत ही लाभप्रद हैं। इस एकेडमी द्वारा कई प्रकार के लेसेन्स जैसेः– ऑनलाइन वॉइस लेसेन्स, ऑनलाइन सिंगिंग लेसेन्स आदि उपलब्ध कराये जाते हैं और वर्तमान समय में इस एकेडमी का लाभ अत्यधिक लोग उठा रहे हैं।[2]

इसी प्रकार 'दिव्य संगीत एकेडमी' के ऑफिस असिस्टेन्ट श्री सुशील जी का कहना है कि ऑनलाइन प्रणाली एक प्रभावशाली विधि है जो हाई स्पीड इंटरनेट ब्रोडबेन्ड की उत्तम क्वालिटी के माध्यम से आसानी से सीखी जा सकती है। यह विधि सफल विधि है। वीडियो कॉनफ्रेंसिंग के माध्यम से समूह अध्ययन बहुत प्रभावी होता है। नई पीढ़ी के लिए यह बहुत सुलभता से उपलब्ध है। जिसमें विभिन्न प्रकार के वायरलेस (वाईफाई), इंटरनेट कनेक्टेड डिवाइसेज़–डेस्कटॉप, लेपटॉप एवं स्मार्ट फोन अब हर जगह उपलब्ध है।[3] यह तकनीक वर्तमान और भविष्य के लिए बहुत आवश्यक एवं उपयोगी है।

पं. श्री भीमसेन जोशी के सुपुत्र 'श्री आनन्द भीमसेन जोशी' का इस ऑनलाइन विधि अथवा दूरस्थ संगीत शिक्षा के संबंध में मत है कि "

1. चर्चा, (ई–मेल द्वारा) श्री हर्ष खींची, सितार वादक (यू.एस.ए.)
2. चर्चा, (ई–मेल द्वारा) श्री बकुल घरपुरे, शंकरमहादेवन अकेडमी
3. चर्चा, (ई–मेल द्वारा) श्री सुशील जी, दिव्य संगीत अकेडमी

Yes, Online teaching is essential and prooven successful."[1]

'श्री जयदीप भान्जा चौधरी' का इस संबंध में कहना है कि ''दूरस्थ शिक्षा प्रणाली लाभप्रद है एवं बहुत प्रभावशाली भी है। आने वाली पीढ़ी के लिए तो यह और भी अधिक प्रभावी रूप से लाभप्रद है।''[2]

'श्री किरणपाल जी' का कहना है कि ''यह प्रणाली बहुत ही महत्व रखती है। यह बहुत प्रभावशाली है साथ ही लाभप्रद भी है।''[3]

'श्रीमती सुरभि आर्या' भी इस प्रणाली को लेकर बड़ी सकारात्मक विचारधारा रखती हैं और कहती है कि ''यह प्रणाली संगीत के क्षेत्र में मददगार एवं लाभप्रद साबित होगी आने वाली पीढ़ी और वर्तमान पीढ़ी के लिए। आने वाले भावी कलाकार अपने ज्ञान में नई तकनीकि के प्रयोग से और भी वृद्धि कर सकते हैं।''[4]

कई कलाकार जैसेः– श्री अरनब सरोदवादक, श्रीमती निवेदिता शिवराज, सुश्री गरिमा भार्गव, डॉ.वी.विजय लक्ष्मी, श्री इख़्लाक हुसैन, श्री अशीम चौधरी, श्रीमती हेमलक्ष्मी पटेल, श्री एन.एच. पार्थासारथी आदि और ऐसे कई कलाकार दूरस्थ शिक्षा प्रणाली को बहुत उपयोगी, लाभप्रद तथा प्रभावशाली मानते हैं। साथ ही यह कलाकार भावी संगीतज्ञों, शिक्षकों एवं कलाकारों के लिए इसे आवश्यक भी समझते हैं।[5]

---

1. चर्चा, (ई–मेल द्वारा) पं. श्री आनन्द भीमसेन जोशी जी
2. चर्चा, (ई–मेल द्वारा) श्री जयदीप भान्जा
3. चर्चा, (ई–मेल द्वारा) श्री किरणपाल जी
4. चर्चा, (ई–मेल द्वारा) श्रीमती सुरभि आर्या
5. ई–मेल द्वारा प्राप्त उत्तर

कई कलाकार जैसेः– पं. सुजान राणे, पं. जयवन्त बन्टवाट, श्री सचिन ओलकर, श्रीमती संध्या श्रीवत्सन, श्रीमती मनीका मुस्तफी, डॉ. निर्मल पाण्डे, श्री कुमार अमित वर्मा, श्रीमती पुष्कला गोपाल, श्रुति श्रीराम, श्री हसू पटेल आदि, और ऐसे कई कलाकार हैं जो दोनों ही पद्धतियों (दूरस्थ संगीत शिक्षा एवं सीना–ब–सीना) को लाभप्रद एवं उपयोगी मानते हैं।[1]

इसके साथ ही बहुत कम ऐसे कलाकार हैं, जैसेः– श्रीमती काबेरी चट्टोपाध्याय, श्रीमती वेदान्तिका मुखर्जी, श्री के.श्रीधर, श्री अकील खान, श्रीमती गौरी गुहा, श्रीमती अनुराधा महेश, श्री कुबेर सेन गुप्ता आदि का मानना है कि मात्र सीना–ब–सीन पद्धति ही संगीत के लिए उपयोगी है।[2]

इन सभी कलाकारों से साक्षात्कार कर मैं इनके द्वारा प्रस्ततु किए गए विचारों से जान पाई कि, वर्तमान समय में दूरस्थ संगीत शिक्षा प्रणाली का उपयोग भारत में भी विदेशों की भाँति बड़ी तीव्रता से किया जा रहा है, जो इस बात की ओर संकेत करता है कि यह प्रणाली अपनी महत्ता बनाए हुए है जिसका लाभ यदि सभी लोग लें तो संगीत शिक्षा के लिए यह बहुत अच्छा होगा।

वास्तव में यह किसी ने उचित कहा है कि आवश्यकता आविष्कार की जननी है। इसका उदाहरण है ''दूरस्थ संगीत शिक्षा''। यह वो विकल्प हैं जिसका उपयोग बिना किसी बाध्यता के प्रत्येक व्यक्ति कर सकता है। इसी प्रणाली द्वारा अन्य वैकल्पिक साधनों की सहायता से दुर्गम स्थलों

1. ई–मेल द्वारा प्राप्त उत्तर
2. वही

तक पहुँचा जा सकता है।[1]

एक ही ऑनलाइन एकेडमी में बहुत सारे ऑनलाइन शिक्षक होते हैं, जो अलग–अलग विधाओं की शिक्षा प्रदान करते हैं। उदाहरणार्थः– ऑनलाइन कम्पोजिंग, ऑनलाइन सिंगिंग, ऑनलाइन इन्स्ट्रुमेन्ट प्लेयिंग, ऑनलाइन मिक्सिंग, ऑनलाइन रिकोर्डिंग, ऑनलाइन अनाउन्सिंग, ऑनलाइन वॉइस मॉड्यूलेशन आदि।

ऐसी कई ऑनलाइन एकेडमियाँ जैसेः– दिव्य संगीत एकेडमी, शंकरमहादेवन एकेडमी, ए.आर.रहमान एकेडमी, सोमा सरकार ऑनलाइन क्लास, गाल्क एकेडमी ऑफ म्यूज़िक, देशपाण्डे ऑनलाइन म्यूज़िक क्लास, ऑनलाइन कर्नाटक संगीत पाठ–सारली, ग्लोबल इंडियन म्यूज़िक एकेडमी, स्कूल ऑफ इंडियन म्यूज़िक ऑनलाइन, वाराणसी एकेडमी ऑफ इंडियन क्लासिकल म्यूज़िक आदि और ऐसी कई अन्य छोटी एवं बड़ी संस्थाऐं वर्तमान समय में ऑनलाइन विधि के माध्यम से संगीत की शिक्षा प्रदान कर रही हैं।[2]

परिकल्पना की सत्यता के परीक्षण हेतु तथा वैज्ञानिक निष्कर्ष पर लाने हेतु परिकल्पना पर आधारित प्रश्नों के जवाब पर सांख्यिकी विश्लेषणात्मक तकनीक का प्रयोग किया गया। इसमें प्रतिशत विधि को लागू किया गया हैः–

---

1. आचार्य गिरीशचन्द्र श्रीवास्तव, (लेख) 'दूरस्थ शिक्षा विधि और संगीत शिक्षण, पृ.सं.–52, अप्रैल 2015
2. स्रोत–इंटरनेट (wwwresources)

संगीत शिक्षा लाभप्रद हैं–

दूरस्थ संगीत शिक्षा लाभप्रद	दूरस्थ संगीत शिक्षा+ सीना–ब–सीन तालीम लाभप्रद	मात्र सीना–ब–सीन तालीम लाभप्रद	कुल
265 (75 प्रतिशत)	64 (18 प्रतिशत)	21 (6 प्रतिशत)	350

प्रतिशत के द्वारा ज्ञात हुआ कि 75 प्रतिशत कलाकार दूरस्थ संगीत शिक्षा को प्रमुखता से मानते हैं 18 प्रतिशत लोग दूरस्थ संगीत शिक्षा, साथ ही सीना–ब–सीन तालीम को शिक्षा के लिए महत्वपूर्ण मानते हैं। मात्र 6 प्रतिशत ही ऐसे संगीत कलाकार है जो सीना–ब–सीन तालीम को ही महत्व देते हैं। इसका मुख्य रूप से कारण जो मुझे समझ में आया और अन्य व्यक्तियों से, साथ ही संगीत के क्षेत्र में अग्रणी रूप से कार्यरत कलाकारों, संगीतज्ञ शिक्षकों का मानना है कि जो वृद्ध कलाकार हैं वो परम्परागत रूप से संगीत की शिक्षा प्रदान कर रहे हैं और आधुनिक तकनीकी विकास के साथ वह तालमेल न बैठा पाने के कारण मात्र सीना–ब–सीन तालीम को ही महत्व दे रहें हैं। ऐसे में जो व्यक्ति दूरदराज़ क्षेत्रों में कार्यरत हैं या किन्हीं कारणों से उन गुणी गुरूजनों तक नहीं पहुँच पाते हैं वह इस शिक्षा से वंछित रह जाते हैं।

विभिन्न पहलूओं द्वारा संगीत शिक्षा का प्रभावशाली होना–

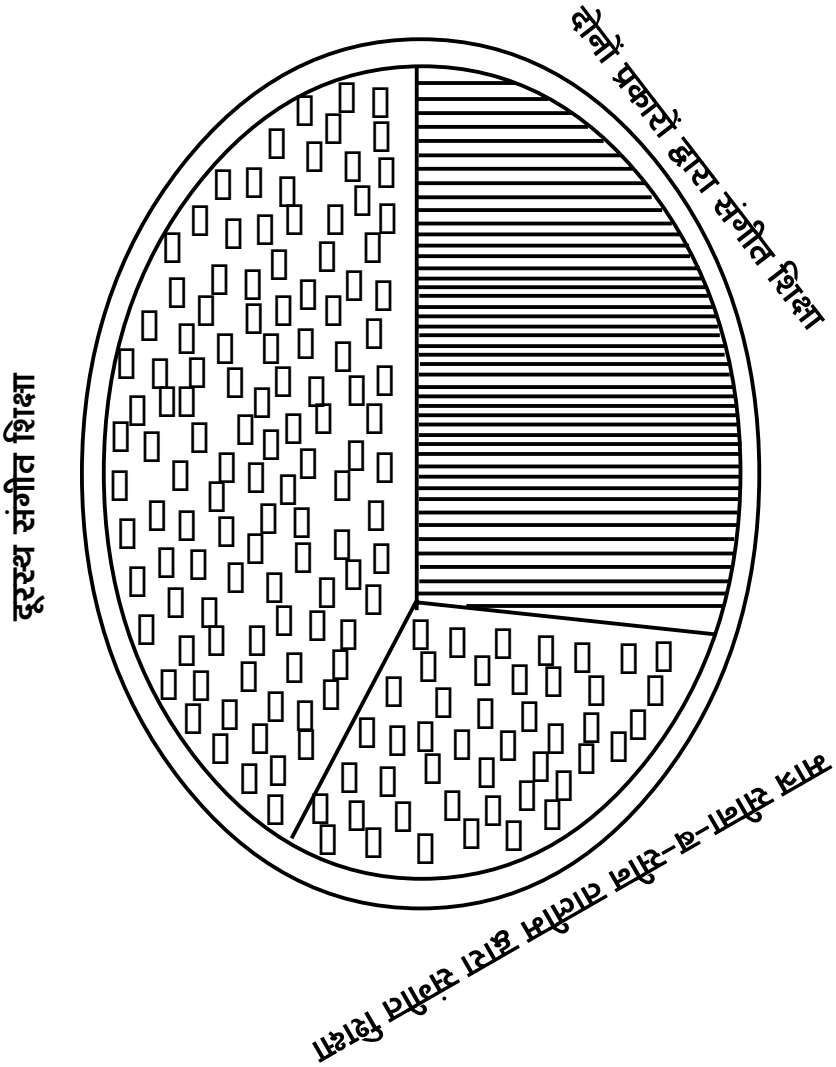

जो कलाकार ऑनलाइन टीचिंग अथवा लर्निंग को नकार रहे हैं वो

वास्तव में इस विधि को अभी तक स्वीकार नहीं कर पाए हैं। इसका कारण यह भी हो सकता है कि वो पिछले 30–40 वर्षो से लगातार गुरू शिष्य परम्परा अथवा सीना–ब–सीन पद्धति से ही शिक्षा प्रदान करते आए हैं। इसलिए वो इस नवीन शिक्षा प्रणाली अथवा टेक्नोलॉजी की ओर उन्मुख नहीं हो पाए हैं।

अतः दूरस्थ संगीत शिक्षा प्रणाली के प्रति इतने सकारात्मक विचारों के पश्चात् मैं इस निष्कर्ष पर पहुँची हूँ कि दूरस्थ शिक्षा प्रणाली का भारतीय संगीत में अत्यधिक महत्व एवं औचित्य है। इस ऑनलाइन विधि का प्रचार–प्रसार बढ़ता जा रहा है। नए–नए माध्यमों का जैसेः– टेप रिकॉर्डिंग, ग्रामोफोन, पत्र–पत्रिकाओं, ओडियो–वीडियो आदि का एक स्तर के बाद संगीत शिक्षा में उपयोग किया जा सकता है। जब कोई विद्यार्थी संगीत शास्त्र को ही अपना मुख्य विषय बना लेता है तो दूरस्थ शिक्षा द्वारा बहुत कुछ शिक्षा प्रदान की जा सकती है।

शिक्षा के इस नवीनतम प्रयास में आधुनिक युग में वैज्ञानिकों ने अपने चमत्कारिक आविष्कारों से गुरू–शिष्य की दूरी पर विजय प्राप्त कर ली है। यह टेलीकॉनफ्रेंसिंग, वीडियो कॉनफ्रेंसिंग आदि के द्वारा अब संभव हो चुका है।

अस्तुः अब यह सिद्ध हो चुका है कि इस प्रणाली द्वारा संगीत की शिक्षा पूर्ण रूप से दी जा सकती है। इस सेवा के लिए यह सर्वाधिक आवश्यक है कि आपके पास किसी अच्छी कम्पनी का इंटरनेट कनेक्शन

उपलब्ध हो। लेपटॉप भी कम्प्यूटर का ही एक छोटा रूप है। अब तो किसी भी मोबाईल अथवा स्मार्ट फोन पर भी यह इंटरनेट कनेक्शन लिया जा सकता है और संगीत संबंधी किसी भी एप्लीकेशन को डाउनलोड किया जा सकता है। अतः आशा करती हूँ कि भविष्य में सर्वसाधारण के लिए इसका उपयोग सुलभ होगा। हमें इस नवीन तकनीकी का स्वागत करना होगा जिससे हमारे संगीत को एक नया रूप प्राप्त हो एवं हमारा महान् भारतीय संगीत और भी ऊँचाइयों को छू सके।

वस्तुतः अध्ययन से ज्ञात होता है कि भारतीय संगीत में दूरस्थ शिक्षा प्रणाली अत्यधिक महत्वपूर्ण रूप से कार्य कर रही है, जिससे सीखने वाले विद्यार्थी लाभान्वित हो रहे हैं। संगीत के क्षेत्र में, दूरस्थ शिक्षा प्रणाली का, वर्तमान समय को देखते हुए अत्यधिक महत्वपूर्ण स्थान है।

□□□□□

उपसंहार

उपसंहार

संगीत अनन्त है, अनादि है। अतः संगीत के संबंध में यह नहीं कहा जा सकता है कि यह कब प्रारम्भ हुआ और इसका अन्त कब होगा किन्तु फिर भी संगीत का जन्म धर्म की पावन पृष्ठ भूमि पर हुआ और तीव्रोतर प्रगति करता हुआ हमारा महान् संगीत अपनी चरम् सीमा को छूने का प्रयास करता रहा है। नए–नए आविष्कारों, तकनीकियों के प्रयोग के साथ–साथ हमारे संगीत ने भी अपने आप को हमेशा जीवंत, समृद्ध एवं प्रगतिशील बनाए रखा है।

इस प्रगतिशील एवं वैज्ञानिक वातावरण में सभी विषयों की भांति भला संगीत कैसे पीछे रह सकता है और इसी बात को ध्यान में रखते हुए मेरे मन में कुछ प्रश्नों ने जन्म लिया। जैसे क्या नई–नई तकनीकियों का प्रयोग हमारे भारतीय संगीत में किया जा सकता है ?

क्या दूरस्थ शिक्षा (Distance Education) संगीत के लिए इतनी उपयोगी हो सकेगी जितनी कि अन्य विषयों के लिए है ? क्या हमारा महान् संगीत इस उच्च शैक्षिक टेक्नोलॉजी के स्तर को स्वीकार कर पाएगा ? ऐसे कई प्रश्नों के उत्तर मुझे इस शोध कार्य को पूर्ण करने के पश्चात् प्राप्त हुए जिसे मैंने स्वतः ही प्राप्त किया। कई वर्षों के अनवरत् प्रयत्न एवं अपने मन में उठ रही सभी जिज्ञासाओं की पूर्ति होने के पश्चात् मैं ''भारतीय संगीत में दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के महत्व एवं औचित्य'' को जानने में सफल हुई।

दूरस्थ संगीत शिक्षा एक ऐसी शिक्षा है जिसमें जनसाधारण विश्वस्तरीय घटनाओं से तीव्र गति से अवगत हो जाता है। नई–नई तकनीकियों की सहायता से बड़े से बड़े कार्य भी आसानी से सम्पन्न हो जाते है। कहीं भी कभी भी शिक्षा को ग्रहण किया जा सकता है। शिक्षा प्रदान करने व ग्रहण करने के लिए किसी प्रकार की सहायता का सामना नहीं करना पड़ता है।

मीलों दूर बैठे व्यक्ति से दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के माध्यमों की सहायता से सम्पर्क स्थापित किया जा सकता है और अपनी बात को सुना व समझा जा सकता है। इन माध्यमों के अन्तर्गत कम्प्यूटर, इंटरनेट, वीडियो कॉनफ्रेंसिग, ऑडियो कॉनफ्रेंसिग, ई–मेल, टेलीफोन, वॉइस चैटिंग आदि शामिल है।

जनसाधारण को इन माध्यमों ने प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित किया है। दूरस्थ शिक्षा प्रणाली में संचार प्रौद्योगिकी ने अपनी अहम् भूमिका निभाई। इस वैज्ञानिक प्रगति में संगीत भी अछूता नहीं है। संगीत क्षेत्र में भी इस प्रणाली ने अपना महत्वपूर्ण स्थान बना लिया है।

देश–विदेश में दूरस्थ शिक्षा प्रणाली ने अपने पैर पसार लिए हैं और अभी तक दस हजार से भी अधिक विषय इस शिक्षा प्रणाली के माध्यम से पढ़ाये जा चुके हैं। विभिन्न आयामों के द्वारा संगीत शिक्षा प्रदान की जाने लगी है। दूर देश–विदेश में बैठे शिष्य को गुरू दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के माध्यम से शिक्षा प्रदान कर सकता है।

इस प्रकार मैंने अपने शोध कार्य के अन्तर्गत विभिन्न माध्यमों की सहायता से अपनी जिज्ञासा को पूर्ण किया और इस शोध कार्य के माध्यम से दूरस्थ शिक्षा प्रणाली की भारतीय संगीत में उपयोगिता एवं महत्व को जान सकी।

मेरे मन में हमेशा कुछ प्रश्न अनायास ही उत्पन्न होते रहते हैं जैसे कि गुरू–शिष्य प्रणाली पर आधारित संगीत शिक्षा कोई टेक्नोलॉजी के माध्यम से कैसे प्रदान कर सकता है ? चूंकि यह महान् संगीत शिक्षा 'सीना–ब–सीना' ही प्रदान की जाती आ रही है। तो यह इंटरनेट, कम्प्यूटर, ई–मेल अथवा वीडियो कॉनफ्रेंसिग की सहायता से क्या संभव और सक्षम भी हो सकती है ? इन्हीं प्रश्नों के जवाब ढूढ़ने के प्रयास में मैंने कई गुणी जनों से भी साक्षात्कार एवं विचार विमर्श किया। उन्होंने मेरे इस शोध कार्य को आगे बढ़ाने में मेरी बहुत सहायता की।

मैंने अपने शोध कार्य को पाँच अध्यायों में वर्गीकृत किया है तथा 'भारतीय संगीत में दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के महत्व और औचित्य' को समझाने वाली सभी जानकारियां पूर्ण रूप से सम्मिलित करने का प्रयास किया है।

प्रथम अध्याय 'भारतीय संगीत शिक्षा की अवधारणा' के माध्यम से मैंने भारतीय संगीत की धारणा को तीनों कालों में जानने का प्रयत्न कियाः– प्राचीन–काल, मध्य–काल, और आधुनिक–काल। इस अध्याय के माध्यम से मुझे यह अवगत हुआ कि संगीत का परचम तीनों कालों में ही

फहराया जा चुका था। जहां प्राचीन काल के सामगान में देवताओं की स्तुति के लिए संगीत के महत्व को मैंने जाना वहीं मध्य काल में हरिदास, सूरदास, तुलसीदास, मीरा बाई, मुथुस्वामी दीक्षितार श्यामाशास्त्री आदि भक्त–गायकों, अमीर खुसरो, पं.शारंगदेव, मुहम्मदशाह रंगीले आदि महान् प्रभावशाली संगीतकारों द्वारा संगीत कला की पर्याप्त उन्नति की। साथ ही आधुनिक काल के दो महान् सांगीतिक सितारों पं. विष्णु दिगंबर पलुस्कर, पं. विष्णु नारायण भातंखण्डे द्वारा संगीत की प्रतिष्ठा को बढ़ते हुए देखा एवं समझा। तीनों ही कालों में सांगतिक उन्नति की पराकाष्ठा को जैसे पर्याप्त रूप से समझा।

द्वितीय अध्याय 'संगीत शिक्षा प्रणाली के विभिन्न आयाम' के अन्तर्गत मैं संगीत शिक्षा प्रणाली के विभिन्न आयामोंः– घराना आयाम, औपचारिक शिक्षा पद्धति, शैक्षिक तकनीकी में आद्यतन विकास एवं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली से संबंधित जानकारियां प्राप्त कर सकी।

घराना प्रणाली अथवा परम्परा जिसमें गुरू–शिष्य परम्परा के माध्यम से 'घराना' शब्द की महत्ता को मैंने जानने का प्रयत्न किया। संगीत में 'घराना' एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। घराने की प्रथा तीनों ही विधाओं में पाई गईः– गायन, वादन और नृत्य। प्रत्येक घराने की अपनी एक विशेषता होती है जो सांगीतिक विकास में सहायक होती है। इस अध्याय में मैंने पं. विष्णु दिगंबर पलुस्कर एवं पं.विष्णु नारायण भातखण्डे द्वारा विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में संगीत के उन्नयन को जाना। औपचारिक शिक्षा प्रणाली अथवा संस्थागत प्रणाली के आधार

पर संगीत शिक्षा अपने उच्चतम शिखर पर विद्यमान हो चुकी थी।

आधुनिक समय में संगीत प्रणाली की तकनीकी में विकास हुआ और कई सांगीतिक संस्थाओं द्वारा संगीत का वट वृक्ष फैला और विस्तृत हुआ। जिसमें स्पिकमैके एवं संकल्प नामक कई संस्थाओं ने कलाकारों के लिए मार्गदर्शक का कार्य किया। इस अध्याय में दूरस्थ शिक्षा प्रणाली की परिभाषा को मैंने सूक्ष्म रूप से जानने का प्रयत्न किया। इसमें मुझे ज्ञात हुआ कि दूरस्थ शिक्षा पद्धति वह पद्धति है जिसमें तब शिक्षा प्रदान की जाती है जब विद्यार्थी एवं शिक्षक शारीरिक रूप से दूर होते हैं, किन्तु मानसिक विचारधारा बनी रहती है।

तृतीय अध्याय 'दूरस्थ शिक्षा प्रणाली' के माध्यम से मैं दूरस्थ शिक्षा प्रणाली, उसके कार्यों, माध्यमों, उद्देश्यों, विशेषताओं एवं उसकी समस्याओं को जान सकी। दूरस्थ शिक्षा प्रणाली कैसे कार्य करती है और किन–किन माध्यमों का प्रयोग इसके द्वारा किया जाता है, इनके बारे में मुझे अवगत हुआ। इस प्रणाली के कुछ उद्देश्य हैं जिन्हें मैं अपने शोध कार्य के अन्तर्गत जान सकी। इस प्रणाली में जहां एक और खूबियां है वहीं दूसरी ओर कुछ खामियां भी है जिन्हें मैंने इस अध्याय में समझा। इस प्रणाली में मैंने दूरस्थ शिक्षा प्रणाली द्वारा समय की बचत को जाना साथ ही इस प्रणाली के लचीलेपन को समझा। पुस्तकें, रेडियो, टेलीविजन, वीडियो, कॉनफ्रेंसिंग, इंटरनेट आदि के उपयोग को समझा। www.(world wide websites) द्वारा किसी भी प्रकार की जानकारी प्राप्त की सकती है।

संगीत के क्षेत्र में इंटरनेट की क्या भूमिका है और यह कैसे कार्य करता है, इसको इस अध्याय के द्वारा मैं जान सकी। इसी अध्याय में मुझे यह ज्ञात हुआ कि लगभग 90 ओपन यूनिवर्सिटीज़ पूरे विश्व में स्थापित है, जिनमें 15 भारत में ही है। पहला दूरस्थ शिक्षण विश्वविद्यालय, यूनिवर्सिटी ऑफ साउथ अफ्रीका 15 फरवरी 1946 को प्रारम्भ हुआ। इस प्रणाली में समय, स्थान, शिक्षक का चयन, पाठ्यसामग्री आदि के लिए किसी प्रकार की कोई बाध्यता नहीं है।

जहां एक ओर स्वतंत्रता इस प्रणाली में पाई गई वहीं दूसरी ओर अनुशासनहीनता, साक्षात्कार का अभाव, तुरन्त प्रतिपुष्टि का अभाव आदि समस्यओं के बारे में भी मुझे जानकारी प्राप्त हुई।

चतुर्थ अध्याय 'वर्तमान परिप्रेक्ष्य में दूरस्थ शिक्षा प्रणाली की प्रासंगिकता' के अन्तर्गत मैंने आधुनिक समय में यह प्रणाली किस सीमा तक प्रासंगिक है या उपयोगी है इस पर प्रकाश डाला है। इस अध्याय के द्वारा उन लोगों के लिए इस प्रणाली की आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया है जो भौगोलिक स्थिति में दूर हैं किसी परिस्थितिवश शिक्षा प्राप्त करने का अवसर खो चुके हैं। आधुनिक तकनीकी द्वारा अगर दूर बैठे विद्यार्थियों को शिक्षा प्राप्त हो सके तो यह लाभप्रद और एक अच्छी बात होगी।

इस अध्याय में मैंने ऐसी कई वेबसाइट्स के बारे में जानकारी प्रस्तुत की है जिनमें दूरस्थ शिक्षा से संबंधित कई महत्वपूर्ण जानकारियां निहित हैं। इसमें मैंने सन् 2010 तक की दूरस्थ शिक्षण संस्थाओं की

संख्या एवं उनमें नामांकित विद्यार्थियों की संख्याओं को भी दर्शाया है जो यह संकेत करती हैं कि इस प्रणाली ने वर्ष दर वर्ष लगातार प्रगति की है और कर रही है।

इस अध्याय में मैंने इंटरनेट, नेटवर्क सिस्टम के बारे में बताने का प्रयास किया है कि दूरस्थ शिक्षा प्रणाली का उपयोग उन्हीं के लिए अधिक सार्थक है जिन्हें कम्प्यूटर, इंटरनेट का भली–भांति उपयोग करना आता हो। इस अध्याय में दूरस्थ शिक्षा की उपयोगिता को सिद्ध करते हुए यह बताया गया कि यह शिक्षा अनुपयोगी नहीं हैं अगर ऐसा होता है तो लोगों द्वारा इस प्रणाली को बहुत वर्षों पहले नकार दिया जाता। यह उन लोगों के लिए विशेष तौर पर अधिक उपयोगी है जो अपनी शिक्षा व्यक्तिगत अथवा सामान्य रूप से किन्हीं कारणवश प्रारम्भ नहीं कर पाए।

ऑनलाइन लर्निग का वर्तमान समय में बहुत महत्व हैं यह ओपन लर्निंग विद्यालयों द्वारा सफलता का निर्माण होता है ऐसा कई सिविल कर्मचारियों का कहना है। इस अध्याय में मैने दूरस्थ शिक्षा के संबंध में लोगों द्वारा कहे गए विचारों को सम्मिलित किया है। संगीत शिक्षा को भी इस प्रणाली द्वारा सीखा जा रहा है जो बड़े गर्व की बात है। इस अध्याय में, मैं ऐसे अनुभवी लोगों के विचारों को जान सकी जो दूरस्थ शिक्षा के संबंध में अपनी सकारात्मक राय रखते हैं। कई ऐसे सोक्टवेयर उपलब्ध हैं जो विषय से संबंधित सूचनाओं, चित्रों, वीडियोज़ को सुरक्षित रखते हैं। ऐसे ही सोफ्टवेयर INFIBNET एवं INMUSNET हैं जो संगीत संबंधी जानकारियों को सुरक्षित रखते हैं।

इस प्रकार इस अध्याय द्वारा मैंने दूरस्थ संगीत शिक्षा की वर्तमान समय में प्रासंगिकता को भली–भांति दर्शाने का प्रयत्न किया। साथ ही वर्तमान में यह कितना आवश्यक है यह भी बताने का प्रयास किया है। चूंकि व्यक्ति इतना व्यस्त हो चुका है कि वो अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति सरलता से करना चाहता है और उसका माध्यम है। दूरस्थ शिक्षा अथवा ऑनलाइन विधि।

पंचम अध्याय 'भारतीय संगीत में दूरस्थ शिक्षा प्रणाली का महत्व एवं औचित्य' के माध्यम से मैंने इस शिक्षा प्रणाली के महत्व को भारतीय संगीत के संदर्भ में परिभाषित करने का भरसक प्रयास किया है। ऐसे कई कलाकार जैसे भास्कर बुवा, मियाँ जान, वज़ीर खाँ, पलुस्कर जी, पं. औंकारनाथ ठाकुर, बड़े गुलाम अली खाँ आदि दिवंगत होकर हमसे बिछड़ तो गए है किन्तु इनमें से ही कई कलाकारों के रिकार्ड आज भी विद्यमान हैं। जिन्हें सुनकर भावी पीढ़ी उनका अनुसरण कर सकती है। यह दूरस्थ संगीत शिक्षा के औचित्य का बहुत बड़ा उदाहरण है। आकाशवाणी वो माध्यम है जिसके पास कई महत्वपूर्ण कलाकारों के रिकॉर्डस आज भी उपलब्ध हैं जिनसे भावी कलाकार प्रेरणा ले सकते हैं।

इस अध्याय में मैंने संगीत ज्ञान को अन्य विषयों की ही भांति आवश्यक बताया है। विलियम इयरहार्ट जो कि फोर्मल प्रेसिडेंट ऑफ द म्यूजिक एजूकेटर्स इन नेशनल कॉन्फ्रेन्स हैं, ने भी संगीत को अन्य क्षेत्र जैसे गणित, विज्ञान, भूगोल, इतिहास आदि को आगे बढ़ाने के लिए आवश्यक माना है। विश्व के कई विद्यालयों एवं मैंने ऐसे विश्वविद्यालयों

का उल्लेख भी किया है जो ऑनलाइन संगीत की शिक्षा वर्षों से देते आ रहे हैं जैसेः– बर्कली ऑनलाइन, बॉस्टॉन यूनिवर्सिटी, वेलीसिटी स्टेट यूनिवर्सिटी आदि। साथ ही ऐसी कई ऑनलाइन संगीत कक्षाऐं इंटरनेट पर मौजूद है जिनसे कोई भी कहीं भी, कभी भी संगीत शिक्षा ग्रहण कर सकता है यह अपने आप में दूरस्थ संगीत शिक्षा के महत्व को उजागर करती है जैसेः–

- Online Clasical Music Class.
- Online Guitar Class.
- Online Dance (Clasical/Western) Class.
- Online Sitar Class.
- Online Piano Class etc.

इस अध्याय के अन्तर्गत कई ऐसे विद्यालयों एवं एकेडमी का भी मैंने उल्लेख किया है जो भारत में अपनी ऑनलाइन संगीत कक्षाऐं वर्तमान समय में चला रहे हैं जैसेः– दिव्य संगीत एकेडमी शंकर महादेवन एकेडमी, गाल्क एकेडमी ऑफ म्यूज़िक आदि और ऐसी अन्य कई संस्थाऐं वर्तमान समय में कार्यरत हैं।

गाना डॉट–कॉम, सावन डॉट–कॉम, धिनगाना डॉट–कॉम, इंडियन रागा जैसे कई एप्लीकेशन इंटरनेट पर मौजूद हैं जो संगीत को श्रोताओं तक पहुंचाती है। मैंने ऐसे कई चित्रों को इस अध्याय में प्रदर्शित किया है जो यह बताते है कि शिक्षार्थी अपनी रूचि के साथ मन को केन्द्रित कर

संगीत सीख रहे हैं। अपने शोध कार्य को पूर्ण रूप प्रदान करने के लिए और साथ ही अपने विषय की सार्थकता सिद्ध करने के उद्देश्य के विचार सम्मिलित किये हैं। जिनसे मैंने टेलीफोन, साक्षात्कार, ई–मेल एवं वॉइस चैटिंग द्वारा सम्पर्क स्थापित किया है। इन कलाकारों द्वारा प्रस्तुत विचारों ने मेरे इस अध्याय को और सुदृढ़ता प्रदान की है।

इस अध्याय में वो सारी वार्ताऐं अथवा उत्तर मैंने सम्मिलित किये हैं जो मैंने ई–मेल के माध्यम से कलाकारों से पूछे थे। इन सभी के आधारभूत जवाबों द्वारा मेरे शोध विषय की प्रगाढ़ता एवं सुदृढ़ता बढ़ी है।

पं. आनन्द भीमसेन जोशी जी, पं. विश्वमोहन भट्ट, पं. हरिप्रसाद चौरसिया, पं. रजनीश जी मिश्र (पं. राजन मिश्र जी के सुपुत्र), श्रीमती संगीता उपाध्याय, पं. छन्नूलाल जी मिश्र, श्री राजेन्द्र कण्डलगांउकर, मनीष राज्यगुरू और ऐसे कई कलाकारों द्वारा मेरे द्वारा पूछे गए प्रश्नों के भंली–भांति उत्तर दिए गए हैं। मैंने इनके द्वारा मुझे भेजे गए ई–मेल को इस अध्याय में सम्मिलित किया है।

मैंने इस अध्याय में परिकल्पना की सत्यता के परीक्षण हेतु तथा वैज्ञानिक निष्कर्ष पर पहुँचने हेतु परिकल्पना पर आधारित प्रश्नों के जवाबों पर सांख्यिकी विश्लेषणात्मक तकनीक का प्रतिशत विधि के साथ प्रयोग किया जिसमें दूरस्थ शिक्षा प्रणाली की अत्यधिक प्रतिशत के साथ महत्ता सिद्ध हो सके।

अतः वर्तमान समय में भारतीय संगीत में दूरस्थ शिक्षा का महत्व एवं औचित्य हैं इसे हमें अपनाना होगा ताकि हमारा महान् संगीत सशक्त समृद्ध एवं नवीन तकनीकी वाला हो पाए। जिसे घर–घर में अपनाया जा सके, ग्रहण किया जा सके।

मैं अपने आपको सौभाग्यशाली महसूस करती हूँ कि ईश्वर की कृपा एवं आशीर्वाद सदैव मुझ पर बना रहे और साथ ही मैं मेरी शोध निर्देशिका डॉ. (श्रीमती) निशि माथुर जी की अत्यन्त आभारी हूँ जिनके श्रेष्ठ मार्गदर्शन में मैंने 'भारतीय संगीत में दूरस्थ शिक्षा प्रणाली का महत्व एवं औचित्य' विषय पर अपना शोधकार्य सम्पूर्ण किया और उसे उत्कृष्ट रूप प्रदान करने में, मैं सफल हुई। इस विषय पर शोध कार्य करने के पश्चात् मैं ईश्वर से यही प्रार्थना करती हूँ कि भविष्य में यह सुविधा सर्वसाधारण के लिए सुलभ हो। जिससे जन–जन तक, घर–घर तक भारतीय संगीत की स्वर–लहरियाँ गूंजें। गुरू–शिष्यों की दूरी पर विजय प्राप्त हो। यह तकनीकी ज्ञान सभी के लिए आसानी से सुलभ हो। स्काइप, गूगल, याहू आदि कम्पनियाँ जो इंटरनेट पर उपलब्ध हैं, का उपयोग सभी लोग भली–भांति कर सकें।

अतः दूरस्थ शिक्षा की यह प्रणाली (वीडियो कॉनफ्रेंसिंग) बहुत ही नवीन, उपयोगी और सफल विधि है। इस विधि द्वारा संगीत की शिक्षा पूर्णरूप से दी जा सकती है। अब कोई भी परिस्थिति चाहे वो गुरू–शिष्य की दूरी हो अथवा नियमों की बाध्यता संगीत शिक्षा में रूकावट नहीं डाल पाएगी। □□□□ □

परिशिष्ट–1

दूरस्थ शिक्षा प्रणाली से सम्बंधित छाया चित्र

Imgae received from www.hindustanilessoinsonline.com

Imgae received from www.youtube.com

Imgae received from www.cliffsmithguitarlessons.com

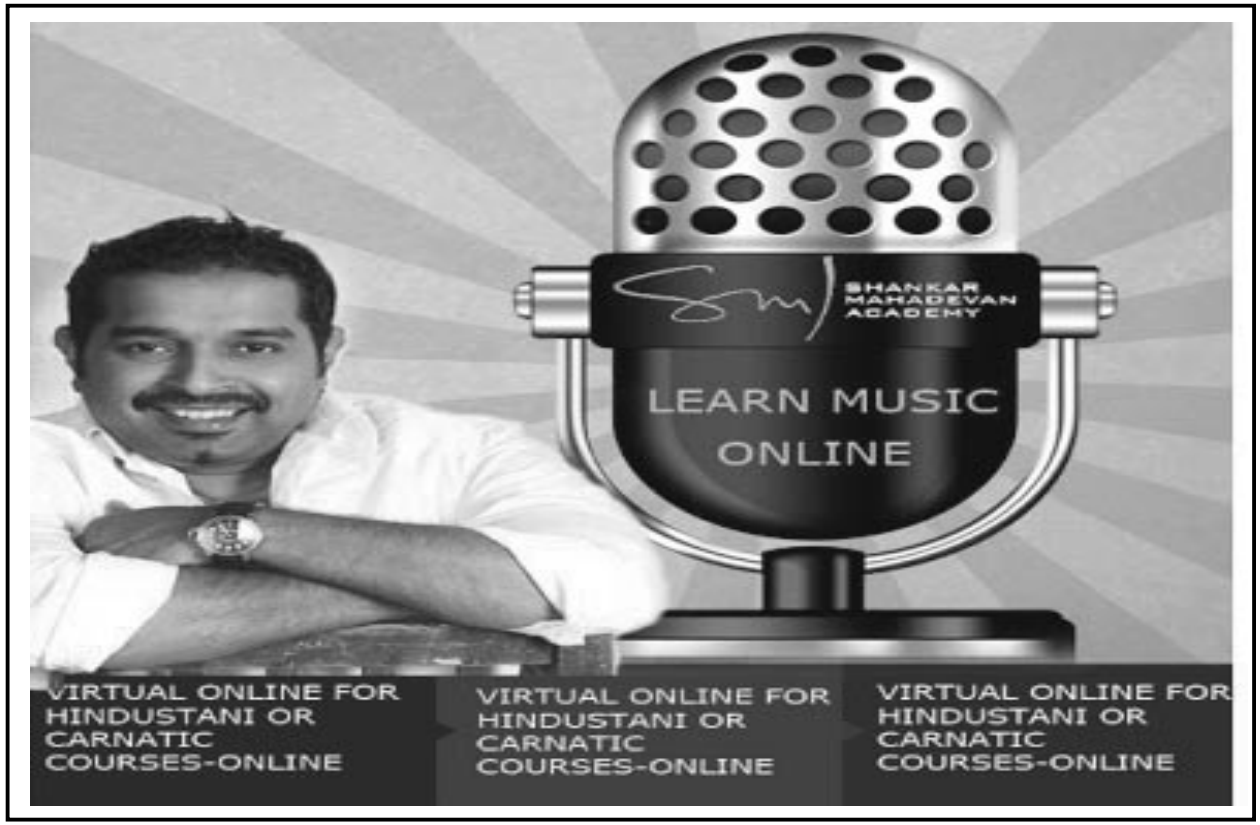

Imgae received from www.careerindia.com

Imgae received from www.naturellyeducational.com

Imgae received from www.musicclassonline.in

Imgae received from www.article.wn.com

Imgae received from www.latimes.com

Imgae received from www.article.wn.com

Imgae received from www.blogspot.com

Imgae received from www.musiclesson.jpg

Imgae received from www.supertintin.com

Imgae received from www.cosn.org

परिशिष्ट–2

संदर्भ ग्रन्थ एवं समाचार पत्र–पत्रिकाऐं

संदर्भ ग्रन्थ

हिन्दी

डॉ. अलकनन्दा पलनीटकर	शास्त्रीय संगीत शिक्षा समस्याऐं एवं समाधान	आदित्य पब्लिशर्स दीन (म.प्र.)
श्री इनायत खाँ	दूरस्थ शिक्षा	अमर प्रकाशन नई–दिल्ली
डॉ. धर्मावति श्रीवास्तव	प्राचीन भारत में संगीत	भारतीय विद्या प्रकाशन पोस्ट बॉक्स नं. 108,कचौड़ी, वाराणसी
डॉ. निशि माथुर	भारतीय संगीत कलाकार (वंशानुक्रम एवं पर्यावरण)	पब्लिकेशन्स की, 57,मिश्र राजाजी का रास्ता, जयपुर
श्री बसंत	संगीत विशारद	संगीत कार्यालय, हाथरस, (उ.प्र.)
श्री भगवतशरण शर्मा	भारतीय संगीत का इतिहास	संगीत कार्यालय, हाथरस, (उ.प्र.)
श्री आचार्य भरत	नाट्यशास्त्र	गायकवाड पब्लिकेशन्स, निर्मल सागर

डॉ. मृत्युंजय शर्मा	संगीत मैनुअल	एच.जी. पब्लिकेशन्स, नई–दिल्ली(उ.प्र.)
डॉ. प्रो. रीता अरोड़ा	शैक्षिक तकनीकी	प्रीमियर प्रिन्टिंग प्रेस,12, रामनगर, सोडाला, जयपुर
श्री लक्ष्मी नारायण गर्ग	संगीत निबंधावली	संगीत कार्यालय, हाथरस (उ.प्र.)
डॉ. लक्ष्मी नारायण गर्ग	निबंध संगीत	संगीत कार्यालय, हाथरस (उ.प्र.)
श्री वामन ह.देश पाण्डे	घरानेदार गायकी	पॉपुलर प्रकाशन, मुम्बई, 1973
श्री वैंकटया एन.	एजुकेशनल टेक्नोलॉजी	ए.पी.एच. पब्लिकेशन्स, नई–दिल्ली,1996
श्री वैंकटया एन.	एजुकेशनल टेक्नोलॉजी	ए.पी.एच. पब्लिकेशन्स, नई–दिल्ली,1996
श्री शरतचंद्र श्रीधर परांजपे	संगीत बोध	मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादम, भोपाल

डॉ. सुशील कुमार चौबे	साहित्य में घरानों की चर्चा	उत्तर प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी,लखनऊ, 1977
डॉ. सुशील कुमार चौबे	हमारा आधुनिक संगीत	उत्तर प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी,लखनऊ, 1977
डॉ. स्वतंत्र शर्मा	भारतीय संगीत एक वैज्ञानिक विश्लेषण	टी.एन.भार्गव एण्ड सन्स,1131, कटरा, इलाहाबाद
श्रीमती सुधा श्रीवास्तव	भारतीय संगीत के मूलाधार	कृष्णा ब्रदर्स, महात्मागांधी मार्ग, अजमेर
श्री हरीश्चन्द्र श्रीवास्तव	संगीत निबंध संग्रह प्रथम संस्करण	संगीत सदन प्रकाशन 1988, साउथ मलाका, इलाहाबाद

संस्कृत ग्रन्थ

सामवेद	–	गीताप्रेस, गोरखपुर
श्रीमद्भागवत गीता	–	गीताप्रेस, गोरखपुर
श्रीरामचरितमानस	–	गीताप्रेस, गोरखपुर

संगीत पत्रिकाऐं

संगीत	–	संगीत कार्यालय, हाथरस
संगीत कला विहार	–	अखिल भारतीय गान्धर्व महाविद्यालय मण्डल प्रकाशन, मिरज
छाया नट	–	उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी पोस्ट बॉक्स नं.30, गोमतीनगर, लखनऊ
कला समय	–	जे–1, मंगल भवन, ई–6, महावीर नगर, अरेरा कॉलोनी,भोपाल

ENCYCLOPEDIA

- The Indian Classical Music - Wikipedia, the free encyclopedia.
- The Distance education-wikipedia.
- The Encyclopedia of educational technology.
- The Indian classical music/selected biogra phies- wikipedia.
- The Indian classical musicians-wikipedia.
- The Music of India-wikipedia.

ENGLISH BOOKS

Mr. Cooke, Deryck	The language of music	Oxford university press, Newyork
Mr. K.L. Mukhopadhyay	Historical development of Indian Music A critical study	IInd Edition Calcutta 1973

Mrs.Lalita Ramkrishna	Musical Heritage of India	Shubhi Publication, New-Delhi, 2003
Mr. Pande, Santosh	Planning & management in Distance education	Viva books, New-Delhi
Mr. Ramavtar Vir	The music of India	Pankaj publications, Delhi,1986

WEBSITES

1. www. chandrakantha.com
2. www. online riyaz.com
3. www. surgyan.com
4. www. musicetheory.net
5. www. allmusic.com
6. www. click4classical.com
7. www. omenad.net
8. www. educationsulekha.com
9. www. ignou.ac.in
10. www. musiced.about.com
11. www. youtube.com
12. www. eambalam.com
13. www. study.com
14. www. onlinemusiclessons.net
15. www. hindustanilessonsonline.com
16. www. musicclassonline.in
17. www. artistsworks.com
18. www. planoaround the world.com

19. www. artistshousemusic.org
20. www. citehr.com
21. www. indiastudychannel.com
22. www. slideshare.net
23. www. articlebase.com
24. www. edtechreview.com
25. www. onlinedegreeprogram.com

ARTICLES

1- An article given by Mr. A.W.Khan on 'Online distance education:Main speech on internet in 1999 & in education 16-17 Dec.1999 in Chennai.'

2- Information by See Dobrian, Chris on 'Music & Artificial Intelligence' 1992 on Internet.

3- An article by Garrison, D.R. (1985) on 'Three generation of Technological Innovations Distation educations 6, (2) 235-24' on Internet.

4- IGNOU (2008) Growth & Philosophies of Distance educations on internet.

5- An article of (**संगीत को मिला इंटरनेट का सहारा**) in Rajasthan Patrika in New trends published on 4th Nov. 2012.

साक्षात्कार

1. पं. हरिप्रसाद चौरसिया
2. पं. छन्नू लाल मिश्र
3. श्रीमती संगीता बन्धोपाध्याय
4. डॉ. श्री विकास भारद्वाज
5. सुश्री गरिमा भार्गव
6. श्रीमति सुरभि आर्य

शब्दकोष

डॉ. धीरेन्द्र वर्मा	हिन्दी साहित्य कोष	ज्ञान मण्डल लि., संत कबीर रोड, वाराणासी उ.प्र.
श्री विमलकांत राय चौधरी	भारतीय संगीत कोष	अनुवादक मदन लाल व्यास भारती ज्ञान पीठ, बी–1,45–47 कनाट पैलेस, नई दिल्ली